महामति प्राणनाथ
एक युगान्तरकारी व्यक्तित्व

(जागनी ग्रंथ शृंखला के अन्तर्गत)

डॉ. विद्यावती मालविका
एवं
डॉ. शरद सिंह

विक्रम संवत 2059
ईस्वी सन् 2002
बुधजी का साका 325

प्रथम संस्करण: 1000

न्योछावर: रु. 50/-

प्राप्ति स्थान:

श्री प्राणनाथ मिशन
72 सिद्धार्थ एन्क्लेव,
आश्रम चौक, नई दिल्ली-14
दूरभाष: 6345230

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर
हकीकत नगर, माल रोड,
दिल्ली-110009
दूरभाष: 7658111

डॉ० विद्यावती मालविका
एम-111, शांति विहार,
रजाखेड़ी, सागर, म०प्र०
दूरभाष: 07582-30088

मुख्य वितरक:
हिन्दी बुक सेन्टर
आसफ अली रोड, दिल्ली
दूरभाष: 3286757

मुद्रक:
वैलकम प्रैस
ए-3/1, नारायणा फेस-1,
नई दिल्ली-110028
दूरभाष: 5790926, 5891274

Mahamati Prannath Ek Yugantkari Vyaktitva
By Dr. Vidyawati Malvika & Dr. Sharad Singh

जिनकी यह गरिमामयी गाथा है
अपूर्व धर्मसमन्वय के
महान प्रेरक चिन्मय-ज्योतिस्वरूप
महामति प्राणनाथ
के चरणों में
समर्पित

भूमिका

नवजागरण की शाश्वत ज्योति एवं धर्म समन्वय के अपूर्व उद्‌गाता महामति प्राणनाथ के अनुपम व्यक्तित्व, मनीषा एवं वाग्मिता का वर्णन कर सकना विषय की गंभीरता को देखते हुए वर्णनातीत प्रतीत होता है.... किन्तु प्रयास-पुष्प तो अर्पित किया ही जा सकता है।

इस ग्रंथ का उद्देश्य उनके युगान्तरकारी व्यक्तित्व और कृतित्त्व तथा कालजयी संदेशों को उजागर करके अधिकाधिक पाठकों तक पहुँचाना है। धार्मिक आतंक के युग में विश्व की धार्मिक अवधारणाओं को एकीकृत करने का प्रयास, कुरान और पुराण के समान्तर पक्षों की अकाट्य प्रमाणों के द्वारा समन्वित रूप में प्रस्तुति एक युग सापेक्ष कार्य है। यह महती कार्य युग-व्यक्तित्व महामति प्राणनाथ ने किया। उनकी मंगलमयी वाणी सामाजिक, धार्मिक एवं दार्शनिक उहापोह से उबारनेवाली, जीवन के गूढ़ रहस्यों का सहज, सुबोध विश्लेषण करनेवाली एवं मन को शांति प्रदान करनेवाली है। जैसा कि उनका कथन भी है -'सुख शीतल करूँ संसार'।

सत्रहवीं शताब्दी का युग वह युग था जब देश का अधिकांश भाग औरंगज़ेब के धार्मिक कट्टरतापूर्ण शासन के दमन चक्र के नीचे पिस रहा था। ऐसे समय में महामति प्राणनाथ ने धार्मिक एकीकरण के लिए सर्वधर्मसम्भाव की अलख जगाई। उन्होंने कुरान का ही नहीं प्रत्युत् यहूदी, ईसाई आदि समस्त कतेब ग्रंथों के सार तत्त्व को तुलनात्मक रूप से सामने रखते हुए उनमें उपस्थित समानता को सिद्ध किया। यह कार्य सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार से जनजागरण करने वाला था।

मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य पर शोध करते समय मुझे महसूस हुआ कि हिन्दी साहित्य में ऐसे संत का जितना विवरण मिलना चाहिए, उतना नहीं मिलता है। उस समय 'श्री कुलजमस्वरूप' का हिन्दी रूपान्तर नहीं हुआ था। मुझे उस पावन ग्रंथ की दो प्रतियों के पाये जाने का ही पता चला

था। जिनमें से एक पन्ना (म.प्र.) के मंदिर में थी और दूसरी लखनऊ संग्रहालय में। यद्यपि डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, डॉ. श्यामसुंदर दास, डॉ. परशुराम चतुर्वेदी एवं मिश्रबंधु आदि ने इस विषय पर महत्त्वपूर्ण लेखन कार्य किया किन्तु मुझे यही महसूस होता रहा कि महामति प्राणनाथ के व्यक्तित्व और कृतित्त्व पर अभी और अधिक लिखे जाने की आवश्यकता है। महामति प्राणनाथ की वाणी के प्रचार-प्रसार एवं उद्‌घाटन की दिशा में श्री प्राणनाथ मिशन वर्षों से संलग्न है। श्रीमती विमला मेहता एवं डॉ. रणजीत साहा जिस समर्पित भाव से महामति की वाणी का जन-जन में पहुँचाने के लिए तत्पर रहते हैं, वह श्लाघनीय है। श्रीमती विमला मेहता ने ही मुझे प्रेरित किया कि मैं महामति के व्यक्तित्व एवं उनके अवदान को प्रस्तुत कर सकनेवाला एक ग्रंथ लिखूं। मुझे उनका आग्रह समीचीन प्रतीत हुआ। मेरी छोटी पुत्री डॉ. (सुश्री) शरद सिंह ने इस ग्रंथ के लेखन में मुझे न केवल सहयोग दिया अपितु औरंगज़ेब के युग की धार्मिक स्थितियों के पक्ष को स्वयं लिख कर इस ग्रंथ में समाहित किया है।

इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में महामति के अवतरण से लेकर गुरु-दीक्षा, गुरु आज्ञा से अरब देशों की यात्रा, गुरुपुत्र को पदासीन करना, गुरुपुत्र से वैचारिक मतभेद होना, मेहराज से महामति प्राणनाथ का स्वरूप ग्रहण करना, जागनी यात्राएँ, मेड़ता प्रवास, छत्रसाल से भेंट तथा परमधाम प्रयाण की घटनाओं को संक्षिप्त रूप में समाहित किया गया है। जबकि द्वितीय अध्याय में, महामति के बहुआयामी व्यक्तित्व को रेखांकित किया गया है। तृतीय अध्याय में मध्ययुगीन राजनीतिक एवं धार्मिक संकटों को प्रस्तुत किया गया है जिससे उस युग की दुरूहता को समझने में सुगमता हो सके जिसमें महामति ने सर्वधर्मसमभाव और राजनीतिक उदारता का पुनीत संदेश दिया।

चतुर्थ अध्याय में महामति की वाणी में मानववादी तत्त्वों को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया गया है। महामति ने वर्ग, धर्म, जाति आदि के विवादों से ऊपर उठकर मानवता को देखे जाने का आह्वान किया और इसके लिए उन्होंने श्रीमद्‌भागवत, पुराण, कुरान, बाईबिल, तौरेत, ज़बूर आदि के मूल में निहित एकता को उजागर करते हुए मानववाद का संदेश दिया।

पाँचवे अध्याय में परब्रह्म और उनके तीनों स्वरूपों की विस्तृत चर्चा है। इसी अध्याय में क्षर, अक्षर, अक्षरातीत, क्षर जगत्, अक्षरब्रह्म धाम, अक्षरब्रह्म, अक्षरातीत ब्रह्म-परमधाम, त्रिधालीला, ब्रज लीला, रास लीला, जागनी लीला आदि का विवरण प्रस्तुत किया गया है। छठवें अध्याय में महामति की वाणी में उपस्थित धार्मिक समन्वय के तत्त्वों का विवेचन हुआ है। महामति द्वारा बताए गए धर्मग्रंथों में वर्णित कथानकों, देवी-देवताओं, भविष्यवाणियों में समानता का उल्लेख किया गया है तथा कुरान के गूढ़ार्थों की व्याख्या की गई है। इसी अध्याय में महामति द्वारा व्याख्यायित परम सत्ता का साक्षात्कार अर्थात मेराज एवं हिन्दू और इस्लाम धर्म के शुद्ध रूपों को प्रस्तुत किया गया है।

सातवें अध्याय में महामति के चिन्तन के दार्शनिक पक्ष को आधार बना कर उनके विचारों में निहित्त दार्शनिक समन्वय को रेखांकित किया गया है। इसमें क्षर, अक्षर, पुरुषोत्तम तत्त्व, अद्वैतवाद, सृष्टि संबंधी दृष्टिकोण एवं मोक्ष को दार्शनिक आधार पर विवेचित किया गया है। आठवें अध्याय में महामति की समाजवादी विचारधारा तथा समाजवाद के परिप्रेक्ष्य में 'सुंदर साथ' के स्वरूप का दिग्दर्शन है। नवें अध्याय में महामति द्वारा बताये गए भक्ति साधना के विविध आयामों को रेखांकित किया गया है।

दसवें अध्याय में महामति की शाश्वत वाणी को संग्रहीत करनेवाले ग्रंथों का संक्षिप्त किन्तु समुचित विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा ग्यारहवें अध्याय में तत्कालीन एवं समसामयिक संदर्भों में महामति प्राणनाथ के विचारों की प्रासंगिकता को रेखांकित किया गया है।

मैंने यही प्रयास किया है कि आज के इस व्यस्ततम समय में इस पुस्तक की संक्षिप्त सामग्री के माध्यम से अधिकाधिक जानकारी प्रस्तुत कर के सुधी पाठकों को महामति की वाणी से परिचित करा सकूं। मेरा यह प्रयास कहाँ तक सफल रहा यह तो सुधी पाठकगण ही बतायेंगे।

डॉ. विद्यावती 'मालविका'

अनुक्रम

नाम सारों जुदे धरे,
लई सबों जुदी रसम।
सब में उमत और दुनिया,
सोई खुदा सोई ब्रह्म॥

अवतरण एवं साधना

पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊँ बाँधे जुथ।
ये जिमि झूठी दुख की, सो कर देऊँ सत सुख॥

आत्मजागरण मंत्र के प्रदाता, सर्वधर्म समन्वय के उद्‌गाता महामति प्राणनाथ एक महान युगप्रवर्तक थे। उनका जन्म जामनगर (गुजरात) के लोहाणा क्षत्रिय परिवार में सितम्बर सन् 1618 ई. तद्‌नुसार विक्रम संवत् 1675 में हुआ था। उनके पिता केशव ठाकुर जामनगर के दीवान थे। उच्च पद पर रहते हुए भी उनका जीवन सादगीपूर्ण था। केशव ठाकुर की पत्नी धनबाई भी धार्मिक प्रवृति की महिला थीं। ठाकुर दंपत्ति के रहन-सहन एवं विचारों का प्रभाव उनके पांचों पुत्रों पर पड़ा। उनके मंझले पुत्र का नाम मेहराज ठाकुर था। यही तेजस्वी पुत्र आगे चलकर **'प्राणनाथ'** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

उन दिनों गुजरात के भोजनगर में राधा-वल्लभ सम्प्रदाय के स्वामी हरिदास जी राधा-माधव के अनन्य भक्त थे। स्वामी हरिदास जी के एक भक्त साधक देवचन्द्र जी जामनगर में निवास करने लगे थे। वहीं वे भागवत कथा के श्रवण-मनन में लीन रहते थे। जामनगर में ही उन्हें निजनाम मंत्र द्वारा आत्मबोध हुआ और वे निजानन्द स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्हीं के द्वारा स्थापित सम्प्रदाय 'निजानन्द सम्प्रदाय' कहलाया। इस सम्प्रदाय के लोग आपस में 'प्रणाम' कहकर आत्मीयता व्यक्त करते थे। इस लिए कालान्तर में यह सम्प्रदाय 'प्रणामी सम्प्रदाय' कहा जाने लगा।

गुरु दीक्षा

मेहराज ठाकुर के अग्रज गोवर्धन ठाकुर की निजानन्द स्वामी पर अगाध श्रद्धा थी। उन्होंने स्वामी जी से 'तारतम मंत्र' ग्रहण कर दीक्षा ली। प्रतिदिन गोवर्धन ठाकुर स्वामीजी के सत्संग में नियमपूर्वक जाया करते थे। एक दिन मेहराज भी अपने अग्रज के साथ सत्संग में गए और स्वामी जी को प्रणाम कर एकटक निहारने लगे। उस बारह वर्षीय बालक मेहराज को देखकर स्वामीजी को विश्वास हो गया कि इस तेजस्वी बालक में ब्रह्मात्मा रूप सखी इन्द्रावती का तेज समाहित है। उन्होंने सहज गंभीरता के साथ उद्‌घाटित किया कि यह बालक मेहराज 'मिहिरराज' है। इस सूर्य के आध्यात्मिक आलोक से विश्व में व्याप्त अज्ञानता का तिमिर समाप्त हो जाएगा। मेहराज के नम्र स्वभाव, जिज्ञासा, ज्ञानपिपासा, विलक्षण ज्ञान ग्रहण क्षमता ने गुरु देवचन्द्रजी को मुग्ध कर लिया। शिष्य मेहराज भी गुरु की मनीषा, गरिमा, सहज तपश्चर्या आदि से अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने अपनी मातृभाषा सिंधी में अपनी श्रद्धा का इस प्रकार व्यक्त किया-

जानहून कोड़ धड़, धड़ घड़ कोड़ मत्थन।

-अर्थात् (हे सदगुरु!) यदि मेरे करोड़ों धड़ हों, हर एक धड़ में करोड़ों शीष हों। हर शीष में करोंड़ों मुख हों तो भी मैं आपके गुणों का वर्णन नहीं कर सकता।

गुरु-चरणों में मेहराज ने नीति, धर्म, साहित्य का अध्ययन किया। छोटी उम्र में ही उनका विवाह फूलबाई नामक रूपवती कन्या से हो गया था।

अरब देशों की यात्रा

सन् 1643 ई. में मेहराज के अग्रज गोवर्धन ठाकुर का निधन हो गया। भाई की मृत्यु पर मेहराज बहुत दुखी हुए। उन्होंने अपने-आपको चिन्तन-मनन, अध्ययन एवं देवाराधन के प्रति समर्पित कर दिया। निजानन्द स्वामी को उनकी दशा पर चिन्ता हुई और उन्होंने विचार किया कि विश्वप्रेम एवं शांति के भावी अवदानदाता मेहराज को इस आत्म-केन्द्रित भाव-भूमि से बाहर लाना आवश्यक है। अतः उन्होंने मेहराज को आदेश दिया कि वे अपने गुरुभाई के भाई खेता भाई को अरब देश से वापस लाने

के लिए प्रस्थान करें। गुरु की आज्ञा पाकर मेहराज अरब देशों की यात्रा पर निकल पड़े। लगभग चार वर्ष की अवधि तक उन्होंने अरब देशों की संस्कृति, धर्म और साहित्य का गहन अध्ययन किया।

स्वदेश आने पर मेहराज को अपने पिता का चिर वियोग सहना पड़ा। जामनगर के राजा ने मेहराज की प्रतिभा को देखते हुए उन्हें उनके पिता के बदले दीवान पद सौंप दिया। मेहराज ने पूर्ण ईमानदारी एवं कुशलता के साथ शासन प्रबन्ध का संचालन किया किन्तु उनका उत्तम शासन प्रबन्ध स्वार्थी तत्त्वों को रास न आया। वे उन्हें अनेक प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा पहुँचाने लगे। विरोधियों द्वारा जामनगर के वज़ीर को इनके विरुद्ध राज्य की सम्पत्ति हड़पने का आरोप लगाकर भड़काया गया जिससे इन्हें '**हब्सा**' कारागार में नज़रबंद कर दिया गया।'[1] इस मिथ्या अरोप से व्यथित मेहराज ने अपने हृदय की पीड़ा को परब्रह्म के वियोग की पीड़ा में ढाल दिया। उनके द्वारा रचित ग्रंथ '**श्री रास**' आध्यात्मिक विरह की अनुपम कृति बन गयी।

'**श्री रास**', महामति के वेदना पूर्ण संसार और संस्कार को आनंद प्रदान और अमृत्व प्रदान कराने वाली सम्मान्य कृति ही नहीं, परम प्रियतम के विमल प्रेमानुग्रह का निर्मल नैवेद्य भी है।'[2]

मेहराज ने धैर्यपूर्वक प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन किया। अंततः सत्य उजागर हुआ और उनके समस्त विरोधी उनसे परास्त हो गये। जामसत्ता ने भूल स्वीकार की और 'सिरोपा' से सम्मानित कर विदा किया।

गुरुपुत्र को पदासीन करना

सन् 1655 ई. में गुरु देवचन्द्र अस्वस्थ हो गए। अपने परमधाम गमन का समय निकट जान कर उन्होंने मेहराज को अपने पास बुलवाया। अपने इस शिष्य की योग्यता पर उन्हें पूर्ण विश्वास था। अतः उसे अपना धार्मिक उत्तराधिकार सौंप दिया और फिर निश्चिन्त होकर इस लोक को त्याग दिया। निःस्पृह मेहराज ने सन् 1655 ई. तद्नुसार विक्रम संवत् 1712 के आश्विन माह में देश-विदेश के निजानन्द अनुयायियों को आमंत्रित कर

---

1. महामति प्राणनाथ मनीषा, वीणा भगत, पृ. 6

2. जागनी-श्री कुलजमस्वरूप विशेषांक, (सं.) डॉ. रणजीत साहा, पृ. 1

सोल्लास गुरुपुत्र बिहारी जी को गुरु गद्दी पर आसीन करा दिया। और स्वयं गुरु के सिद्धांतों के प्रचारार्थ धर्मयात्रा पर निकल पड़े। इस यात्रा का प्रथम चरण खाड़ी देशों की दूसरी बार की यात्रा थी। वे साथियों सहित दीवबंदर (वर्तमान ड्यू) पहुँचे। वहाँ अपने पूर्वपरिचित गुरुभाई जयराम कंसारा के यहाँ ठहरे। वहीं उन्होंने जन-जन को धर्म के संकीर्ण मतवाद के अंधे कुएँ से निकालने के लिए हृदयग्राही उपदेश दिए। अनेक श्रद्धालुओं ने ज्ञानामृतपान करते हुए उनसे दीक्षा ग्रहण ली।

इस बीच मेहराज की द्वितीय पत्नी तेजकुँवरि सहित अनेक शिष्यों को अरब दस्युओं ने अपहृत कर लिया। दीव बंदर से वे कच्छ के मांडवी नगर गए। मांडवी से थट्ठा नगर (सिंध पाकिस्तान) जाते हुए कपई (गुजरात) में पड़ाव डाला। वहाँ मेहराज के अग्रज हरवंश ठाकुर सपरिवार निवास कर रहे थे। कई अन्य परिवारों के साथ उन्होंने भी मेहराज से दीक्षा ली। थट्ठा नगर में योगाभ्यासी कबीरपंथी महंत चिन्तामणि ने मेहराज से शास्त्रार्थ किया और पराजित होने पर निजानन्द सम्प्रदाय में दीक्षा ले ली।

अरब देशों की द्वितीय यात्रा

मेहराज थट्ठा नगर से लाठी बंदर होते हुए मस्कत (अरब) पहुँचे। वहाँ मानजी भाई ने उनका स्वागत किया और परिवार सहित मेहराज से शिष्यत्व ग्रहण किया। वहीं निर्धारित धनराशि देकर दस्युओं से तेजकुँवरि एवं अन्य अपहृत शिष्यों को मुक्त कराया।

खाड़ी देशों में अब्बासी बंदर एक ऐसा स्थान था जहां इस्लाम के अतिरिक्त अन्य किसी धर्म का प्रचार नहीं किया जा सकता था किन्तु मेहराज ने सहिष्णुता, धैर्य और निर्भीकता के साथ वहाँ प्रवचन दिया। धर्म के नाम पर बाध्यता, जटिलता और भ्रम की सृष्टि न करके, सबको समान रूप से धर्म का आनन्द प्रदान करना ही उनका लक्ष्य था। अब्बासी में उनका प्रचार कार्य करना एक अनहोनी घटना के रूप में स्वीकार किया गया। वहीं भैरव सेठ जैसे कई कट्टर व्यक्ति मांसाहार एवं नशा त्यागकर मेहराज की शरण में आए। सन् 1671 ई. तक वे अरब और फारस में मानवसमता एवं शाश्वत सत्य का अलख जगाते रहे।

गुरुपुत्र से वैचारिक मतभेद

खाड़ी देशों की यात्रा करके वे स्वदेश वापस आए और नलिया (कच्छ) पहुँचे। वहाँ बिहारी जी द्वारा निष्कासित निम्न जाति के धारा भाई, रामजी भाई आदि दुखियों को क्षमा कर सम्प्रदाय में सम्मिलित करने के लिए बिहारी जी से अनुरोध किया। संकीर्ण विचारधारा एवं हठधर्मिता से ग्रस्त बिहारी जी ने मेहराज के अनुरोध को ठुकरा दिया। ऐसे ही एक व्यक्ति को क्षमा दान दिलाने में असफल, अपमानित मेहराज की पत्नी फूलबाई का मानसिक यंत्रणा झेलते हुए निधन तक हो गया।

बिहारी जी ने मेहराज को तीन नियम के संदर्भ में पत्र भेजा। ये नियम थे—

प्रथम- उनके और मेहराज के अतिरिक्त अन्य किसी को भी गुरुदीक्षा देने का अधिकार नहीं होगा।

द्वितीय- निम्न और पिछड़ी जाति के लोगों को अनुयायी नहीं बनाया जाएगा।

तृतीय- विधवा महिलाओं को धर्म दीक्षा नहीं दी जाएगी।

संवेदनशील और मानव समता के प्रबल पक्षधर मेहराज ने कई तर्क प्रस्तुत किए। उन्होंने खोजीबाई जैसी विधवा स्त्री को दीक्षा दिए जाने का स्मरण कराया। किन्तु बिहारी जी नियमों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने को तैयार नहीं हुए। उन्होंने यह लिखते हुए मेहराज से संबंध विच्छेद कर लिया-

तिस वास्ते हम तुमको, किए साथ से दूर।
हमारे तुमारे नाता न रहया, जिन पाती करो मजकूर॥

लाल दास बीतक 31/69

बिहारी जी के आदेश पर ही उन्हें तेजकुँवरि से विवाह करना पड़ा था। यद्यपि तेजकुँवरि ने सदैव पति का साथ दिया और 'बाई जू राज' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

मेहराज से महामति प्राणनाथ

मेहराज जाति अथवा वर्ग भेद को बिलकुल नहीं मानते थे। धारा

भाई, रामजी भाई जैसे दुखियों के उन्होंने अपने अनुयायी जत्थे 'सुन्दर साथ' में प्रेमपूर्वक स्थान दिया। मेहराज का कथन था-

पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊं बांधे जुथ।
ये जिमि झूठी दुख की, सो कर देऊं सत सुख॥
कलश हि. 23/24

इसी प्रकार उनका कहना था कि सभी मानव एक जाति के हैं, उनमें भेद-भाव नहीं किया जाना चाहिए। उनके विचार एकेश्वरवादी थे।

जात एक खसम की और न कोई जात।
एक खसम एक दुनिया, और उड़ गई दूजी बात॥
सनंध 36/12

जनमानस मेहराज के विचारों से बेहद प्रभावित हुआ। सूरत नगर में सुन्दर साथ ने उन्हें अपना धर्मगुरु स्वीकार करते हुए '**प्राणनाथ**' का सम्बोधन दिया। कतेब ग्रंथों-कुरान, इंजील, तौरेत के साथ ही वेद-पुराण के ज्ञाता एवं परब्रह्म की शक्तियों से युक्त हुए एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी को '**महामति**' की उपाधि से विभूषित किया गया। उसी समय से वे '**महामति प्राणनाथ**' कहलाए।

जागनी यात्रा

उस समय देश में औरगज़ेब का शासन था। उसके मज़हबी जुनून और कट्टरता के कारण दिन-प्रति-दिन जुल्म बढ़ रहे थे। हिन्दू जनता आतंक के साए में त्राहि-त्राहि करती हुई मृतप्राय हो रही थी। जातिवाद, अंधविश्वास और आडम्बर सामाजिक जीवन को अभिशप्त कर रहे थे। 'महामति प्राणनाथ ने राष्ट्रीय अस्मिता एवं संस्कृति रक्षार्थ नवजागरण अर्थात 'जागनी' का संदेश देना आवश्यक समझा। मृतप्राय जनमानस का कायरता से उबारना उनका लक्ष्य बन गया। 'महामति जानते थे कि जागनी का लक्ष्य कोई सोई हुई क़ौम प्राप्त नहीं कर सकती। यह कायरों का नहीं, सिंह-सायरों और सक्षम समुदाय और समर्पित साधकों के संकल्प से दीप्त है, साथ ही यह किन्हीं भी भौगोलिक बाधाओं एवं साम्प्रदायिक सीमाओं से मुक्त है।'*

**जागनी-2001, सं. डॉ. रणजीत साहा, पृ.3*

मेड़ता प्रवास

जागनी संदेश यात्रा का प्रारम्भ महामति ने अहमदाबाद की धरती से किया। सिद्धपुर, पालनपुर आदि से होते हुए वे मेड़ता (राजस्थान) पहुँचे। वहाँ उनकी अमृतवाणी सुन कर सेठ राजाराम, सेठ झांझण जैसे धनी-मानी व्यक्तियों ने सपरिवार प्रणामी धर्म स्वीकार किया। उनके अतिरिक्त सैकड़ों सामान्य परिवार भी दीक्षित हुए। उन्हें मेड़ता प्रवास में एक क्रांतिकारी विचारानुभूति हुई। मस्जिद की अजान को सुन कर उन्हें अनायास ही प्रतीत हुआ कि कलमा- 'ला इल्लाह इल्लिाह' और गीता के 'क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽ क्षर उच्यते' में अद्‌भुत साम्य है। गीता में ब्रह्म के तीन स्वरूप क्षर, अक्षर, और अक्षरातीत हैं। जिन्हें कुरान में 'ला' (क्षर), 'इल्लाह' (अक्षर) तथा 'इल्लिलाह' (अक्षरातीत) कहा गया है। इसी तरह कतेब पक्ष (जबूर, तौरेत, इंजील, बाईबिल, कुरान आदि) के अनेक गूढ़ार्थ उनके मन-मस्तिष्क में उद्‌घटित होने लगे। वहीं उन्होंने निश्चय किया कि धर्मोन्माद-ग्रस्त लोगों को सत्य मार्ग दिखाया जाए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा-

जो कुछ कहा कतेब ने, सोई कहा वेद।
दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाए भेद।

खुलासा, प्र. 12/42

नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम।
सब में उमत और दुनिया, सोई खुदा सोई ब्रह्म।

खुलासा 12/38

कालान्तर में उनके 'खुलासा' ग्रंथ का अवतरण ही इसी समन्वयात्मक पृष्टभूमि पर हुआ। 'खुलासा' का अर्थ है 'स्पष्टीकरण'। उन्होंने इसमें वेद (भागवत, पुराण उपनिषद् आदि) और कतेब पक्ष के ग्रंथों में निहित कथानकों, घटनाओं, संकेतों, रहस्यों की समानता को सप्रमाण उजागर किया है। जैसे कतेब में आये मलकूत, नासूत, मेकाइल, नूह तोफ़ान, हूद तोफ़ान ही वेद पक्ष के क्रमशः बैकुण्ठ, मृत्युलोक, ब्रह्मा, इन्द्रकोप और महाप्रलय है।

मेड़ता से मथुरा, आगरा में कुछ समय जन जागरण करने के उपरान्त वे दिल्ली चले आये। वहां उन्होने औरंगज़ेब को धर्म का शुद्ध रूप समझाना

चाहा। ताकि वह अत्याचार का मार्ग त्यागकर समन्वयवाद को ग्रहण करे किन्तु अनुकूल स्थिति न बनने पर वे अपने संकल्प के साथ कुंभ मेले में सम्मिलित होने के लिए हरिद्वार पहुंचे। हरिद्वार में रामानुज, नीमानुज, माधवाचार्य आदि सम्प्रदाय के पुरोधाओं एवं दशनामियों आदि से धर्म चर्चा एवं शास्त्रार्थ हुआ। उन्होंने अपने मौलिक तर्कों एवं साक्ष्यों द्वारा उन्हें निरुत्तर कर दिया। इससे प्रभावित विद्वत् समाज ने उन्हें 'विजयाभिनन्द निष्कलंक बुध' की उपाधि से विभूषित किया। उस दिन से बुध जी का साका चला।

आत्म जागरण यात्राएँ

हरिद्वार में चार माह व्यतीत कर वे पुनः दिल्ली गए। वहाँ उन्होंने अपनी 'सनंध' वाणी का एक प्रकरण यह विचार कर फ़ारसी लिपि में लेखबद्ध कराया ताकि उसका साक्ष्य देकर औरंगज़ेब को समझाया जा सकेगा। साथ ही इस कार्य के लिए उन्होंने अत्यंत साहसी एवं समर्पित बारह शिष्यों का जत्था तैयार किया। उन शिष्यों ने गुरु की आज्ञा का पालन कर औरंगज़ेब से भेंट की। किन्तु उनके द्वारा संदेश देने के पूर्व ही दरबार में उपस्थित कट्टर धर्मांधता से ग्रसित व्यक्तियों ने औरंगज़ेब को बहकाकर शिष्यों को नज़रबंद करवा दिया।

'सनंध' में महामति की वे वाणियाँ है जिनमें कुरान की विभिन्न 'सनंदों' के व्यापक मानवीय आशय को सहजता के साथ स्पष्ट किया गया है। ये आशय उनके अनुभव, स्वविवेक, आध्यात्मिकता और वाग्मिता से परिपूर्ण हैं। जागरण-संकल्प में सफलता न मिलने पर भी महामति के जुझारू व्यक्तित्व ने हार नहीं मानी और वे हिन्दू राजाओं में औरंगज़ेब के विरूद्ध जागरण लाने के प्रयास में संलग्न हो गए। इसके लिए उन्होंने उदयपुर, अवन्ति, बुरहानपुर, आकोट, रामनगर की यात्राएँ कीं। उनके विचारों का सभी पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। औरंगाबाद के शासक भाव सिंह के अतिरिक्त अन्य शासक औरंगज़ेब से संघर्ष का साहस नहीं जुटा सके।

छत्रसाल से भेंट

रामनगर के समीप स्थित मऊ में बुंदेला नरेश छत्रसाल से महामति

की भेंट हुई। उन दिनों छत्रसाल मुट्ठी भर सैनिकों के साथ औरंगज़ेब द्वारा भेजे गये सेनापतियों को पराजय का स्वाद चखा रहे थे; यद्यपि सैन्य संगठन हेतु एक कुशल मार्गदर्शक एवं धन का अभाव उन्हें महसूस हो रहा था। महामति से भेंट होने पर छत्रसाल की दोनों समस्याओं का समाधान हो गया। महामति ने छत्रसाल को पन्ना की रत्नगर्भा धरती में मौजूद हीरों के बारे में बताया। महामति ने उन्हें प्रशासन सम्बन्धी परामर्श, सहयोग और आशीर्वाद सहित मार्गदर्शन दिया–

छत्ता तेरे राज में, धक-धक धरती होय।
जित-जित घोड़ा मुख करे, तित-तित फत्ते होय॥

छत्रसाल की पत्नी देवकुँवरि, काका बलदीवान एवं अन्य परिजनों ने भी महामति का श्रद्धापूर्वक स्वागत किया। महामति को वहाँ आये हुए कुछ समय ही हुआ था तभी मुग़ल सेना नायक ने विशाल सेना के साथ आक्रमण कर दिया। महामति से आशीर्वाद लेकर छत्रसाल ने मुग़ल सेना का सामना किया और उसे परास्त करने में सफलता पायी। इस अपूर्व सफलता के मिलने पर महामति के प्रति श्रद्धानत होकर छत्रसाल ने महामति से दीक्षा ले ली।

बुन्देलखण्ड की सुदृढ़ता के लिये राजनैतिक दृष्टि से आवश्यक था कि छत्रसाल का राज्याभिषेक हो। अतः महामति ने सर्वसम्मति से उनका राजतिलक किया और इस प्रकार महामति का संकल्प पूरा हुआ। महामति ने आशीर्वाद से छत्रसाल के राज्य की सीमारेखा का पर्याप्त विस्तार हुआ–

इत यमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत टौंस।
छत्रसाल सों लरन की, रही न काहू हौंस॥

वहीं महामति की वाणी जनमानस में अभिनव आध्यात्मिक चेतना का विस्तार कर रही थी। बुन्देलखण्ड केशरी वीर सरदार छत्रसाल बुन्देला उनकी बात को सुन समझकर समर्पित हुए। महामति के आशीर्वाद एवं शक्ति के बल पर वे प्रतापी सम्राट बने। महामति के संरक्षण, परामर्श और सहयोग से उन्होंने ऐसे राज्य की स्थापना की जो सब प्रकार से आत्मनिर्भर था। वहाँ सम्पन्न होनेवाली धर्म गोष्ठियों में सभी धर्मग्रंथ रखे जाते थे। सभी धर्मों के लोग अपनी शंकाएँ और प्रश्न लाते। महामति बारी–

बारी से उनका उत्तर देते। सभी धर्मग्रंथों की समान बातों का प्रचार हो रहा था। इनके लिए सारे पैग़म्बर और शास्त्र सबके अपने थे। भेद-भाव का प्रश्न नहीं था। पैग़म्बरों और अवतारी पुरुषों द्वारा की गई भविष्यवाणियों के अनुसार 'एक विश्वधर्म' और 'ईश्वरीय राज्य' की स्थापना का नमूना लोगों ने देख लिया।

छत्रसाल की राजधानी पन्ना को 'मुक्तिपीठ पद्मावतीपुरी' कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ। पन्ना में ही महामति की वाणियों के संग्रह खुलासा, खिलवत, परिक्रमा, सागर, सिंनगार, मारफत सागर ग्रंथों में रूपायित हुए। वहीं 'सुन्दरसाथ' के रूप में एक ऐसे समाज का आदर्श प्रस्तुत हुआ जहाँ जाति, धर्म, वर्ग आदि के भेद-भाव के लिए कोई स्थान नहीं था। सब समान थे। जहाँ नारी का सम्मान था। यह विशाल समुदाय था, जो जनजागरण यात्रा में उनकी शरण में आया था। इसमें हिन्दू, मुस्लिम, निम्न, उच्च, धनी, निर्धन सभी थे, जिनमें आपसी भाई-चारा था।

परमधाम प्रयाण

सन् 1687 में रामनवमीं के दिन महामति कुछ अनुयायियों के साथ चित्रकूट गए। वहाँ उन्होंने पावनवाणी ग्रंथ 'कुलजम स्वरूप' के अंतिम ग्रंथ 'कयामतनामा' की रचना की। महाराज छत्रसाल के विनम्र अनुरोध पर वे पन्ना वापस आए। वहीं 1694 ई. में उन्होंने परमधाम प्रयाण किया। सुन्दरसाथ ने उनके सिंहासन पर वाणी संग्रह 'कुलजम स्वरूप' को प्रतिष्ठित किया, जो आज भी वहीं विराजमान है।

महामति प्राणनाथ का व्यक्तित्व

ताथे हुई बड़ी उलझन, सो सुरझाऊँ दोय।
नाम निसान जाहेर करूं, ज्यों समझे सब कोय॥

असाधारण मनीषा के धनी महामति प्राणनाथ का व्यक्तित्व बहुआयामी था। मध्ययुगीन विश्व के इतिहास पटल पर उन जैसा विश्व-मंगल के प्रति पूर्ण समर्पित व्यक्तित्व शायद ही कोई और दृष्टिगत हो।

सर्वधर्म समन्वयी

महामति ने विभिन्न भाषा एवं आध्यात्मिक ज्ञान को स्वप्रयास एवं स्वप्रतिभा से अर्जित किया था। साथ ही आध्यात्मिकता की गूढ़ता से परिचित होने के लिए उदारतापूर्वक उनका निष्पक्ष मनन-चिन्तन भी किया था। क्योंकि महामति का लक्ष्य जनमानस को जागृत कर लौकिक एवं आध्यात्मिक कल्याण-पथ पर ले जाना था। इसके लिए आपस में बुरी तरह लड़ते-झगड़ते, यहाँ तक कि खून के प्यासे हो रहे अनेक धर्मावलम्बियों को उनके धर्मों के वास्तविक रूप से परिचित कराना आवश्यक था। महामति ने तत्कालीन दो विपरित ध्रुवीय धर्मों को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए वेद पक्षीय धर्मग्रंथ सार श्रीमद्‌भागवत एवं कतेब पक्षीय धर्मग्रंथ सार कुरआन (कुरान) में निहित मूल तत्त्वों, गाथाओं, मिथकों, गूढ़ वचनों के अभिप्रायों की समानता को इतने सहज-सुबोध और विस्तृत रूप में स्पष्ट कर दिया कि जिन्होंने उन्हें सुना-समझा, उन्हें महामति में अपने त्राणदाताओं के स्वरूपों का आभास ही नहीं वरन् विश्वास भी

होने लगा। डॉ. रणजीत साहा के शब्दों में 'सामाजिक काम और समष्टिगत सौमनस्य का इससे बेहतर उदाहरण और क्या हो सकता है कि हिन्दुओं को उनमें निष्कलंक बुधावातार की छवि दीख पड़ी तो मुसलमानों को आख़िरी ज़माने के ख़ाविन्द की।'

उन्होंने यह भी स्वीकार कर लिया कि समस्त धर्म एक ही परम सत्ता के अस्तित्व की घोषणा करते है। धर्म के मर्म से अवगत होकर समस्त सुविज्ञ धर्मावलम्बियों ने महामति के 'सोई खुदा सोई ब्रह्म' के इस मूल सिद्धांत को आत्मसात किया। उनकी वाणी 'कुलजमस्वरूप' में उनके कथन 'सुख शीतल करूँ संसार' के अभीष्ट को पूर्ण करती हुई एक विश्वधर्म-सर्वधर्म समन्वय अथवा मानव धर्म को साकार करती है।

समाज के प्रखर प्रतिनिधि

तत्कालीन समाज जाति-पाँति, भेद-भाव, छुआ-छूत, अंधविश्वास, पाखंड, चमत्कार, नारी-दमन आदि के लौह-जाल में बुरी तरह जकड़ा हुआ था। त्रस्त समाज को मुक्ति दिलाने के लिए महामति ने इन कुरीतियों का प्रबल विरोध किया। वहीं विरोध दर्शन युक्त कथ्य को कार्यरूप में परिणित करने के लिए कर्मठ और समर्पित अनुयायियों का एक जत्था तैयार किया जो 'सुंदरसाथ' कहलाया।

उन संवेदलशील महामनस्वी की वाणी ने संवेदनात्मक छुअन से दीन-हीन दलितों में भी स्वाभिमान से जीवनयापन की ऊर्जा का संचार कर दिया। एक ऐसे समाज का रूप सामने आया जहाँ समता थी, मैत्री थी और परस्पर प्रेम था। यही तो समाज के सर्वजनीन विकास का पुण्यकर्म था और यह सामाजिक प्रगतिशीलता उनके प्रतिनिधित्व का सुफल था।

'सुख शीतल करूँ संसार' के लिए करुणा मूर्ति महामति ने सक्रिय कदम उठाया 'जागनी अभियान' का, नवजागरण का, समूह जागरण का।

इसके लिए महामति ने दीवान पद के वैभवशाली सुखों को सहर्ष त्याग दिया तथा परिजनों के ममत्व का, घर-द्वार के मोह का भी परित्याग कर निकल पड़े जनमानस को जाग्रत करने के लिए, अज्ञान-तिमिर से उन्हें तारने के लिए। वे स्वदेश के अनेक स्थानों में ही नहीं अपितु सुदूर खाड़ी देशों में भी गए। जहां का वातावरण, धर्म, संस्कृति एवं रहन-सहन

आदि स्वदेश से भिन्न था। जहां विचाराभिव्यक्ति के लिए पग-पग पर कांटे ही कांटे बिछे थे। मानापमान से परे स्थित उन निस्पृह मसीहा ने खाड़ी देश के ऐसे स्थान पर भी निर्भीकतापूर्वक प्रवचन दिया, जहाँ इस्लामेतर किसी अन्य धर्म का प्रवचन वर्जित था और अपराध भी माना जाता था।

भक्ति पथ पर महामति ने सगुण मधुराभक्ति को अपनाया और इस माधुर्यपूर्ण प्रेमाभक्ति में पतिव्रता नारी के पूर्ण समर्पित प्रेम को श्रेष्ठ माना। ज्ञान की शुष्कता से परे प्रेमरस से आप्लावित इस भक्ति का परम लक्ष्य ब्रह्मानन्द की प्राप्ति है। आध्यात्म के उत्कर्ष को इस धरती पर उतार लाने में प्रयासरत महामति ने आत्मा-परमात्मा के शाश्वत सम्बन्ध को सखी-भाव से इंद्रावती के रूप में महिमामंडित कर दिया। परब्रह्म लीला हेतु द्वैत रूप धारण करते हैं। इस रूप में श्री राज जी (श्री कृष्ण) और उनकी आनन्द अंगना श्यामा जी के अतिरिक्त सखी शिरोमणि इंद्रावती एवं अन्य अंगनाएँ, ब्रह्मात्माएँ अथवा मोमिन आत्माएँ भी हैं। इंद्रावती का प्रिय वियोग, विरह युगयुगीन विरह की मार्मिक व्यथा-कथा है। वियोग प्रेम की कसौटी है। इंद्रावती सखियों सहित इस कसौटी पर खरी उतरती हैं। विरह के चरमोत्कर्ष में कुंदन-सी दीप्त इंद्रावती का प्रिय से मिलन होता है। यही मिलन है आत्मा से परमात्मा का। द्वैत भाव अद्वैत में लीन हो जाता है। साधक और आराध्य मिल जाते हैं। 'इंद्रावती सखी रूप में महामति प्राणनाथ का विरह उनके संयोग सुख से कहीं प्रबल रूप में प्रकट हुआ है, जो आत्मा को भावविह्वल बना देता है। एक बार आत्मा उसमें गहरे उतर जाए तो उबरने की इच्छा नहीं रहती। तड़प में ही एक प्रकार की तृप्ति मिलती है।"[1]

अंततः साधक परम आनन्द अथवा मोक्ष को प्राप्त कर लेता है किन्तु इन्द्रावती (महामति) अकेले मोक्षसुख को नहीं चाहतीं बल्कि सभी ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) को भी जगाकर प्रियतम परमात्मा के पास ले जाना चाहती हैं। वे कहती हैं, **'पिया जगाई मुझ एकली, मैं जगाऊं बाँधे जुथ'**।

---

1. जागनी-1989, विमला मेहता, पृ० 40

इससे भी आगे जाकर संसार के समस्त जीवों को मोह-निद्रा रोग से मुक्त कर देना चाहती है- **'जीव सब जगाय के, टाँलू सो निद्रा रोग'**। यही तो उनके आध्यात्मपक्ष में मोक्ष की और लोक पक्ष में विश्वबंधुत्व की मंगलमयी अवधारणा है।

निष्ठावान मातृभूमि प्रेमी

महामति के हृदय में अपनी मातृभूमि के प्रति अनन्य प्रेम था। भारत भूमि में अवतरित होने के गौरव को महसूस करते हुए उसे अभिव्यक्त किया। तत्कालीन राजाओं को देश की एकता, अखण्डता के हितार्थ और औरंगज़ेब के कुशासन का प्रतिरोध करने के लिए एकजुट होने का आह्वान किया। औरंगज़ेब के अत्याचारों का विरोध करने के लिए उन्होंने महाराज छत्रसाल को अपनी ओजपूर्ण वाणी में युद्ध के लिए आदेश दिया था-

बात ने सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने, आगे-आये खड़ा ले तलवार।
सोभा ने लई सारी सिर खेंच के, साँइये किया सेनापति सरदार॥

किरंतन, प्र. 58/20

युद्ध का निर्देष मात्र औरंगज़ेब की कट्टरता के विरुद्ध ही नहीं वरन् अन्याय, अत्याचार और उद्दण्डता के दमन की प्रेरणा का परिचायक है।

जुझारू व्यक्तित्व

महामति ने अपने समय के क्रूर यथार्थ को साहस और धैर्य के साथ झेला था। धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता, सत्य और न्याय के लिए उन्होंने चुनौतियों का डटकर सामना किया था। यहाँ तक कि शक्तिशाली, धर्मान्ध सम्राट की राज्य व्यवस्था से टकराने में भी पीछे नहीं हटे। विरोध का स्वर मुखरित किया, जिसमें अभिनव ऊर्जा समाहित थी। उनके अन्याय विरोधी इस संकल्प का स्वार्थियों और कट्टरपंथियों ने प्रबल विरोध किया। किन्तु महामति के संकल्प के सम्मुख उन्हें पराजित होना पड़ा।

भविष्यदर्शी

महामति ने भविष्य की आहट भी सुनी थी तभी उन्होंने समस्त धर्मावम्बियों को समन्वय के सूत्र में बाँधने के लिए अवतरण लिया और यह भी दर्शा दिया कि एकता बड़ी शक्ति है। एकजुट होकर ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और संस्कृति विरोधी तत्त्वों का सामना कर सकता है।

अप्रतिम रचनाकार

युगान्तरकारी व्यक्तित्व के धनी महामति प्राणनाथ की वाणी में अपूर्व चेतना एवं प्राणदायिनी शक्ति है, अखण्ड आनंद प्रदायिनी माधुर्यमयी भक्ति है। साथ ही प्रिय परब्रह्म के प्रति पूर्ण समर्पित अनुरक्ति भी है।

महामति युगपुरुष हैं। वन्दनीय हैं और वैश्विक-वैशिष्टय के धनी हैं।

राजनैतिक संकट एवं धार्मिक-मंच

सीधे सबद रसूल के, पर ये समझे कछु और।
जो लों सबद न चीनहीं, तो लों न पाइये ठौर॥

भारत में उन दिनों मुग़ल शासक औरंगज़ेब का शासन था। धर्म के नाम पर उसने आतंक और अत्याचार फैला रखा था। उसके अत्याचार से इस्लामेतर जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। देवालय ध्वस्त किए जा रहे थे। देव प्रतिमाएं तोड़ी जा रही थीं। वाराणसी, मथुरा जैसे हिन्दू धर्म केन्द्रों को, हिन्दू धर्म ग्रंथों को, आश्रमों, विद्यालयों को बर्बरतापूर्वक नष्ट किया जा रहा था। औरंगज़ेब इस्लाम की राजत्व और राजसत्ता संबंधी नीति को माननेवाला था। उसके शासन का आधार कुरान था। मुस्लिम धर्म न मानने वाले व्यक्तियों को मुस्लिम धर्म में लाना उसका मुख्य उद्देश्य था। औरंगज़ेब का पक्का विश्वास था कि उसके पूर्व के सम्राटों ने क़ुरान के कानून को न मान कर तथा शासन प्रबन्ध को बिना किसी जाति या धर्म भेद चला कर बहुत बड़ी भूल की थी। अकबर ने इस्लाम को राजधर्म के पद से हटा दिया था तथा इस्लाम की राजत्व संबंधी नीति को त्याग कर हिन्दुओं की राजत्व नीति को अपनाया था। औरंगज़ेब की दृष्टि में यह एक महान त्रुटि थी। इस प्रकार औरंगज़ेब ने अपनी नीति के अनुसार अपने महान पूर्वज द्वारा किए गए सभी नवीन परिर्वतनों का अंत कर दिया। उसने अपने शासन के प्रारंम्भिक काल में ही कट्टर सुन्नी धर्म की उन्नति करने के लिए कदम उठाए। औरंगज़ेब ने इस्लाम को पुनः राजधर्म घोषित कर दिया इस्लाम के प्रचार के लिए राज्य की ओर से प्रचारकों को सभी सुविधाएँ प्रदान कीं। उसने कुफ्र

(बहुदेवतावाद) को समाप्त कर के भारत में जिहाद (धार्मिक युद्ध) करके जो उसके विचार में काफिरों (दार-उल-हर्ब) का देश था, वहां के लोगों को इस्लाम धर्म में दीक्षित करना तथा राज्य का शासन प्रबन्ध कुरान के आदेशानुसार भारत को इस्लामिक देश में परिवर्तित करना मुख्य ध्येय बना लिया।

औरंगज़ेब ने इस नीति का निर्धारण किया था कि जब तक भारत की समस्त प्रजा इस्लाम धर्म में दीक्षित नहीं हो जाएगी तब तक वह उन ग़ैरमुसलमानों को राजनीतिक एवं आर्थिक अधिकारों से वंचित रखेगा ताकि वे परेशान होकर अंततः इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें।

इस्लाम का प्रचार करने तथा क़ाफ़िरों को नीचा दिखाने के लिए औरंगज़ेब ने 12 अप्रैल 1679 ई. को एक फरमान जारी करते हुए हिन्दुओं पर पुनः जज़िया कर लगा दिया। यह एक विनिमय कर था जो मुआफ़ी तथा जागीरों अथवा सरकारी प्रांत में रहने वाले हिन्दुओं से इस्लाम धर्म न अपनाये जाने के कारण वसूल किया जाता था। 1671 ई. में औरंगज़ेब ने प्रांतों में लगान की वसूली हेतु नियुक्त हिन्दू अधिकारियों को पदच्युत कर दिया। 1688 ई. में उसने धार्मिक मेलों के लगने तथा त्यौहारों के मनाए जाने पर प्रतिबंध लगा दिया। इस प्रकार औरंगज़ेब ने हिन्दुओं को हर प्रकार से क्लेश पहुंचा कर मुसलमान हो जाने के लिए बाध्य किया।[1]

औरंगज़ेब की कट्टरतापूर्ण नीतियों के विरुद्ध जाटों, सतनामियों, सिखों तथा मराठों ने क्रमशः विद्रोह किया। सीधे-सादे सतनामी संतों और मधुसूदन जैसे पंडितों आदि की हत्या की जा रही थी। धार्मिक सद्भाव का पक्षधर होने के कारण सूफ़ी संतों का भी वध किया गया।

'अपने परिवार के खून से रंगे हाथों से उसने (औरंगज़ेब ने) सतनामी जैसे साधु संप्रदाय पर खूनी तलवार के वार किए। हिन्दू-मुस्लिम धर्मों की समानता का उद्घोष करनेवाली मधुसूदन जैसे पंडितो की जुबानें काटी गईं और सर्मद जैसे सूफ़ी संत का कत्ल किया गया। मूर्तिपूजा रोकने के लिए फ़रमान निकाले गए।'[1]

उस समय कश्मीर राजनैतिक दृष्टि के साथ-साथ विद्वता और प्रभाव

---

1. गुरु तेगबहादुर, हदजिन्दर सिंह सेठी, पृ. 28

की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। कश्मीर के तत्कालीन गर्वनर इफ़्तहार ख़ान ने औरंगज़ेब की इच्छानुसार वहाँ इतना जुल्म ढाया कि वहाँ हिन्दुओं के सामने दो ही विकल्प थे-इस्लामधर्म ग्रहण या मृत्यु का वरण। बहुसंख्यक जनता को ज़रा-सी भी आनाकानी करने पर मौत के घाट उतारा जाने लगा था। केसर की केसरिया क्यारी उनके निर्दोष रक्त से लाल होने लगी थी।

अंततः निराश पाँच सौ पंडितों का जत्था सिख गुरु तेग़बहादुर की शरण में पहुँचा। गुरु तेग़बहादुर दिल्ली पहुँचे जहाँ उन्होंने औरंगज़ेब की नीतियों का विरोध किया। किन्तु उन्हें एवं उनके शिष्यों को इस्लाम धर्म ग्रहण न करने पर चाँदनी चौक में प्राण दण्ड दे दिया गया। राष्ट्र और धर्म के रक्षार्थ वे शहीद हो गए; सिर दे दिया किन्तु सार नहीं दिया।

गुरु तेग़बहादुर के बलिदान से महामति को गहरी चोट पहुँची। महामति धर्म परिवर्तन के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने इस समस्या पर गहराई से चिन्तन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि औरंगज़ेब के घोर निद्रित विवेक को जगाना होगा। कोई भी धर्म अमानवीयता और बर्बरता की शिक्षा नहीं देता। अतः महामति ने विचार किया कि औरंगज़ेब को उसी के धर्म ग्रंथों का साक्ष्य दे कर जगाना होगा और इसके लिए हिन्दू और इस्लाम धर्म में जो कई समान व्यावहारिक एवं मान्य आस्थाएँ है, उनका सकारात्मक विवेचन करना होगा। इस विचार को कार्यरूप में परिणत करने के लिए महामति ने अपनी वाणी के द्वारा इस्लाम के सच्चे बंदो के बारे में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। वे हिन्दू और इस्लाम दो विपरीत ध्रुवीय धर्मावलम्बियों को उनकी धर्मान्धता और कूपमंडूकता से बाहर लाकर शाश्वत सत्य से अवगत कराने लगे। उन्होंने उद्घोषित किया-

सीधे सबद रसूल के, पर ये समझे कछु और।
जो लों सबद न चीनहीं, तो लों न पाइये ठौर॥

सनंध, प्र. 25/46

ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक।
दोऊ मुट्ठी एक ठौर की, इक राख दूजी खाक॥

सनध, प्र. 40/42

इस प्रकार महामति ने दोनों धर्मों के सार तत्त्व को एक नयी दृष्टि एवं अभिनव चिन्तन द्वारा अपनी प्रखर वाणी से विवेचित किया। उनकी

यह वाणी खुलासा, संनध, किरंतन में संग्रहीत है। खुलासा का अर्थ है स्पष्टीकरण। इसमें इस्लाम धर्म की धारणाओं एवं अभिप्रेत अर्थों को स्पष्ट किया गया है। सनंध में कुरान का गूढ़ार्थ बताया गया है तथा किरंतन में पुराण, वेद, वेदांत, शास्त्र के सार तत्त्वों का निरूपण है जो कर्म-काण्ड से ऊपर उठकर धर्म के सत्य को समझाने का सशक्त प्रयास है।

महामति की वाणी का जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा। न केवल हिन्दू अपितु मुस्लिम भी उनके शिष्य बन गये। औरंगज़ेब के पास महामति का संदेश ले जाने वाले बारह शिष्यों में दो मुस्लिम थे।

महामति के युग में जहां हिन्दू धर्म विभिन्न मत-मतान्तरों में उलझ कर अनेकता का शिकार हो रहा था; वहीं हिन्दू समाज में कुरीतियां, रूढ़ियां, अंधविश्वास बढ़ता जा रहा था। जातिगत ऊंच-नीच ने सामाजिक ढाँचे की जटिलता को बढ़ा दिया था। मुस्लिम भी इन विसंगतियों से अछूते नहीं थे। उनमें भी अंधविश्वास, बाह्याडम्बर आदि का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। महामति ने हिन्दू और मुसलमान दोनों में चेतना का संचार करते हुए अंत:करण की निर्मलता का बोध कराया।

मानववाद

जात भेस ऊपर के, ए सब छल की जहान।
जो न्यारा माहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान॥

मानवीय मूल्यों के सजग प्रहरी होने के कारण महामति दूसरों के अधिकारों एवं आध्यात्मिक स्वतंत्रता का हनन करने वालों के सख़्त विरोधी थे। नारी-दमन, वर्ग, जातिगत भेद-भाव आदि का भी उन्होंने प्रबल विरोध किया। महामति ने सामाजिक नवोत्थान और मानववादी दृष्टिकोण से राष्ट्रीय भावना को अभिसिक्त किया। वे देह को भक्ति और साधना का महत्त्वपूर्ण साधन मानते थे। उनके विचार से मानव देह की सार्थकता अपने आपको पहचानने में है। उन्होंने मानवों से इसका आग्रह इस प्रकार किया है-

पहले आप पहचानो रे साधो, पहले आप पहचानो।
बिना आप चीन्हें पार ब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो॥

किरंतन, प्र. 2/8

चौरासी लाख योनियों में केवल मानव देह से ही अखण्ड फल अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। ऐसा अनमोल तन पा कर क्यों व्यर्थ खोया जाए-

मानखे देह अखण्ड फल पाइयें। सो क्यों पाए के वृथा गमाइये॥
ये तो अधखिन को अवसर। सो गमावत मांझ नींदर॥

किरंतन, प्र. 4/2

अपने आप को पहचानने पर ही हृदय विकार रहित, निर्मल होकर मानवीय गुणों से अनुप्राणित हो जाता है। महामति इस देश, भारत भूमि में अवतरित होने को अपना गौरव मानते हुए कहते हैं-

जन्म मानखो खण्ड भरत नो, श्रेष्ठ कुली सरदार।
ए वृथा का निगमों, तमे पामी उत्तम आकार॥

किरंतन, प्र. 118/2

मानव देह पाकर समाज, देश तथा विश्व के प्रति निष्ठावान, कर्त्तव्यपरायण और समर्पित होना आवश्यक है। महामति के समय देश औरंगज़ेब के मज़हबी जुनून से पीड़ित था। जनता अत्याचार का शिकार हो रही थी। धार्मिक कट्टरतावश दी जा रही यातनाओं और सामाजिक कुरीतियों के कारण अमानवीय विसंगतियों का दौर था। 'त्रिलोकी में उत्तम खण्ड भरथ को' के उद्घोषक महामति से यह दुर्दशा नहीं देखी गई और उन्होंने हिन्दू राजाओं को एक सूत्र में बाँधने का सतत प्रयास किया; यात्राएँ कीं। औरंगज़ेब की तानाशाही का सामना करने के लिए उन्हें प्रेरित किया। जब हिन्दू शासक वर्ग औरंगज़ेब का सामना करने का साहस नहीं जुटा पाया तो महामति ने फटकारते हुए कहा-

त्रिलोकी में उत्तम खण्ड भरथ को, तामे उत्तम हिन्दू धरम।
ताके छत्रपतियों के सिर, आये रही इस सरम॥

किरंतन 58/4

समाज में दलितों की दशा शोचनीय थी। वे उच्चवर्ग के द्वारा शोषित और पीड़ित थे। एक ही मातृभूमि की संतानों में इतना भेद-भाव! जबकि एक ही बाती का प्रकाश सभी में चेतना को जागृत रखता है। इस भेद-भाव से क्षुब्ध एक ओर जहाँ महामति की इन वाणीयों में राष्ट्रीयता अक्षुण्ण है वहीं दूसरी ओर उनकी वाणी मानव समता को प्रतिष्ठित करती है-

एक भेस जो विप्र का, दूजा भेस चांडाल।
जाके छुए छोत लागे, ताके संग कौन हवाल॥

सनंध, प्र. 16/18

चांडाल हिरदे निर्मल, खेले संग भगवान।
देखावे नाहीं काहू को, गोप राखे नाम॥

सनंध, प्र. 16/48

अर्थात् भगवान ने सभी प्राणियों को एक जैसा बनाया है चाहे वह ब्राह्मण का नाम धारण करे, चाहे चांडाल! चांडाल अपने हृदय की निर्मलता के कारण ईश्वर का सानिन्ध्य प्राप्त करता है। उसका हृदय कोई देख नहीं पाता और उसे मिलनेवाला 'ईश्वर का सान्निध्य' उजागर नहीं हो पाता है। अत:-

जात भेस ऊपर के, ए सब छल की जहान।
जो न्यारा माहें बाहेर से, तुम तासो करो पेहेचान॥

सनंध, प्र. 29/5

अर्थात् जाति तो उस वस्त्र के समान है जिसे देख कर व्यक्ति के गुण अथवा चरित्र का पता नहीं चल सकता है अतः मात्र बाह्य आवरण को देखकर मानव की पहचान नहीं की जा सकती है, इसके लिए हृदय के भीतर उतरना आवश्यक है।

खायें पियें सब मिल के, बंदगी एक खसम।
नाम न्यारे सब टल गए, हुई एक नई रसम॥

सनंध, प्र. 36/19

अर्थात् सभी लोगों को साथ मिल कर रहना चाहिए और एक ही ईश्वर की आराधना करनी चाहिए जिसमें नाम का नहीं अपितु प्रेम का महत्त्व हो। इसी विचार को प्रतिपादित करते हुए महामति ने 'सुन्दर साथ' को साकार रूप प्रदान किया। इसमें दलितों के लिए भी सम्मानित स्थान था।

उस समय समाज में स्त्रियों की स्थिति भी अच्छी नहीं थी। विशेषरूप से विधवाओं की। महामति ने दलितों की भाँति ही विधवाओं को भी दीक्षा पाने का अधिकार प्रदान किया–

तब श्री जी साहब ने कह्या, जो कोई लूला पांगला साथ।
इन्द्रावती न छोड़े तिनको, पहुँचावे पकड़ हाथ॥

लालदासकृत बीतक, प्र. 31/21

करुणा, मैत्री, प्रेम एवं परोपकार को त्याग कर दिखावा करने वालों को भी महामति ने स्पष्ट शब्दों में फटकारा है–

दान करे सहू देखा देखी, बांधे ते करम अनेक।
मन तणी आंकड़ी न लाधे, तेणे बंध बंधाये विसेक॥

किरंतन, प्र. 126/24

अर्थात् जो एक-दूसरे की देखा-देखी दान करते हैं वे और अधिक कर्मबंधन में बंध जाते हैं, वे इतना भी नहीं जानते कि कर्म बंधन में कहाँ गांठ पड़ी है? ऐसे लोग और अधिक बंधनों मे बंध जाते हैं। इस तरह–

कोई बढ़ाओं, कोई मुड़ाओ कोई खेंच काढ़ो केस।
जो लों आतम न ओलखो, कहा होई धरे बहु भेस॥

किरंतन, प्र. 15/2

अर्थात् बाल बढ़ाने अथवा मुण्डन कराने से ईश्वर नहीं मिलता है। आत्मज्ञान होने पर ही ईश्वर का भी ज्ञान प्राप्त हो पाता है। इसी तरह बाह्य शुद्धि को धर्म मान कर लोग बार-बार स्नान करते हैं, शरीर को शुद्ध कर लेते हैं किन्तु यदि आत्मा शुद्ध नहीं है तो करोड़ों बार ऐसा करने पर भी सृजनहार स्वामी नहीं मिलते-

अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर।
कर देखाई कोट बेर, तोहे न मिलो करतार॥

किरंतन, प्र. 32/1

अत: कर्म-काण्डों के फेर में नहीं पड़ना चाहिए। सच्ची मानवता तो वही है जो हर तरह के वैमनस्य को दूर कर शुद्धहृदयी बना दे, तभी समाजगत बुराइयाँ दूर हो सकती हैं। इसी संदर्भ में उन्होंने सच्चे अर्थात् धर्मी-हिन्दू और दीनदार-मुसलमान की पहचान को भी परिलक्षित किया है। सच्चा हिन्दू वही है, जो-

हो भाई मेरे वैस्नव कहिये वाको, निरमल जाकी आतम।
नीच करम के निकट न जावे, जाए पेहेचान भई पारब्रह्म॥

किरंतन, प्र. 9/1

अर्थात् वैष्णव उसे ही कहा जाए जिसकी आत्मा सर्वथा निर्मल हो। वह नीच कर्म और विचारों को पास फटकने भी न दे। वैष्णव वही है जिसे परब्रह्म स्वामी की पहचान हो।

इसी तरह दीनदार मुसलमानों के विषय में उनका कथन है-

कहो कलमा हक कर, ल्यो मायने कुरान।
पाक दिल रूह पाक दम, या दीन मुसलमान॥
सारे सबद रसूल के, सिर लेवे हक जान।
नूर नबी के मगन, या दीन मुसलमान॥

सनंध, प्र. 21/11,17

नबी साहब ने यह कहा है कि कलमा को भली-भाँति समझ कर सत्य और शुद्ध रूप में कहो। कुरान का वास्तविक अर्थ समझो। शुद्ध मन निर्मल आत्मा वाला दीनदार मुसलमान है। रसूल ने यह भी कहा है कि उनके वचनों को सत्य मान कर शिरोधार्य करें। नबी के नूर में जो सदैव मगन रहे वही दीनदार मुसलमान है।

अतः धर्म के बाह्य रूप को त्यागकर, अंधविश्वास, रूढ़ियों और भेड़ चाल के बंधन को काट कर चित्त की शुद्धता को धारण करे तभी स्वस्थ एवं कल्याणकारी समाज का निर्माण सम्भव है। ऐसे समाज में संघर्ष और वैमनस्य के लिये स्थान नहीं रहता है।

'जाति, वर्ण, वर्ग, सम्प्रदायों, मतों और धर्म के बाह्य रूप को ले कर अनेक संघर्ष और महायुद्ध हो गए है। बौद्धिक रूप से इतना विवेक पा जाने पर भी मानव इस हीनता को नहीं छोड़ पाया। आज भी सम्पूर्ण विश्व में जहाँ-तहाँ झगड़े-फ़साद हो रहे हैं। महामति ने धर्म को उसके सतही रूप से उबार कर सही रूप में अपनाने का आग्रह किया। मानव को उसके बाह्य रूप शुद्धि या धनवान होने से नहीं, आत्मिक श्रेष्ठता से परखने का विवेक दिया। नाम या धर्म परिवर्तन के प्रति विरक्ति प्रकट करते हुए उन्होंने मन की शुद्धि, सद्‌गुणों के विकास या विकारों के शमन और आत्म जाग्रति पर बल दिया।' (वाणी मुक्ता 8)

इस प्रकार अपने समय के समाज का प्रखर प्रतिनिधित्व करते हुए महामति ने कमज़ोरों, दलितों और प्रताड़ितों में नवजीवन का संचार किया।

महामति ने सदैव विचारों और आचरण में सामंजस्य स्थापित करने पर ज़ोर दिया। सामान्यजन में प्रायः यह प्रवृति होती है कि वह कहता कुछ है और करता कुछ है। मानवता तो कथनी और करनी में समानता चाहती है। महामति इसी आशय को व्यक्त करते हुए कहते हैं-

केहेनी करनी चलनी, ए होय जुदियां तीन।
जुदा क्या जाने दुनी कुफर की, और ये तो इलम याकीन॥

कयामतनामा, छोटा, प्र. 1/57

महामति ने जहाँ जीवन उन्नयन एवं सिद्धांत प्रचार का दायित्व संतों पर डाला है, उससे कहीं अधिक गृहस्थों को सौंपा है। नारी के प्रति संतुलित सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण भी समाज और राष्ट्र के लिए उनकी एक महत्त्वपूर्ण अनुकरणीय देन हैं। उन्होंने कथन नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप में भी नारी के सम्मान का ध्यान रखा।

त्याग, तपस्या, प्रेम, समता, भ्रातृत्व, आध्यात्मिक समदर्शिता आदि गुणों से युक्त होना ही तो मानवता है, मानववाद है जो महामति की वाणी में सर्वत्र दीसमान है।

परब्रह्म का स्वरूप

निज नाम श्री कृष्ण जी; अनादि अक्षरातीत।
सो तो अब जाहेर भये, सब विध वतन सहीत॥

धर्म 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है, धारण करना। यदि धर्म छूट जाता है तो समाज के सारे नियम और बंधन भी छूट जाते हैं। समाज की दशा अथाह सागर में तैरती नाविकविहीन नौका के समान हो जाती है। इसीलिए धर्मग्रंथ विश्व की अमूल्य धरोहर हैं। ये तभी कल्याणकारी होते हैं जब इन्हें निष्पक्ष हो कर पढ़ा और समझा जाए। प्रत्येक धर्म के धर्म ग्रंथ के आधार पर उसके मूल-पुरुष का निर्णय होता हैं जिनके विचारों और सिद्धांतों में समानता होती है। वे एक चेतना के सत्य से दीप्त होतें हैं। वहीं इन ग्रंथों के मूल अभिप्रायों एवं अर्थों को उलटकर समझने अथवा भ्रमित होने से अनर्थकारी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। वैमनस्य की दीवार दृढ़ हो जाती है, संघर्ष होता है, युद्ध होते हैं। महामति के समय भी यही स्थिति थी। उन्होंने स्वयं कहा है-

मूल मायने उलटाय के, कई जाहेर किए तोफान।

पीड़ित मानवता के उत्थान के लिए महामति ने अपने तीन लक्ष्य उद्घोषित किए-

साहेब आये इस जिमि, कारज करने तीन।
सब का झगड़ा मेट के, या दुनिया या दीन॥

खुलासा 13/89

संसार के धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक झगड़ों को मिटाना, सारी

दुनिया को एकसूत्र में पिरोना और समस्त धर्मग्रंथों को एक करना यही तीन कार्य हैं। यद्यपि पूर्ववर्ती संतों ने भी धार्मिक एकता पर बल दिया था किन्तु धर्मग्रंथों की एकता को दर्शाए बिना उन्हें सफलता नहीं मिली। महामति ने इस कमी का अनुभव किया। उन्होंने वेद और कतेब अथवा हेमेटिक और सेमेटिक ग्रंथों की मूलभूत समानता के साथ निहित अवधारणाओं, मिथकों, स्रोतों आदि की प्रामाणिकता को मानवीय आधार पर प्रस्तुत किया।

वेद, कुरान और महामतिवाणी

उस समय वेद या हेमेटिक ग्रंथों में वेद, उपनिषद्, पुराण, गीता, भागवत आदि मान्य थे। वहीं कतेब या सेमेटिक ग्रंथों में दाउद के मतावलंबियों में ज़बूर, यहूदियों में तौरेत, ईसा के धर्मावलम्बी ईसाइयों में बाईबिल और मोहम्मद साहब के अनुयाय़ी यानी इस्लाम धर्मावलम्बियों में कुरान पूज्य ग्रंथ थे। महामति ने देखा कि कतेब ग्रंथों का सार कुरान में है और वेद ग्रंथों का सार भागवत् में निहित है। उन्होंने इन ग्रंथों के शास्त्रीय और गाथा दोनों पक्षों की अवधारणाओं, घोषणाओं, भविष्यवाणियों, अवतारों, मिथकों आदि की समानता को सप्रमाण प्रस्तुत किया ताकि दोनों तरफ के ग्रंथों को माननेवाले उनमें उल्लेखित सत्य से अवगत हो सकें, उसके गूढ़ार्थों को समझ सकें और धर्म के नाम पर शोषण करनेवालों के मायाजाल से मुक्त हो कर यह अनुभव कर सकें कि हमारा स्वामी, हमारा रक्षक, जनक एक ही है और वह है परब्रह्म, परमज्योति अथवा नूर अलानूर–

खसम एक सबन का, नाहिन दूसरा कोय।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होय॥

कलश 15/20

समन्वय के ऐसे प्रमाणिक अपूर्व स्वरूप का विश्व को अवदान महामति की तेजस्विता का पर्याय है तो भारतीय धर्म का अभिनव स्वर भी है। इसे मुखरित करती उनकी वाणी अज्ञान के तिमिर को नष्ट करने वाली आलोकप्रदायिनी वाणी है–'तारतमवाणी' जो 'कुलजमस्वरूप' भी है। यह शाश्वत मंगलमयी है, सार्वजनीन है, सार्वकालिक है तो सार्वभौमिक भी है।

'तारतमवाणी' अथवा 'कुलजमस्वरूप' ग्रंथ में परब्रह्म के लिए पवित्र पूज्य भावना है और अवतारों के लिए सम्मान है। कुरान और बाईबिल में परमात्मा को 'नूर अलानूर' कहा गया है वहीं भगवद्गीता में 'ज्योतिषामपितद् ज्योतिः' की संज्ञा दी गई है। महामति कहते है कि-

दरबार मोहोल नूर सबै, नूरै नूर विस्तार।
ये नूर कहूं मैं कहां लग, कहूं याको वार न पार॥

सनंध, प्र. 30/43

जब किसी का ध्यान उस ज्योति की ओर जाने लगता है तब उसे उस ज्योति स्वरूप परमात्मा या परब्रह्म अथवा नूर अलानूर का अहसास होता है और वह समय आता है जब साधक यह जान लेता है कि परमात्मा का स्वरूप अनंत है। जिसका कोई आर-पार नहीं है उसी स्वरूप में उसका अपना स्वरूप भी आत्मसात हो जाता है। कतेब पक्ष के वाहेदत अथवा तौहीद और वेद पक्ष के अद्वैतवाद अथवा एकेश्वरवाद की समानता प्रस्तुत करते हुए महामति कहते हैं-

जब खाविंद अरस देखिये,तब तो एही एक।
इस बिना और जरा नहीं, जो तू लाख बेर फेर देख॥

खुलासा, प्र. 16/81

अर्थात् परमधाम के स्वामी सच्चिदानंद ब्रह्म को देखें तो वे एक ही वाहिद, अद्वैत सत्ता हैं। व्यक्ति चाहे लाख बार अनेक प्रकार से जहाँ, जिस ओर देख ले परब्रह्म की परमसत्ता के अतिरिक्त कुछ नहीं है। कुरान के सत्ताइसवें सिपारे में लिखा है कि एकेश्वरब्रह्म (वाहिद) के भक्ति जल से स्नान कर पाक होने पर ही नूर अलानूर (परब्रह्म स्वामी) के आदेशों को समझा जा सकता है।

क्षर, अक्षर, अक्षरातीत

महामति ने सच्चिदानंद स्वरूप ब्रह्म को क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के रूप में प्रतिष्ठित किया हैं। सच्चिदानंद ब्रह्म सत्, चित, आनंद से परिपूर्ण है। सर्वप्रथम गीता में ब्रह्म के तीन रूपों का उल्लेख है। गीता के अनुसार इस संसार में क्षर और अक्षर दो पुरुष हैं। इनमें सम्पूर्ण भूत प्राणियों के शरीर को नाशवान और जीवात्मा को अविनाशी कहा जाता

है। इन दोनों से उत्तम पुरुष तो अन्य ही है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके ईश्वर रूप से सबका धारण-पोषण करता है अविनाशी परमेश्वर और परमात्मा उत्तम पुरुष ही है।

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्चयते॥
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः॥

श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 15/16-17

क्षर ब्रह्म

महामति ने सहज रूप में क्षर ब्रह्मकी व्याख्या की है और स्पष्ट किया है कि वही कलमा (कुरान) के अंतर्गत 'ला इल्लाह इल्लिलाह' है। 'ला' क्षर, 'इल्लाह' अक्षर और 'इल्लिलाह' अक्षरातीत स्वरूप ही हैं। सच्चिदानंद ब्रह्म का क्षर स्वरूप नाशवान है। यह न अखण्ड है और न अनित्य। इसका मूल कारण अक्षर ब्रह्म है। अक्षर ब्रह्म के चार स्वभावों में एक प्रमुख अहंकार है। इसी के मूर्त्त रूप को अव्याकृत भी कहा गया है। इसी मनविलास का दूसरा नाम क्षर पुरुष है। इसे समष्टि की भी संज्ञा दी गई है क्योंकि शेषशायी नारायण से लेकर सभी आदि पुरुष एवं सभी जीव इसी से उत्पन्न होते हैं और क्षर पुरुष या विराट पुरुष महाप्रलय के समय असंख्य वस्तुओं के साथ-साथ इसी में विलय हो जाते हैं। अनेक ब्रह्माण्डों और विश्वों की रचना इन्हीं क्षर पुरुष की शक्ति से होती है। इन ब्रह्माण्डों के आकाशों का विलय भी समष्टि या परम् आकाश में होता है। इसीलिए इसे शून्य समष्टि के नाम से भी जाना जाता है। इस नश्वर संसार के प्रमुख देव क्षर पुरुष ब्रह्मा, विष्णु, महेश, पाताल स्थित शेषशायी नारायण और अन्य अगणित देवता अपने भक्तों के साथ महाप्रलय में अक्षर ब्रह्म की मूल प्रकृति अव्याकृत में विलिन हो जाते हैं। महामति ने इसे इस तरह व्यक्त किया है-

अक्षर खेल इच्छाएं कर, क्षर रच के उड़ात।
वासना पांचों इत, ए सत मण्डल साक्षात॥

कलश, हिन्दुस्तानी, प्र. 23/99

शास्त्रों में महाशून्य माया के कारण, महामाया, माया निराकार, अजा, परमावकाश, निगुर्ण, मोहनिद्रा, क्षर पुरुष, विराट पुरुष आदि नामों का भी उल्लेख है। अव्याकृत के मनविलास को क्षर पुरुष कहा गया है। उससे लोकों की उत्पत्ति इस प्रकार हुई। यद्यपि यह स्वप्नसदृश है फिर भी इसके मूल में अवश्य ही कोई समर्थ सत्ता है। यह उत्पत्ति क्रम इस तरह है।-

अव्याकृत से महाविष्णु उत्पन्न हुए, महाविष्णु के मन से क्षिति, जल, पावक, आकाश, वायु (पंचतत्त्व), सत, रज, तम (तीन गुण) एवं ब्रह्मा, विष्णु, महेश अर्थात् त्रिदेव उत्पन्न हुए। पंचतत्त्वों से दस प्रकृति की और रजोगुण से दस इन्द्रियों की उत्पत्ति हुईं। इन इन्द्रियों में पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और पांच कर्मेन्द्रियाँ हैं। सतोगुण से चार अंतःकरण मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार पैदा हुए। इन चौबीस प्रवृतियों से क्षर पुरुष बने। जिनके अंगों में चौबीस देवताओं का निवास है। आंख में सूर्य, नाड़ी में नदी, बुद्धि में ब्रह्मा, अंहकार में रुद्र, हाथ में इन्द्र आदि देवों का वास है। क्षर पुरुष के चौदह लोक हैं-

सत लोक, तप लोक, जन लोक, महर लोक, स्वर्ग लोक, भुवर्लोक, मृत्यु लोक, अतल लोक, वितल लोक, सुतल लोक, तलातल लोक, रसातल लोक, महातल लोक, पाताल।

इन लोकों पर चार देवों ब्रह्मा, विष्णु, महेश और शेषशायी नारायण का आधिपत्य है। समस्त जीव सृष्टि इनकी उपासक है। इन चौदह लोकों के मूल आधार के विषय में महामति ने कहा है कि संसार सपने के समान है। सांसारिक जीव इसी में भटक जाते हैं। इसीलिए वे इस तथ्य को नहीं समझ पाते हैं। इस सपने का मूल अर्थ समर्थ सत्ता की माया है-

या पर एक कहूं विचार, सुनियो ब्रह्म सृष्टि सिरदार।
ए चौदे भवन देखो आकार, याके मूल को करो विचार॥

प्रकाश हिन्दी, प्र. 35/8

वहीं यह भी कहा है-***'ए सुपन मूल तो समरथ, या के मूल को देखो अरथ'***

यह स्पष्ट है कि तीन गुणों और पंचतत्त्वों के समायोजन से ही इस सृष्टि की रचना हुई त्रिदेवों के कार्य विभाजित हुए। ब्रह्मा सृष्टिकर्ता हैं, विष्णु पालक हैं तो शिव संसार के संहारकर्त्ता हैं। महेश्वर शिव की महाशक्ति हैं उमा।

धर्मग्रंथों में तैंतीस करोड़ देवताओं का उल्लेख आया है। सृष्टि के जीव अपनी संसारिक कामना की पूर्ति और अभीष्ट सिद्धि के लिए इन्हीं देवी-देवताओं की उपासना में लीन हो गए। एक परम ब्रह्म के स्थान पर बहुदेवोपासना के फलस्वरूप अनेक उपासना विधियाँ, कर्म-काण्ड आदि के विधान बने। धर्मग्रंथों की रचनाएँ हुई। हर धर्मी स्वार्थ और अहंकारवश स्वयं को एक-दूसरे से बड़ा समझने लगा। अज्ञान के तिमिर में संघर्ष और युद्ध के भयावह रूप सामने आने लगे। महामति ने कहा है-

बोली जुदी सबन की, नाम जुदे धरे सबन।
चलन जुदा कर लिया, ताथे समझ न परी किन॥

खुलासा, प्र. 12/43

यह प्रश्न सामने आता है कि परब्रह्म ने ऐसे नश्वर संसार की रचना क्यों की? क्यों वैराट (क्षर) स्वरूप दिखाया? इसका कोई महत्त्वपूर्ण कारण तो होगा! इस जगत के रचना कार्य के कारण को ही महाकारण की संज्ञा दी गई है। इस स्वप्नवत् संसार रचना का क्या कारण था? महामति ने इसके कारण का रहस्योद्घाटन करते हुए अभिव्यक्त किया है-

अब खेल उपजे के कहूं कारण। ए दोऊ इच्छा भयी उत्पन्न॥
बिना कारण कारज न होय। सो कहूँ या के कारण दोय॥

प्रकाश हिन्दी, प्र.37/6

बिना कारण कोई कार्य नहीं होता। अतएव इस नश्वर सृष्टि रचना के दो मूल कारण हैं-

अक्षर मन उपजी ए आस। देखूँ धनी जी को प्रेम विलास॥
तब सखियों मन उपजी एह। खेल देखें अक्षर का जेह॥

प्रकाश हिन्दी, प्र. 37/12

अक्षर ब्रह्म के मन में इच्छा हुई कि ब्रह्म और ब्रह्मात्माओं की प्रणय लीला देखूँ! तब ब्रह्मात्माओं के मन में भी यह बात आई कि अक्षर ब्रह्म की जगत् लीला देखें ! सखियों द्वारा प्रिय परमात्मा से अनुरोध करने पर उन्होंने परिहासपूर्वक मना भी किया। न मानने पर उन्होंने स्वीकृति दे दी-

तब हम जाये पियासों कही। खेल अक्षर का देखें सही॥
जब ये बात पिया ने सुनी। तब बरजे हाँसी करने घनी॥

37/13

दूसरा कारण था-

रूहें बेनियाज़ थीं, बीच दरगाह बारे हजार।
जाने न आप अरस की, साहेबियां अपार॥ खुलासा 17/48

सच्चिदानंद धाम अथवा परम धाम (अर्शेअज़ीम) में बारह हज़ार ब्रह्मात्माएँ वहाँ के शाश्वत ऐश्वर्य एवं आनन्दमय वातावरण में प्रेम निमग्न थीं। उन्हें परब्रह्म स्वामी के प्रभुत्व का भी अहसास नहीं था। शत्रुता, मित्रता, ईमानदारी, बेईमानी से भी अवगत नहीं थीं। साथ ही ब्रह्मात्माओं को यह भी संदेह हुआ था कि हमारे प्रियतम स्वामी का प्रेम हमारे प्रेम से कैसे बड़ा हो सकता है, तनिक देखें तो सही? तब श्री राज जी ने कहा तुम सब जब मुझसे बिछुड़ जाओगी तब तुम्हें मेरे प्रेम का अनुभव होगा। तुम वियोग की स्थिति को ही सत्य मानकर उसी में निमग्न हो जाओगी तब मैं तुम्हें स्मरण कराने के लिए अपना रसूल (संदेशवाहक) भेजूँगा-

ए इसक तो पाइए, जो पेहेले जाओ मोको भूल।
तुम ले बैठी जुदायगी, मैं भेजों तुम पर रसूल॥
खिलवत, प्र.11/19

महामति ने जगत कार्य के कारण को महाकारण नाम दिया। उनके अनुसार परमधाम की आनंदमयी लीला में सदैव सुखी रहने वाली ब्रह्मात्माओं को सच्चिदानंद, सत्-चित्-आनन्द की अनुभूति और अहसास दिलाने के लिए असत, जड़ और दुख की अनुभूतियों से युक्त सृष्टि की रचना की गई। ब्रह्मात्माएँ अपने प्रेम में पूर्ण रूप से मग्न और आनंदित थीं। उन्हें अपने स्वामी परब्रह्म परमात्मा की सत्ता और महिमा का पता नहीं था। उन्हें इस बात का भी अहसास नहीं था कि वे सत्य हैं, चेतन हैं, अमर हैं। सच्चिदानंद गुणों से पूर्ण धाम में रहने का अहसास दिलाने के लिए इनसे विपरीत गुणों से युक्त सृष्टि रचना उस लीलाधारी का एक कौतुकमय खेल था।

कुरान आदि कतेब ग्रंथों में वर्णित है कि ला-मकां या शून्य के नीचे जितना भी जगत है वह सब 'ला' अर्थात 'नहीं' है। 'कुन' अथवा 'हो जा' कहने से इस सृष्टि की रचना हुई। जो कयामत के दिन (प्रलय अथवा हश्र के दिन) नष्ट हो जाएगी-

किताब कहे तले 'ला' के, सो खेल है सब ला।
'कुन' केहेते हो गया, सो कयामत को फना॥

खुलासा, प्र. 17/71

इसी तरह चौदह लोकों के विषय में वेद और कतेब में अद्भुत साम्य है। कतेब ग्रंथों में इन चौदह लोकों का विस्तृत वर्णन चौदह तबक के रूप में रूपायित है।-

लोक चौदे कहे वेद ने, सोई कतेब चौदे तबक।
वेद कहे ब्रह्म एक, कतेब कहे एक हक॥

खुलासा 12/39

परब्रह्म के चिन्मय स्वरूप सत्ता को निराकार निंरजन शून्य कहा गया है। उन्हें चौदह लोकों में ढूंढ कर सब हार गए किन्तु पा न सके। कतेब ग्रंथों में भी परब्रह्म स्वामी के बेचूं, बेचगूं, बेशब्बीह, बेनिमून या निराकार आदि नामों से परिचय कराया गया है-

हारे ढूंढ ऊपर तले, खुदा न पाया किन।
तब हक का नाम निराकार, कहया निरंजन सुन॥
और नाम धरया हक का, बेचूंन बेचगून।
कहे हक की सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून॥

खुलासा, प्र.12/2-3

कतेब पक्ष के व्यापक एवं व्यावहरिक आधार तैयार करने में महामति की प्रज्ञा ही समर्थ थी। सम्भवतः वे प्रथम धर्माचार्य थे, जिन्होंने कतेब ग्रंथों, विशेष रूप से कुरान को गम्भीरतापर्वूक उच्च आध्यात्मिकता की दृष्टि से देखा, समझा और उसमें निहित तथ्यों को उजागर किया।

अक्षर ब्रह्म

अक्षर ब्रह्म को अक्षर पुरुष और कूटस्थ अक्षर भी कहा गया है। वे अविनाशी सत्ता सच्चिदानंद स्वरूप श्री राज जी के सत अंग है, क्योंकि अविनाशी सत्ता एक ही वाहिद सत्ता अथवा अद्वैत सत्ता है। जहाँ भी देखा जाए परब्रह्म सत्ता के अतिरिक्त कुछ नहीं है-

जब खाविंद अरस देखिये, तब तो यही एक।
इन बिना और जरा नहीं, जो तू लाख बेर फेर देख॥

खुलासा, प्र. 16/81

परब्रह्म स्वामी अखण्ड अक्षरातीत धाम में है। वहीं अक्षरधाम में अक्षरब्रह्म भी हैं। परम धाम के रंगमहल में अनन्त लीलायें होती रहती हैं। वहां ब्रह्मात्मायें सदा लीला-दर्शन में निमग्न रहती हैं। ऐसे समय में नित्य प्रातः अक्षरब्रह्म जो अक्षरातीत के सत् स्वरूप हैं, उनके दर्शनार्थ आते हैं-

सखी एक निकसे एक बैठे, एक आवे उठे एक बैठे।
इन समय भगवान जी इत, दर्शन को आवें नित॥

परिक्रमा 3/97

महामति कहते हैं कि स्वयं सच्चिदानंद ब्रह्म अपने सत् अंग से बाल लीला करते हैं। उनका बाल स्वरूप अक्षर ब्रह्म अनादि काल से अपने बालस्वभाववश यह खेल खेलता रहता है। अक्षर ब्रह्म खेल-खेल में अपनी इच्छाशक्ति से क्षर ब्रह्माण्डों की रचना करते हैं और उन्हें उड़ा देते हैं। उनके पलक खोलने और मूंदने से यह भी अभिप्राय निकलता है कि खुली आंख से वे अपने आप को अक्षरातीत ब्रह्म के अंग रूप में पाते हैं और उनके लीला धाम को देखते हैं। आंख मूँदने पर उसी धाम को कल्पना में देखते हैं। कल्पना में आने वाला दृश्य ही यह जगत् है। अर्थात् निमिष मात्र के संकेत से कई ब्रह्माण्ड बन-बन कर मिट जाते हैं। तीनों लोकों (पाताल लोक, मृत्यु लोक, देव लोक,) तथा तीनों गुणों के प्रतीक त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित इस सृष्टि की उत्पत्ति इसी तरह होती है-

नयन के पावो पल में इसारत, कै कोट ब्रह्माण्ड उपजत खपत।
इत खेल पैदा इन रवेस, त्रिलोकी ब्रह्मा, विष्णु, महेश॥

प्रकाश हि., प्र. 37/10

सखी इन्द्रावती ने परमधाम की आत्माओं से प्रियतम परब्रह्म की चर्चा करते हुए अक्षर ब्रह्म-नूर जलाल के विषय में कहा है-

आगे नूर फुरमान के, खड़ा हक़ नूर का नूर।
जिनसे पैदा मलाएक, चुआ कतरा जिनो अंकूर॥

सनंध, प्र. 39/10

अर्थात् परब्रह्म के नूरी आदेश के अनुरूप ही अक्षरातीत के अंश अक्षरब्रह्म के नूर का विस्तार हुआ। उस नूर का एक क़तरा छिटक जाने

से अनेक नूरी फ़रिशते अस्तित्व में आए।

नूर; अक्षरब्रह्म ने अपनी तेजमयी शक्ति योगमाया से वृन्दावन रास मण्डल स्थल (ब्रह्माण्ड) की रचना करवायी; जो उनकी नूरमयी दृष्टि पड़ते ही अभिनव ज्योति से झिलमिला उठा था। जहाँ अक्षरातीत ने श्री कृष्ण रूप में एवं ब्रह्मात्माओं ने गोपियों के रूप में सानंद क्रीड़ाविहार किया-

इत खेलत स्याम गोपियाँ, ए जो किया अरस रूहों विलास।
है जो कोई दूसरा, जो खेले महबूब बिना रास॥

सनंध, प्र. 39/13

रास मण्डल, बहिश्तें अथवा अन्य सृष्टि सब नूर जलाल अक्षरब्रह्म से ही उत्पन्न होती है। सखी इन्द्रावती कहती हैं कि मैं अपनी नश्वर जिह्वा से अक्षरब्रह्म के उस नूर की महिमा का वर्णन कैसे करूं?

रास भिस्त या जो कछू, ए सब पैदा असल नूर।
तिन असल नूर की क्यों कहूं, जो द्वार आगूं हजूर॥

सनंध, प्र. 39/36

अक्षरब्रह्म का निवास

नूर-मकान अविनाशी धाम है, वहाँ सब कुछ चिन्मय नूर से रोशन है। अक्षरधाम के आगे सर्वोच्च सत्ता अक्षरातीत का परमधाम है जो प्रखर तेज से युक्त है। जिबरील फ़रिश्ता जब परमधाम की ओर जाने लगा था तो उसके पंख उस तेज से जलने लगे थे-

अक्षरब्रह्म के महत्व को उजागर करते हुए महामति कहते हैं-

ए बल नूर जलाल को, जिनकी एह कुदरत।
ए जुबां न केहे सके, बुजरक बल सिफत।।

खुलासा 9/10

अर्थात् नूर जलाल अक्षरब्रह्म की महिमा बड़ी भारी है। उनकी मूल शक्ति या सुमंगला शक्ति में इतनी सामर्थ्य है कि जागतिक शब्दों में उस शक्ति का बखान नहीं किया जा सकता।

अक्षरब्रह्म की दो प्रवृत्तियां हैं-एक विलास वृत्ति, इसी से वे अपने

धाम में क्रीड़ा करते है। दूसरी वृति से क्षर या अव्याकृत में चेतना को आभासित करते हैं। उनका धाम (निवास) ही ईश्वरीय शक्तियों-देवों का मुक्ति धाम है। इस धाम के रहस्य एवं आनंद को तारतम ज्ञान द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। अक्षरब्रह्म यद्यपि सर्वलीला से सम्पन्न हैं, फिर भी अक्षरातीत परब्रह्म की गुप्त लीला से अनभिज्ञ हैं। अक्षरब्रह्म की बुद्धि का स्वरूप ब्रह्म ही है।

चिद्स्वरूप श्री राज जी अपन सत् एवं आनंद अंग को अपनी सत्ता से प्रेरित करते हैं। परमधाम की ब्रह्मांगनाओं को अभाव और दु:ख का तनिक भी ज्ञान नहीं था। उन्हें इनका ज्ञान कराने के लिये परब्रह्म स्वामी ने तीन बार विशिष्ट ब्रह्माण्डों की रचना करवाई। परब्रह्म और ब्रह्मात्माओं की लीला देखने के लिये दो बार ब्रज और रास लीला का अनुभव किया। अक्षरब्रह्म श्री कृष्ण के रूप में अवतरित हुए ब्रह्मात्माएँ गोपिकाओं के रूप में ब्रज मण्डल में अवतरित हुईं। वहीं अक्षरब्रह्म अक्षरातीत परब्रह्म का आवेश (तेज) धारण कर श्री कृष्ण (श्री राज जी) के स्वरूप में अवतरित हुए। अक्षरब्रह्म ने इस परम आनंदप्रदायनी ब्रजलीला को अपनी जागृत बुद्धि में समाहित कर लिया। ब्रह्मात्माओं ने कालमाया रचित ब्रज की धरा पर गोपी-कृष्ण के रूप में तथा योगमाया द्वारा रचित वृंदावन की रास-लीला में प्रेम की पराकाष्ठा का अनुभव किया। इस पराकाष्ठा में ही अनन्त मिलन का सुख है।

दु:खमय संसार को देखने की इच्छा ब्रह्मात्माओं में विद्यमान थी। अत: तीसरी बार कालमाया के ब्रह्माण्ड में ब्रह्मात्माएँ प्रकट हुईं। यह काल कलियुग है। इस बार वे एक स्थान पर अवतरित न हो कर सभी देशों में अवतरित हुईं। उनका जन्म सभी धर्मों में हुआ। परब्रह्म की आनन्द अंगना श्यामा जी एवं सखी शिरोमणि सुन्दर बाई का आविभार्व श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप में हुआ और श्री राज जी की शक्ति मेहराज (महामति प्राणनाथ) के रूप में अवतरित हुई। उन्होंने ब्रह्मात्माओं के ही नहीं प्रत्युत प्राणिमात्र के कल्याण के लिये जागनी लीला या धाम लीला आयोजित की। इस तरह ब्रह्मांगनाओं की इच्छा की पूर्ति हुई। अक्षरब्रह्म द्वारा रचित आत्मविस्मृतिमय माया के खेल को देखने की उनकी उत्कट लालसा थी। महामति कहते हैं-

तब सखियों मन उपजी एह। खेल देखें अक्षर का जेह॥
तब हम जाय पिया सों कही। खेल अक्षर का देखें सही॥
मने किये हमको तीन बेर, तब हम मांग्या फेर-फेर फेर॥

इस पर उन्हें धनी (परब्रह्म) ने समझाया था कि इस इच्छा को त्याग दो, क्योंकि तुम्हें अपने मूल घर अर्थात् परमधाम का स्मरण नहीं रहेगा। अंतत: हमारे हठ के सामने उन्हें हमारी बात माननी पड़ी और तब तीन ब्रह्माण्डों की रचना हुई। इन्हीं तीन ब्रह्माण्डों में तीन बार लीलाएँ हुई-

ये तीन ब्रह्माण्ड हुए जो अब। ऐसे हुए न होसी कब॥
ये तीनों में ब्रह्म लीला भई। ब्रज, रास और जागनी कही॥
जागनी को जागते सुख। ये लीला सुख क्यों कहूं या मुख॥

प्रकाश हिन्दी, प्र. 37/108,110

मथुरा में राक्षसों के संहार अर्थात् कंस-वध तक श्री कृष्ण में अक्षर आवेश समाहित हो गया था। ग्वाल वेश के त्याग के साथ-साथ आवेश का भी त्याग हो गया-

तो लों भेष जो पीउ का, कुबला पीड़ मारया।
चांडूल मुष्टक संघार के, जाय कंस पछाड़या॥

प्रकाश हि०, प्र. 31/52

अक्षरब्रह्म और ब्रह्मात्माएँ रास लीला आनन्द में अपने उद्देश्य को भी विस्मृत कर बैठीं। तब अक्षरातीत ब्रह्म को अपना आवेश वापस ले लेना पड़ा। तब अक्षरब्रह्म को अपने स्वरूप का स्मरण हुआ और वे अक्षरधाम लौट गये।

महामति का कथन है कि अक्षरब्रह्म की चित्तवृति में वह लीला आज भी हो रही है। विरह झेलने पर ही प्रेम की परख होती है तथा पुनर्मिलन पर होनेवाले प्रेम के आनन्द की सुखद अनुभूति होती है-

हकें खेल देखाया याही वास्ते, सुख देखावने अपने अंग।
सुख लेसी बड़ा इसक का, रूहें ले बिरहा मिलसी संग॥

सिनगार, प्र. 16/14

कतेब ग्रंथों में अक्षरब्रह्म का उल्लेख नूर जलाल नाम से आया है। नूर जमाल (अक्षरातीत) का नूर अक्षरब्रह्म है। इसकी महिमा का वर्णन करते हुए वाणी थक जाती है। उनके निवास तक जिबरील फरिश्ता पहुंचा

था जो आगे तक नहीं जा सका। कुरान में परमात्मा से प्रेम करने और उनकी राह में सब कुछ कुर्बान कर देने वालों को 'मोमिन' कहा गया है। श्रीमद्भगवत्गीता में ऐसे आस्थावानों को 'ब्रह्ममुनि' की संज्ञा दी गई हैं। कलाम अल्लाह या कुरान में पहले से ही लिखा है कि क़यामत की अखिरी घड़ी में लोगों की सभी शंकाएं दूर होंगी। ब्रह्मात्माओं के इस विशेष समूह के प्रताप से सभी लोग प्रेम का मार्ग ग्रहण करेंगे-

ए कलाम अल्ला में पेहेले लिख्या, सब छोड़ेंगे सक।
बरकत उमत खास की, सब लेसी इसक॥

खुलासा, प्र. 9/71

कुरान एवं कतेब ग्रंथों में परमधाम से इस संसार में आने वाले उपादानों की चर्चा है। वही वेद ग्रंथों में है किन्तु रूप अलग-अलग हैं। दोनों ने नूर जमाल (अक्षरातीत) एवं नूर जलाल (अक्षरब्रह्म) की साक्षियां प्रदान की हैं-

यह कायम न्यामतें, दोऊ से जुदी जुदी।
नूर जमाल और नूर की, दई दोऊ की साहेदी॥

खुलासा, प्र.10/69

संकेतों में कहे गए उस वर्णन को स्वयं परब्रह्म स्वामी ही स्पष्ट कर सकते हैं। ये संकेत उन्होंने ही दिया है। उन्हें महामति ने सहज, सुबोध रूप में उजागर किया ताकि समझने में सरलता हो। यूँ तो संसार के सभी धर्मग्रंथों में सांकेतिक वर्णन मिलते हैं किन्तु मुतलक ब्रह्म द्वारा प्रदत्त इलम के द्वारा बातिन में छिपे रहस्यों का गूढ़ अर्थ समझ में आ पाता है-

अरस बका की हकीकत, माहें लिखी कतेब वेद।
खोले जमाने का खाविंद, और कोई खोल न सके भेद॥

सिनगार, प्र. 3/50

अक्षरातीत ब्रह्म

क्षर और अक्षर ब्रह्म के स्वामी और इन दोनों से परे अक्षरातीत ब्रह्म हैं। उनके नूर अथवा प्रकाश से दोनों प्रकाशित हैं। नूर की एक बूंद से ही फरिश्तों की सृष्टि हुई और फरिश्तों से समस्त ब्रह्माण्ड की रचना पालन और क्षय होता है। अक्षरातीत ब्रह्म को वेद ग्रंथों में पूर्ण ब्रह्म और कतेब ग्रंथों में नूरजमाल, नूर बिलंद और नूर अलानूर कहा गया है। वे

'श्री राज जी' एवं 'युगलकिशोर' हैं। 'सिनगार' ग्रंथ में महामति प्राणनाथ ने उस मूलस्वरूप के स्वरूप को वर्णनातीत कहा है। वह सामर्थ्य के बाहर है। किन्तु शब्द देने का प्रयास किया, जिससे उनका घ्यान किया जा सके-

रूह चाहे वर्णन करूं, अखंड स्वरूप की इत।
सुपने में सत सरूप की, किन कहीं न हक सूरत॥

सिनगार, प्र. 1/2

अक्षरातीत के पाँच लक्षण हैं- सद्, चिद्, आनन्द, अनन्त और अद्वैत। सत् से वे सर्वव्यापी हैं। चिद् से वे अपने निवास परमधाम में 'चिद् घन स्वरूप' में विराजमान हैं। वे चैतन्य एवं ज्ञान के भी स्वरूप हैं। तेज राशि हैं। किशोरांग हैं, साथ ही अनादि अखंड सत्ता हैं।

सच्चिदानंद होने के कारण अक्षरातीत 'आनंद' से नित्य अखण्ड आनंद की रसानुभूति कराते हैं। आनंद अंगना श्यामा के साथ आनंदलीला करते है। आनंद शक्तिस्वरूपा श्यामा ही आनंदलीलाओं की क्रेन्द्र बिन्दु हैं। आखिर वे नूरजमाल-अक्षरातीतब्रह्म के अंग का नूर, बड़ी रूह अर्थात् श्रेष्ठांगना, रूह अल्लाह हैं। और सभी ब्रह्मात्माओं की शिरोमणि भी हैं तथा सभी बारह हज़ार ब्रह्मात्माएँ उनके अंग का नूर हैं।

नूर जमाल अंग नूर जो, बड़ी रूह रूहों सिरदार।
बड़ी रूह के अंग का नूर जो, रूहें बुजरग बारे हजार॥

सनंध, प्र. 39/49

परब्रह्म ये लीलाएँ अपनी ब्रह्मांगनाओं को ब्रह्मानंद रसपान कराने के लिए करते है। ब्रहात्माओं को लीला दिखाने के लिए इस संसार में दो बार कृष्ण स्वरूप में और तीसरी बार महामति प्राणनाथ जी के स्वरूप में अपना आवेश प्रदान कर अवतरित हुए।

श्रीमद्भागवद् के 'उत्तम पुरुष' भी वही हैं। तारतमवाणी में उन्हें 'श्री राज जी' संबोधित किया गया है। 'राजते स्वयं प्रकाशते यः राजः'। उत्तम पुरुष परमात्मा परब्रह्म अनादि अक्षरातीत श्री कृष्ण ही हैं। वे इस ब्रह्माण्ड रचना के प्रेरक हैं। अनंत से वे दिव्य पदार्थों से युक्त हैं। वहीं अद्वैत लक्षण से वे एकरस हैं। वे चिन्मय स्वरूप अपनी अनंत शक्तियों से सब कुछ करने में पूर्ण समर्थ हैं।

अक्षरातीत ब्रह्म का निवास परमधाम (अर्शे अज़ीम) है। उसे निजधाम

भी कहा जाता है। वहाँ रत्नजड़ित हेम सिंहासन पर श्री राज-श्यामा युगल स्वरूप में विराजमान हैं। निर्मल चित्त होने पर आंतरिक दृष्टि खुलती है। साधक अपने एकनिष्ठ प्रेम के बल पर वहाँ प्रवेश पा सकता है। संभवतः इसका उद्देश्य इस जगत में विस्मृत ब्रह्मात्माओं को अपने मूलाधार की स्मृति दिलाना है। गोलोक-अखण्ड वृन्दावन से अक्षरधाम से भी परे आगे परमधाम है। वहाँ की सभी वस्तुओं की शोभा अवर्णनीय है।-

बड़ा चौक सोभा लेत है, बड़े दरवाजे अन्दर॥
बड़ी बैठक इत गिरोह की, आंगू रसोई के मंदर॥

परिक्रमा, प्र. 31/1

वाणी संग्रह 'सागर' में आत्मा-परमात्मा (अक्षरातीत) के मिलन का प्रभावी, स्पष्ट एवं जीवंत वर्णन है। इस सागर के अर्थात महासागर के अष्ट सागरों (अध्यायों या प्रकरणों) में नूर, सौंदर्य-सज्जा, युगलकिशोर के श्रृंगार, प्रेम, ज्ञान, संबंध, दया की पावन जल की लहरें हैं।

नूर सागर में स्तम्भों, चबूतरों, सोपान, गलीचा, सिंहासन आदि का विस्तृत वर्णन है। ये सभी नूर (प्रकाश किरणों) से दीप्त हैं। यहाँ मूल मिलावा की बैठक है, वहाँ परमब्रह्म की ब्रह्मात्माएँ भी उनकी नूर स्वरूप हैं जहाँ नूर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।-

रूहें मिलावा नूर में, बीच कठेड़ा नूर भर।
थंभ तकिए सब नूर के, कुछ और न नूर बिगर।
ये खिलवत सब नूर की, नूर आला नूर मकान।
बिछौना सब नूर का, सब नूरै का सामान॥

सागर, प्र. 1/44,46

मूल मिलावा को कतेब ग्रंथों में खिलवत कहा गया है। इसका अर्थ है आत्मा परमात्मा का मिलन स्थल अथवा अनन्य अद्वैत मिलन स्थली। परमधाम में खिलवत खाना है। वहीं भव्य दिव्य मूल मिलावा बैठक है। 'खिलवतवाणी' संग्रह में यही आदर्श प्रेम भाव आधारित वार्ता संग्रहीत है। इसी आदर्श प्रेम से साधना की उद्देश्यपूर्ति होती है-

इसक खेल हांसी इसक, इसक फरामोश मोमिन।
इसकै रसूल होय आइया, वास्ते इसक न पाया किन॥

खिलवत 12/43

मूल मिलावा बैठक की शोभा वर्णन से परे हैं। वहां बारह हज़ार ब्रह्मात्माएँ युगल स्वरूप को घेर कर विद्यमान हैं जिनमें असीम उत्साह और उमंग है। इन ब्रह्मांगनाओं का अस्तित्व परब्रह्म से अलग नहीं है। यह पूर्णता प्रदान करने वाली लीला है। सुख-दुख तथा अभाव से अनुभवविहीन ब्रह्मात्माओं को पूर्णता प्रदान करने के लिए ही इस अभावमय जगत की रचना की गई। नूर सागर की शोभा महामति के शब्दों में—

इक सागर कह्यो जोत को, दूजो सोभा सुंदर।
कै तरंग उठे इन रंगों के, खोल देखो आंख अंदर॥

मूल मिलावा में सुंदरसाथ का मूल अथवा अद्वैत से मिलन है। उसमें किसी तरह का द्वैत भाव नहीं आता। वहाँ समस्त ब्रह्मात्माएँ समान रूप से ब्रह्मानंद का रसास्वादन करती हैं।

महामति ने श्री राज जी के श्रृंगार का विस्तृत वर्णन किया है। राज जी के अंग-प्रत्यंग से ज्योति प्रस्फुटित हो रही है। श्री राज जी को उन्होंने वेदों मे उल्लेखित 'पूर्णमदः पूर्णमिदं', पुराणों के 'चिदादित्यमं किशोरांग' एवं गीता के 'पुरुष सः पर पार्थ' रूपों में अभिव्यक्त किया है। श्रृंगारसागर में श्याम और श्यामा के सोलहश्रृंगार अलंकृत सौंदर्य का मधुरिम वर्णन है। श्री राज-श्यामा अद्वैतस्वरूपी हैं। उनका सौंदर्य अलौकिक है-

शोभा स्यामाजीय की, निपट अतिसुंदर।
अंतरपट खोल देखिए, दोऊ आवत एक नज़र॥

सागर 6/31

इश्क़ के सागर की गहराई अथाह है। और यह इश्क का सागर तारतम ज्ञान रूपी रत्नों का भण्डार है। इलम अर्थात् ज्ञान का महत्त्व यह है कि इसी ज्ञान के द्वारा सर्वप्रथम परब्रह्म के तीनों स्वरूपों का ज्ञान एवं परमधाम के सोपानों का पूर्ण परिचय स्पष्ट होता है।

निस्बत अथवा संबंध भी आत्मा और परमात्मा के संबंधों को प्रकट करनेवाला है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी महामति को सर्वमंगलमय तारतम ज्ञान, अक्षरातीत परब्रह्म के मेहेर रूप में प्राप्त हुआ था।

मोहे इलम दिया हक ने, सो इनो को देसी इमाम।
आखर बड़ाई इनो की, कहे मुसाफ हदीस तमाम॥

सिनगार, प्र. 1/33

अध्यात्मिक अनुभूति के उद्गाता महामति प्रणनाथ की वाणी परब्रह्म और परमधाम का वर्णन करने में पूर्ण समर्थ है। मूल मिलावा का खिलवत परिक्रमा, सागर, सिनगार आदि ग्रंथ में महामति ने सविस्तार वर्णन किया है।

परमधाम

अक्षरातीत ब्रह्मस्वामी के निवास स्थान को परमधाम कहा गया है। परमधाम के सामने नश्वर जगत उसी तरह है जैसे वास्तविकता के सामने स्वप्न। स्वप्न नींद में आते हैं और नींद टूटने पर उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। स्वप्न नश्वर जगत है तो अज्ञान और भ्रम निद्रा है। इससे जागने के लिए तारतम ज्ञान आवश्यक है।

महामति स्वरूपा इन्द्रावती ने कहा है कि यह ज्ञान, यह सूझ मेरे गुरुवर या रहबर श्री देवचन्द्र जी ने मुझे दी है तथा ब्रह्मात्माओं और मोमिनों को जगाने का दायितव भी मुझे सौंपा है-

इमामे मोहे सब दियो, राख्यो न कुछ बीच।

यह जो अर्शे अज़ीम या परमधाम की बात है उसे मुझे इसी नश्वर जगत में कहना है। निजधाम (परमधाम) का कण-कण प्रियतम के प्रेम का स्वरूप है। धरा-गगन, चेतन-अचेतन आदि सभी प्रियतम के प्रेम से ओतप्रोत हैं-

एक जरा इन जिमि का, सो सब इस्कै की सूरत।
आसमान जिमि जड़ चेतन, पेहेचान इस्क दोऊ इत॥

परिक्रमा, प्र. 28/19

परमधाम तो वर्णनातीत है। फिर भी इस जगत का उदाहरण लेकर उसे समझना पड़ रहा है। इंद्रावती को इसका दुख है। किन्तु संतोष भी है क्योंकि इससे जब एक प्रकार का भावनात्मक मिलन हो जाता है तब कार्य-व्यवहार में ब्रह्मात्मा के लक्षण प्रकट हो जाते हैं । इस स्वप्नवत् संसार में रहते हुए भी अखण्ड परमधाम के स्वामी के नूर जमाल से संयोग-सुख लिया जाता है-

इन केहे से ऐसा होत है, पीछे आवत फेल हाल।
तो ख्वाब में कायम अरस का, सुख लीजे नूर जमाल॥

परिक्रमा, प्र. 32/70

अद्वैत भूमि के अखण्ड परमधाम का वर्णन करते हुए कहा गया कि मानो वह एक ही हीरे का एक असीम विशाल महल हो। उसमें कई प्रकार के रत्न जड़े हों और वह कुन्दन से शोभायमान हो रहे हैं।

ज्यों जड़ाव एक मोहोल है, जवेर जड़े कै संग।
कुंदन मांहें सोभित, नये नये अनेक रंग॥

परिक्रमा, प्र. 32/15

वहां सभी रंग यथोचित प्रयोग किए गए हैं, उसे किसी ने बनाया-सँवारा नहीं है और कुछ भी पुराना नहीं है-

जित जैसा रंग चाहिए, तहां तैसा ही देखत।
ना समारे नए किने, ना पुराने पेखत॥

परिक्रमा, प्र. 32/19

वहां की विशेषताओं और सुगंध का पार पाना कठिन है। वहां अनगिनत पक्षी मीठी वाणी बोलते रहते है जिनके पंखों पर सुंदर चित्रांकन भी है-

पार न खूबी खुसबोय को, पार न पसू पंखियन।
मीठी बानी अति बोलत, अंग सोभित चित्रामन॥

परिक्रमा, प्र. 32/33

कुंड, सरोवर, यमुना नदी, बड़े-बड़े महल सभी परब्रह्म के नूर स्वरूप हैं जिनका वर्णन कर सकना सम्भव नहीं है-

इत जरा छोटा बड़ा नूर का, या होज जोय मोहलात।
अरस जरे की इन जुबाँ, सिफत न कही जात॥

परिक्रमा, प्र. 32/42

परमधाम में अनेक हवेलियां हैं। जिनकी विशालता अनन्य है। वहाँ कहीं सूनापन नहीं है। धाम धनी का वर्णन महामति ने पच्चीस पहलुओं या पक्षों में किया है। धाम में श्री राज, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं का रंगमहल है। रंगमहल की दसों मंजिलें एक समान हैं किन्तु हर मंज़िल में लीला हेतु बनावट में परिवर्तन हो जाता है।

प्रथम मंजिल में वह स्थान है जहां बैठ कर ब्रह्मात्माएँ लीला देख रही हैं। यहीं ब्रह्म, श्यामा जी तथा ब्रह्मात्माओं के परिसंवाद होते रहते हैं। इस विशाल गोल बैठक को ही मूल मिलावा का नाम दिया गया है।

इसका ऐश्वर्य अपरंपार है। द्वितीय मंजिल में अथाह गहरी झील

हैं। जिसमें झीलना श्रृंगार और भुलवनी-भूल भुलैयां की लीला होती है।

तीसरी मंज़िल में प्रात: पक्षियों का कलरव अनुगुंजित होता है। वहीं परब्रह्म अक्षरब्रह्म का नमन स्वीकारते हैं। चौथी मंज़िल नृत्यगृह है। जहां नृत्य प्रवीणा नवरंगबाई के साथ स्वयं ब्रह्म एवं ब्रह्मांगनाएं तक नृत्य करने लगते हैं। पांचवी मंजिल में श्री राज जी आत्मांगनाओं के साथ लीला-विहार करते है। छठवीं, सातवीं, आठवीं, नवमी मंजिल में क्रमशः सुखपाल विमानों के उतरने, संगीतमय झूलों एवं परमधाम शोभा दर्शन की व्यवस्था है। दसवीं मंज़िल आकाशीय उपवनों, मंदिरों आदि से युक्त है, जहाँ की शोभा अपूर्व है। इनके अतिरिक्त अनेक स्तम्भ, गगन विचुम्बित महल, सरोवर, प्रपात आदि सब कुछ हैं।

मूल मिलावा बैठक की शोभा का वर्णन करते हुए महामति कहते हैं-

चौंसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा विराजत।
तले गिलम ऊपर चंद्रवा, चौंसठ थभों भर इत॥
किरना उठे नई-नई, सिंहासन की जोत।
कै तरंग इन जोत में, नूर रंगों से होत॥

सागर, प्र. 7/4,26

कतेब ग्रंथसार 'कुरान' में भी परमधाम के अनेक संकेत हैं। महामति उनका स्पष्ट रूप से उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'हम पाती पढ़ी महंमद की, सब पाई हकोकत धाम।' अर्थात् परब्रह्म स्वामी ने रसूल मुहम्मद के हाथ हमारे लिए जो पत्र-संदेश भेजा, उसमें हमें परमधाम की सत्य लीला के अनेक संकेत प्राप्त हुए हैं।

अर्शे अज़ीम परमधाम की यमुना नदी को जोय कहा गया है। उसके किनारों पर जरी याकूत (लाल पत्थर) के अमूल्य नगीने जड़े हैं। परमधाम में नगों की शोभा से झिलमिलाते अनेक सरोवर हैं। जिनके किनारों पर भी याकूत एवं रतन जड़े हैं। जोय का जल दूध के समान धवल है और रेत श्वेत मुक्ताओं की भांति है। मुहम्मद का कथन महामति के शब्दों में-

जमुना जरी किनार पर, कै देहुरियां तालाव।
भांत-भांत रंग झलकत, यों कै जबेर जड़ाव।।
नीर उजले खीर से, खुसबोय जिमि रेत सेत।
पसू कै विध खेलहीं, यों कागद निशानी देत॥

सनंध, प्र. 41/6, 7

परमधाम के इस वर्णन को कतिपय विद्वान कल्पना मात्र मानते हैं। किन्तु यह तो भावनात्मक साधना का चरमोत्कर्ष प्रदाता है। यह आत्मा को दिव्य प्रकाश प्रदान करता है। इससे अपरिमित सुखानुभूति होती है। महामति ने कहा भी है–

इन कहे होत है रोसनी, रूह पावत है सुख।
और इसक अंग उपजत, हक सों होत सन्मुख॥

महामति ने अपने सम्पूर्ण वाङ्मय में दो विपरीत संस्कृतियों के साम्य को अकाट्य प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया है।

त्रिधा लीला

कुरान में निहित परमधाम के संकेतों के विषय में अवगत कराती हुई सखी शिरोमणि इन्द्रावती (महामति प्राणनाथ) ने तीनों लीलाओं के संबंध में भी वेद और कतेब दोनों ग्रंथों में प्राप्त संकेतों को परिलक्षित किया है। उनका कथन है–

तीन तकरार कहे रात में, तिन तीनों के बयान।
ब्रज, रास और जागनी, एकै विध लिखे निसान॥
धाम रास और ब्रज की, कही सुन्दरबाईएँ जेह।
ए तो कागद नेक देखिया, देत साख सब एह॥

सनंध, प्र. 41/12,14

कुरान में लैल-तुल-क़द्र का ज़िक्र तीन बार आया है। इसका अभिप्राय यह है कि क़द्र की यह रात्रि तीन खण्डों में पूरी हुई–ब्रजलीला, रासलीला और अब सम्पन्न होनेवाली जागनी लीला। इसमें जागनी लीला के संबंध में अनेक संकेत प्राप्त होते हैं। महामति ने कहा है कि सुंदरबाई के अवतार निजानंद स्वामी देवचन्द्र जी ने परमधाम ब्रज और रासलीला के विषय में जो कुछ बताया था, कुरान के संदेशपत्र को देखने पर उन बातों के संबंध में हमें संकेत मिल गए।

लीला तो लीला ही होती है किन्तु उसमें भी कुछ उद्देश्य निहित रहता हैं। महामति ने इनका उद्देश्य अथवा कारण यह कहा है कि अक्षरातीत ब्रह्म ने अक्षरब्रह्म को अपनी आनन्द लीला का और ब्रह्मात्माओं

को अक्षरब्रह्म की नश्वर लीलाओं का ज्ञान करवाने के लिए इन लीलाओं का आयोजन किया था।

ब्रज लीला

इनमें प्रथम लीला ब्रज लीला है। यह पूर्ण निद्रा की लीला है। इसका आयोजन कालमाया के ब्रह्माण्ड में हुआ था जिसे अक्षरब्रह्म द्वारा रचा गया था। परमात्मा ने अपने अंश द्वारा ब्रज में श्री कृष्ण का रूप धारण किया था जिसमें अक्षरातीत ब्रह्म का आवेश (तेज) था। ब्रह्मात्माओं ने इस लीला का आनंदानुभव परब्रह्म के साथ रह कर किया था। इस लीला में श्री कृष्ण की बालसुलभ मनोहारी लीलाएँ हैं। वहीं आगे चल कर गोपिकाओं एवं श्री कृष्ण की माधुर्यमयी लीलाएँ भी हैं।

कतेब ग्रंथों में भी ब्रज लीला का विस्तृत उल्लेख है। कुरान के अनुसार क़यामत के समय खुदा के हुक्म के कारण रसूल ने जिब्रील की सहायता से टापू में आए अपने लोगों को आत्मिक आहार प्रदान किया था। इसी प्रथम लीला को ब्रज में गोपियों की लीला अथवा हूद पैग़म्बर के समय की 'शुद्ध आत्माओं का सुख' कहा गया है-

मेहेतरों की कौम में, जित हूद कील सिरदार।
जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराइलें आहार॥
खेल हुआ जो लैल में, तकरार को अव्वल।
उतरी रूहें फिरस्तें, अरस के असल॥

खुलासा, प्र. 13/6,7

यह लीला ब्रह्मात्माओं और परमात्मा के अनन्य प्रेम की परिचायक है।

रास लीला

दूसरी लीला रास लीला है जो वृन्दावन में सम्पन्न हुई। इस जगत से वृन्दावन का रास सर्वथा अलग था। वृन्दावन में अक्षरातीत श्री कृष्ण और गोपिकाओं के रूप में ब्रह्मात्माओं ने आनंदपूर्वक क्रीड़ाविहार किया। ब्रज लीला के पश्चात अर्द्धनिद्रा दूर करके रास का सुख स्वप्नवस्था में दिया गया था। जबकि जागनी लीला का सुख पूर्ण जाग्रत अवस्था की लीला है-'नींद एक, आधी दूसरी, तीसरी में सावचेत।' यह दूसरी लीला

ही शारदीय लीला है। शरद पूर्णिमा की रात्रि थी। समस्त कलाओं से युक्त चन्द्रमा की धवल, अलौकिक ज्योत्सना शोभायमान थी। इस लीला के लिए योगमाया ने दूसरे ब्रह्माण्ड की रचना की थी। इसका संकेत कुरान में भी है। नूह तोफ़ान के समय नूह की कश्ती में सवार होना और बाग़ में उतर जाना वर्णित है। इस लीला का भी भव्य-दिव्य विस्तृत वर्णन महामति वाणी में मिलता है।

जागनी लीला

तीसरी लीला नींद, फरामोशी में पड़ी आत्माओं को तारतम ज्ञान के दिव्य आलोक द्वारा जगा कर परमधाम में ले जाना 'जागनी लीला' है। सखी इन्द्रावती के शब्दों में जागनी लीला का उद्देश्य है-

अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊँ सब विकार।
रंगे रास रमाय के, सुफल करूँ अवतार॥

कलस हिन्दी, प्र. 23/3

अर्थात् अब मैं युक्तिपूर्ण ढंग से जगाकर, हे सुंदरसाथ! तुम्हारे मनोविकारों को दूर कर आनंदमय जागनीरास की लीला में रमण करवाऊँगी। इस प्रकार संसार में आपका जन्म सफल कर दूंगी।

इमाम मेहदी प्राणनाथ जी के अवतरण की सार्थकता मात्र ब्रह्मात्माओं को जाग्रत करना ही नहीं था बल्कि सभी के संदेहों का निराकरण करना था, साथ ही अनास्था को आस्था में बदल देना भी था।

सब संसे को कियो निरवार। कोई संसे न रह्या बार के पार॥
रोसन करूँ लेऊँ हुक्म बजाय। ब्रह्म सृष्टि और दुनिया लेऊं जगाय॥

प्रकाश हिन्दुस्तानी, प्र. 37/98

यही तो जागनी अर्थात् समूह जागरण का संकल्प था। संकल्प पूर्ण होने पर जागनी के अनुपम आलोक में सभी एक हो गए। सभी प्रकार की शंकाएँ समाप्त हो गई। जागनी परमात्मा के अनुग्रह और आत्म तत्त्व के उत्कर्ष की लीला है।

धार्मिक समन्वय

नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम।
सब में उमत और दुनिया, सोई खुदा सोई ब्रह्म॥

महामति ने कुरान को एक और भागवत का परब्रह्म को दूसरा फरमान(संदेश) कहते हुए दोनों की एक रूपता को सप्रमाण व्याख्यायित किया है। तीनों तरह की सृष्टि की एकरूपता को रूपायित करते हुए कहा है कि कुरान के पहले पारे में तीन तरह की उमत (सृष्टि) का वर्णन है। वेदों में भी तीन प्रकार की सृष्टि कही गई है। वेद पक्षीय प्रथम सृष्टि को कतेब में खासुलख़ास की संज्ञा दी गई है। इसमें अक्षरातीत परमात्मा से प्रेम करने वाले ब्रह्ममुनियों(मोमिनों)का समुदाय है। इनका मूलस्थान परमधाम (अर्शे अज़ीम) है। इन्हें ब्रह्म की पूर्ण पहचान रहती है। लाहूत (अखण्ड धाम) में इनकी प्रशंसा होती है। ये ब्रह्म के अद्वैत स्वरूप में उनसे अभिन्न है।

ये जो गिरो अरस अजीम की, तिन पे हकीकत मारफत।
बड़ी बड़ाई रूहन की, बीच लाहूत बका वाहेदत॥

खुलासा, प्र.1/10

दूसरी सृष्टि को कतेब में 'खास खलक' कहा गया है, यह ईश्वरीय सृष्टि है जो परमात्मा के नूर (तेज) से प्रकट हुई है। यही अक्षरधाम में अवतरित फरिश्तों का समूह है। यह परब्रह्म की उपासक है-

नूर मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फिरस्तन।
कायम वतन से उतरी, सो पोहोंचे न हकीकत बिन॥

खुलासा, प्र.1/11

महामति ने इस दूसरी सृष्टि के विषय में बताया है कि इनकी कृपा से समस्त संसार के लोग अखण्ड मुक्तिधामों में अखण्ड जीवन प्राप्त करेंगे-

और गिरो फिरस्तन की, जिनका कायम वतन।
दुनिया कायम होयसी, सो बरकत गिरोह इन॥

खुलासा, प्र. 1/59

तीसरी सृष्टि जीव है, जिसे 'आम ख़लक' कहा गया है, जो मनु और शतरूपा से उत्पन्न हुई। महामति ने कुरान के आठवें सिपारे का उल्लेख किया है जिसमें इस सृष्टि को आदम और हव्वा की उत्पति बताया गया है। इसी को माया अथवा इबलीस की सृष्टि भी कहा गया है। इनके मन पर इबलीस फ़रिश्तों, मज़ारों,भूत-प्रेतों और शैतान का प्रभाव रहता है। इसीलिये ये परब्रह्म के प्राणनाथ स्वरूप को नहीं पहचान सके। ये अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए देवी-देवताओं की उपासना में लगे रहते हैं-

असल दुनी की ए भई, जो लिखी माहें फुरमान।
पातसाही अबलीस दिल पर, करत है सैतान॥

खुलासा, प्र. 1/21

फ़रिश्तों और देवी-देवताओं में समानता

वेदों में वर्णित देवी-देवताओं और कुरान में वर्णित फ़रिश्तों की समानता को भी महामति ने साक्ष्य के आधार पर प्रस्तुत किया है। अक्षरब्रह्म की ईश्वरीय सृष्टि के लिय कतेब में 'फ़रिश्ते' और पुराणों में 'देव' की संज्ञा दी गयी। मेकाइल, अज़ाजील, इज़राइल और अस्राफील- चार बड़े फ़रिश्ते हैं। मेकाइल हिन्दू धर्म ग्रंथों के ब्रह्मा हैं, अज़ाजील विष्णु हैं, इज़राइल रुद्र या शिव हैं तथा अस्राफील अक्षरब्रह्म के ज्ञान का फ़रिश्ता हैं-

विस्नु अज़ाजील फिरस्ता, ब्रह्मा मैकाइल।
जबराइल जोस धनीय का, रुद्र तामस अजराइल॥

खुलासा, प्र. 12/45

कतेब में बैकुण्ठ को मलकूत, मृत्युलोक को नासूत, स्वर्ग को बहिश्त और यमुना नदी को जोय नाम दिया गया है। इसी तरह कतेब में चौदह लोकों को चौदह तबक, नंद जी को हूद, इंद्रकोप को हूद तोफ़ान, महाप्रलय

को नूह तोफ़ान, निराकार को हवा सुरैया, देवचन्द्र को ईसा रूहअल्लाह कहा गया है। इस्लाम के शिया ग्रंथों के चार आसमान, नासूत, मलकूत, जबरूत और लाहूत हिन्दू ग्रंथों के मृत्युलोक, बैकुण्ठ, अक्षरधाम तथा परमधाम हैं। अलग-अलग नाम देने के कारण ही उलझनें पैदा हो गयीं। महामति ने इसीलिए सप्रमाण इसे सुलझाया ताकि सब समझ सकें-

ताथे हुई बड़ी उलझन, सो सुरझाऊँ दोय।
नाम निसान जाहेर करूँ, ज्यों समझे सब कोय॥

खुलासा, प्र. 12/43

कथानकों में साम्य

श्रीमद्भागवत और कुरान के कथानकों की समानता को महामति ने बड़ी सहजता से स्पष्ट किया है। महामति कहते हैं कि जिस तरह राजा कंस ने श्री कृष्ण के माता-पिता देवकी और वासुदेव को कारागार में डाल रखा था, राजमद में मत्त होकर अपने छः भानजों को मार डाला था उसी प्रकार नूह पैग़म्बर को भी निर्दयी राजा ने चालीस वर्ष तक बंधन में रखकर यातनाएँ दीं। उस क्रूर ने उनके बेटों को मार डाला फिर भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ -

कंसे काला-गृह में, किए वसुदेव देवकी बंध।
भानजे मारे आपने, ऐसा राजमद अंध॥
नूह काफर की बंध में, रहे साल चालीस।
बेटे मारे कै दुख दिए, तो भी काफरें न छोड़ी रीस॥

खुलासा, प्र. 13/1,2

भगवान विष्णु की सलाह से वासुदेव जी ने नवजात शिशु श्री कृष्ण को नंद जी के घर पहुंचा दिया था। कतेब में लिखा है कि फ़रिश्ते के कहने से नूह साम अर्थात् श्याम को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया था।

एक अन्य कथानक है भागवत में 'इन्द्रकोप' का। इन्द्र श्री कृष्ण की प्रेरणा से अपनी पूजा बंद होने के कारण रुष्ट हो गया था। क्रोध के वशीभूत होकर उसने सात रात आठ दिन तक प्रलयंकारी वर्षा की। श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाकर गोकुल को बचा लिया था। ऐसी घटना हूद पैग़म्बर के टापू में घटी। वहाँ सात रात आठ दिन तक भयंकर तूफान

आया तब पैग़म्बर ने कोहेतूर पर्वत की ओट दे कर रूहों को बचा लिया। इन कथानकों को तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर विदित होता है कि नंद जी को ही पैग़म्बर हूद बताया गया है। ब्रज को ही टापू कहा गया है और गोवर्धन पर्वत कोहेतूर पर्वत है।

वाणी संग्रह 'खुलासा' में इसी प्रकार अनेक कथानकों का समीकरण उजागर है। इन समीकरणों से यह स्पष्ट होता है कि सत्य सनातन धर्म और हकीकी दीन इस्लाम एक परब्रह्म का बोध कराते हैं। स्वार्थी तत्वों ने उनको खण्ड-खण्ड में बाँट लिया है। मुसलमान हिन्दुओं को काफ़िर कहते है और हिन्दू उन्हें मलेच्छ या असुर कहते हैं किन्तु कुरान के गूढ़ अर्थ स्पष्ट हो जाने से सच्चे लोगों के मन से दुविधा दूर हो गई, मन निर्मल हो गया-

कहे काफर असुर एक-दूसरे, करत लड़ाई मिल।
फुरमान जब रोसन भया, तब पाक हुए सब दिल॥

खुलासा, प्र. 12/100

भविष्यवाणियों में समानता

वेद और कतेब में भविष्यवाणियों का उल्लेख है जिनके अनुसार निष्कलंक बुध महामति (इमाम मेहदी) ने एक दीन की स्थापना के लिए कथानकों एवं घोषित भविष्यवाणियों की समानताओं को वाणी फलक पर सफलता एवं स्पष्टतापूर्वक चित्रित किया। उन्हीं भविष्यवाणियों की पूर्त्ति के लिए समस्त प्राणियों को जागनी के प्रभामण्डल में लाकर जगाने का आह्वान किया। बुध जी अर्थात् इमाम मेहदी द्वारा प्रतिष्ठित धर्म में अथवा सिद्धांतों में सभी ने अपने-अपने धर्म को शुद्ध रूप में देखा-

जाको दिल जिन भांत सों, तासों मिले तिन विध।
मन चाह्या सरूप होय के, कारज किए सब सिध॥

खुलासा 13/94

वेद ग्रंथों में अंतिम युग में कल्कि अवतार होने की भविष्यवाणी है। कुरान शरीफ में अंतिम फ़रिश्ता इस्राफील का उल्लेख किया गया है। इक्तीसवें सिपारे में यह भी उल्लेख है कि कियामत के समय वह मधुर स्वर में कुरान की आयतों का गान करेगा। प्रकाश, कलश श्री रास के रूप में जम्बूर इंजील का भी पुनः गायन हुआ। यहूदी ग्रंथ में

भी भविष्यवाणी है कि मूसा के हाथों सभी की मुक्ति होगी। बाईबिल में भविष्यवाणी है कि ईसा रूह अल्लाह या आख़री ज़माने का खाविंद पर्दे में आएगा। हिन्दू धर्म में 'अवतरित' होना ही यह पर्दा है। इसी से वे पहचान नहीं पाए–

परदा लिख्या मुँह पर, वासते आवने हिन्दुओं माहें।
जाहेर परस्त जो आरब, सो इसारत समझे नाहें॥

खुलासा, प्र. 14/17

कुरान के पाँचवे सिपारे में इमाम मेहदी के अवतरण की भविष्यवाणी संकेत रूप में की गई है। वहीं हिन्दू धर्म ग्रंथों में भी कहा गया है कि निष्कलंक बुध–कल्कि अवतार के रूप में प्रकट होंगे–

पाँचवें सिपारे एह बयान, ना मानो तो जाये देखो कुरान।
और हिन्दवी किताबों में यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही॥

कियामतनामा बड़ा 1/25

कतेव ग्रंथों में यह भी लिखा है कि आख़िरत अथवा कलियुग के अंतिम चरण में उलटी नहरें चलेंगी। जिस समय विभिन्न पंथ–मार्गों के प्रचलन से सत्य दूर होता जा रहा था तब ईसा रूहअल्लाह देवचन्द्र जी और इमाम मेहदी स्वरूप श्री प्राणनाथ ने अरब देशों के बदले हिन्दुस्तान में प्रकट हो कर तारतम ज्ञान द्वारा स्वामी के नूर की वर्षा की–

नेहेरें चलसी उलटी, किये नजीकी दूर।
ईसा मेहेदी मुहम्मद, आये हिन्द में बरस्या नूर॥

खुलासा 15/19

महामति प्राणनाथ ने धर्मग्रंथों के गुह्य भेद और क़ुरान में अल्लाह के वचनों को रूह अल्लाह प्रदत्त तारतम वाणी से स्पष्ट कर क़ुरान की भविष्यवाणीयों और वायदों को पूरा किया–

मायने इन मुसाफ़ के, कलाम अल्ला का कौल।
ईसे के इलम से, दई इसारतें सब खोल॥

खुलासा 15/24

कुरान के गूढ़ अथों की व्याख्या

महामति ने जहाँ वेद, कतेब और हेमेटिक–सेमेटिक धर्म चिन्तन

प्रणालियों में व्याप्त अनेक गाथाओं के समानान्तर पक्षों को स्पष्ट किया, वहीं मिथकों, दृष्टांतों आदि के अभिप्रेत अर्थ एवं आशय को भी उजागर किया। यही विश्व मानवतावाद की आधारशिला है एवं यही आस्थाओं की सूत्रबद्धता है।

कुरान में इस्राफील फ़रिश्ता का उल्लेख है कि उसके नरसिंघा फूंकते ही पहाड़ रुई की भांति उड़ जाएंगे। महामति ने इसके बातिन गूढ़ अर्थ को कितना सुबोध रूप में सहजता के साथ स्पष्ट किया है। थोथी मान्यताएँ और धर्म के नाम पर फैले आंडम्बर पर्वत के समान नष्ट हो जाएंगे क्योंकि इस्राफील ज्ञान का फ़रिश्ता है। क़यामत के वर्तमान समय में वह अक्षरब्रह्म की मनीषा के स्वरूप महामति में विराज कर कुरान और पुराण के रहस्यों को उद्घाटित कर रहा है ताकि इन रहस्यों के खुल जाने से द्वैत अथवा दुई का अंत हो जाएगा। उदाहरण स्वरूप प्रलय के निशान का अभिप्राय एवं अर्थ उजागर है। कुरान और बाईबिल में लिखा है कि क़यामत या न्याय के दिन सब कुछ मिट जाएगा। पुनः ईश्वरीय राज्य की स्थापना होगी। उसमें क़यामत के समय प्रकट होनेवाले सात निशान यानी संकेत भी दिए गए हैं–

पहला संकेत यह है कि कब्र से मुर्दे उठ खड़े होंगे। महामति ने इसका अभिप्राय स्पष्ट किया है कि शरीर रूपी मिट्टी की कब्र में मृतक समान पड़ी आत्माएँ जाग्रत होंगी–

मुर्दे क्यों कर उठसी, दुनिया चौदे तबक।
पढ़े वेद कतेब को, पर गई न काहू सक॥

खुलासा 10/23

दूसरा संकेत है कि दाभ-तुल-अर्ज नामक एक अजीब-सा प्राणी पैदा होगा। इमाम मेहेदी उसका संहार करेंगे। महामति ने मानव की पशुवृत्ति को दाभ-तुल-अर्ज बताते हुए कहा है कि–

ना पेहेचान दज्जाल की, ना दाभ तल अरज।
ए सुध काहू ना परी, क्यों मगरब सूरज॥

खुलासा 10/21

अर्थात् कुरान को बार-बार पढ़ने पर भी अंहकाररूपी ऊँचे गधे पर सवार मन रूपी दज्जाल को न पहचान पाए। पाशविक वृत्तियों वाले मानव दाभ-तुल-अर्ज़ को किसी ने नहीं देखा।

तीसरा संकेत है कि अस्राफील या इस्राफील सूर फूँकेगा। इसका अभिप्राय है कि महामति में विराज कर इस्राफील ने सत्य धर्म का बिगुल बजाया।

चौथा संकेत है कि काना दज्जाल गधे पर सवार होगा, इमाम मेहेदी उसका संहार करेंगे। महामति ने इसका अभिप्रेत अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है कि परमात्मा की ओर रहनेवाली दज्जाल की आँख अंधी है। और मनुष्यों को गुमराह करनेवाली दूसरी आंख ठीक है।

पाँचवा संकेत है कि पश्चिम में सूर्य उदय होगा। उसका प्रकाश ढंक जाएगा। सूर्य रूपी कुरान का उदय हुआ किन्तु शराअ (कर्मकाण्डों) की प्रधानता और ज़ोर-ज़ुल्म, लड़ाई-झगड़ों और अर्थ का अनर्थ करने के कारण उसका आंतरिक आलोक भली-भांति आलोकित न हो पाया-यही अंधेरा सूर्य है।

छठवाँ संकेत है कि पूर्व में सत्य धर्म का झंडा गाड़ा जाएगा। पूर्व अर्थात् भारत में इमाम मेहेदी श्री प्राणनाथ ने सत्य का परचम लहराया।

सातवाँ संकेत है कि आजूज-माजूज प्रकट होंगे जो अष्ट धातु की दीवार को निरन्तर चाटा करेंगे। इस गूढ़ संकेत का अभिप्राय है कि आजूज-माजूज दिन और रात हैं जो पाँच तत्त्व और तीन गुणों से निर्मित अष्टधातु की दीवार जो मानव तन, पिण्ड या ब्रह्माण्ड है, को तोड़े जा रहे हैं। वे इसे नष्ट कर रहे हैं किन्तु अब वह युग आ गया है कि तारतम ज्ञान के आलोक से काल और मृत्यु का भय दूर हुआ है-

काल याही दिन कहे, सो पोहोंच्या कौल पर आए।
तब पिण्ड और ब्रह्माण्ड को, देत सब उड़ाए॥

खुलासा 15/29

इसी तरह इस्लाम के अनुसार 'बजरख' की अवस्था, ईसाई एवं यहूदी धर्मानुसार 'शयाल' की स्थिति का तात्पर्य स्वप्न देखनेवाले व्यक्ति की स्थिति है। यदि उसकी नींद नहीं टूटती तो सपने में उस पर जो गुजरेगा वह उसके लिये वास्तविक होगा, वह उसे स्वप्न नहीं समझेगा।

इस प्रकार कुरान-हदीसों के अनेक रहस्यमय तथ्यों का गूढ़ार्थ उन्होंने स्पष्ट किया है। 'सनंध' वाणी संग्रह उनका एक अभिनव मूल्यांकन है। कुरान ही नहीं अपितु समस्त वेद-कतेब ग्रंथों के गूढ़ संकेतों तथा निशानों

आदि के आकलन, संयोजन एवं अंतरंग स्रोतों के आधार पर स्पष्टीकरण उनकी अंत:स्फूर्त अनुभूति को अभिव्यक्त करता है-

अंजीर जंबूर तौरेत, चौथी जो फुरमान।
ए मायने मगज गुझ थे, सो जाहेर किए बयान॥
वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारता सब खोल।
मगज मायने जाहेर किये, माहें गुझ हते जो बोल॥

खुलासा 13/97,96

इन सबका एक लक्ष्य है- 'परम सत्ता का साक्षात्कार (मेराज)'। जो सृष्टि के आदि और अंत का केन्द्र बिन्दु है।

परम सत्ता का साक्षात्कार अर्थात् मेराज

'सनंध' के प्रथम प्रकरण से पूर्व लिखी चौपाई में उस रात्रि का वर्णन है जिसमें ब्रह्मसृष्टि सहित ब्रह्मज्ञान का विवरण है। यही कुरान में वर्णित 'शबे-मेराज' 'लैल-तुल-कद्र की रात' है जिसमें रब के साथ रूहें, फ़रिश्ते उतरने की भविष्यवाणी है। इसके बाद 'जागनी लीला' की वह फ़ज्र आई है।

कुरान, हदीसों में मुहम्मद साहब को हुए मेराज के समय में लैल-तुल-कद्र की चर्चा हुई है। इसमें यह कहा गया है कि महिमावान रात्रि में ब्रह्म, ब्रह्मज्ञान और ब्रह्मात्माएँ उतरेंगी। इसके बाद फ़ज्र या भोर के उजाले में सारे जगत को मेराज अथवा प्रभु का साक्षात्कार होगा। स्वयं परब्रह्म ने अपनी आनंद अंगना रूपी रूहअल्लाह श्यामा एवं ब्रह्मात्माओं को वचन दिया था कि मैं अपने प्रिय रसूल के हाथ तुम्हारे लिए आदेश और संदेश भेजूँगा। उन्होंने देवों, अवतारों और फ़रिश्तों को भी ब्रह्मात्माओं की पहचान के लिये गवाह बनाया था ताकि ब्रह्मात्मायें उनके वचनों को भूल न जायें-

और साहेद किये फिरस्ते, जिन जाओ तुम भूल।
फुरमान भेजूँगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल॥

खुलासा प्र. 3/5

मुहम्मद साहब को जितने क्षणांश में मेराज हुआ उस अवधि को महामति ने इन शब्दों में व्यक्त किया है-

म्याराज हुआ महंमद पर, तो लों हलता है उजू जल।
बैठक गरमी ना टरी, बेर न भई एक पल॥

खुलासा प्र. 3/6

अर्थात् मुहम्मद साहब को जितनी देर मेराज हुआ उतने समय तक बिस्तर से उनके उठ जाने की गरमी बनी थी। वजू करने के जल का भी हिलना बंद नहीं हुआ था। एक पल की देर न हुई, क्षण भर में उस मेराज को लक्ष्य अथवा नमूना बनाकर परब्रह्म ने ब्रह्मात्माओं के अवतरण की तीनों लीलाओं का वर्णन मुहम्मद साहब के मुख से करवा दिया। रसूल साहब जब मेराज से लौटे तो उन्होंने बताया कि मैंने हक की शक्ल अमरद सूरत (चिर किशोर रूप) देखी है। अपनी उमत मोमिन आत्माओं के समुदाय के लिए उनसे चर्चा भी की है-

पीछे आये रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत।
बोहोत करी रदबदलें, वास्ते सब उमत॥

खुलासा 7/5

इसी संदर्भ में उन्होंने यह भी कहा है कि सपने के समान धरती पर मैंने कुरान के द्वारा खुदा के अखण्ड तेज का प्रकाश फैलाया।

हक की सूरत अथवा परब्रह्म के स्वरूप को दर्शाती एवं साकार को प्रतिष्ठित करती महामति की वाणी उनकी महान दिव्यानुभूति की परिचायक हैं।

परब्रह्म एवं श्यामा से संबंध रखनेवाली ब्रह्मात्माएँ भी इस नश्वर जगत- 'नासूत' में आ कर सब कुछ भूल गईं थी। इसके लिए स्वयं ब्रह्म ने क़ुरान के माध्यम से संदेश भिजवाया-

अरस रूहें भूलीं नासूत में, इन सों हक हादी निस्बत।
ताए लिख भेज्या फुरमान में, अजू सोई है साइत॥

खुलासा, प्र. 3/9

इस पल में मुहम्मद मेहेदीस्वरूप महामति ब्रह्मात्माओं को सम्बोधित करते हैं कि भले ही तुमने क़ुरान को नहीं पढ़ा फिर भी तुम मेरे मित्र हो। इस नश्वर जगत का मोह त्याग कर अखण्ड परमधाम को प्राप्त कर लो, क्योंकि अपना घर तो नूर या अक्षरब्रह्म के पार, परमधाम ही है-

कहे मुहम्मद सुनो मोमनो, ए उमी मेरे यार।
छोड़ दुनी ल्यो अरस को, जो अपना वतन नूर पार॥

खुलासा 3/73

मुहम्मद साहब ने अपने साथियों से कहा कि अन्तिम युग में कुरान को बिना पढ़े लोग उसके गूढ़ार्थ बतायेंगे। वहीं मेरे वास्तविक मित्र हैं।

उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि मोमिनों या ब्रह्ममुनियों का हृदय ही परब्रह्म का धाम है–**'हम बन्दे रूहें इस दरगाह के, कहया दिल अरस मोमन।'**

सनदों, साक्ष्यों, प्रमाणों के आधार पर महामति के मौलिक–चिन्तन एवं अनुभूतियों से परिपूर्ण धार्मिक एकता का यही वह स्वरूप है जहां विश्व की प्रतिनिधि धार्मिक अवधारणाओं का सत्य एकाकार हो गया तथा सर्वधर्म समन्वय, विश्व धर्म का पावन पथ भी प्रशस्त हो गया।

हिन्दू और इस्लाम धर्म का शुद्ध रूप

परब्रह्म हिन्दू धर्मानुसार अद्वैत स्वरूपी है, वही कृष्ण रूप है तथा वेद, उपनिषद् एवं भागवत के नियामक है। सभी अवतारी शक्तियाँ उसी एक परमात्मा का अंश, तेज या स्वरूप होती हैं जो विभिन्न युगों, काल एवं क्षेत्र विशेष में उन परब्रह्म के आदेशानुसार कार्य करती हैं। महामति ने गीता में वर्णित 'प्रथम पुरुष' का क्रमिक विस्तार अक्षर ब्रह्म, नारायण, विष्णु भगवान के दशावतार का होना अभिव्यक्त किया है क्योंकि परमार्थ साधन के लिए यही सुलभ पथ है। महामति ने वैष्णवी सगुण रूप को महत्त्वपूर्ण माना है। सगुण रूप श्री कृष्ण, श्री हरि विष्णु वेद पक्षीय संस्कृति के नियंता हैं। वे अक्षरातीत के जागतिक अंश स्वरूप, माया में उनके बिम्ब हैं। वस्तुतः स्वरूप विस्तार में मूल में एक ही सत्ता है। वे ही कृपालु परमेश्वर हैं। वे ही दाता हैं तथा अखण्ड आनंद के प्रदाता हैं। उनकी उपासना के बिना जो कुछ भी कहा–सुना जाता है, वह सब भी उनके आदेश और लीला के आधीन है। महामति के शब्दों में–

मेहेरबान भी एह है, दाता न कोई या बिन।
हक बंदगी सिवाय जो कछू कहया, सो सब तले इजन॥

खुलासा, प्र. 9/20

यही हिन्दू धर्म मूल में एकेश्वरवाद का परिचायक है। उस एक परमात्मा को गीता में 'ज्योतिषामपि तद् ज्योतिः' और वेद में ज्योतिस्वरूप आदित्य वर्णम् कहा गया है। महामति ने इस तथ्य को इस रूप में उजागर किया है-

ये सब नूर एक होय रहा, रोशनी न काहू पकराए।
बिना नूर कहूं ना देखिए, रहा बाहेर माहें भराए॥

सनंध, प्र. 39/44

परमसत्ता का सानिध्य एवं अनुग्रह पाने के लिए साधक को कठिन तप अथवा कष्टसाध्य योगाभ्यास की आवश्यकता नहीं है। अपितु आवश्यकता है एकनिष्ठ समर्पण की। जो भक्ति के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। मानव देह की सार्थकता इसी में है कि वह प्रिय के अनुरूप बने, अपनी इन्द्रियों को इस योग्य बना दे कि उसमें प्रिय का प्रेमामृत समा जाए, सत्यानुभव हो सके। इस सब के लिए चित्त की निर्मलता आवश्यक है, जो अहंकार को त्याग कर ही मिल सकती है। अहंकार ही जीव को भटकाता रहता है। महामति ने अहंकार को साधना का परमशत्रु कहा है-

मोको मार छुड़ाई बंदगी, सो भी बुजरकी इन।
ऐसी दुसमन ऐ बुजरकी, मैं देखी न एते दिन।।

किरंतन, प्र. 102/9

महामति ने सब को अहंकार का त्याग करने को कहा है। उन्होंने मानाभिमान अथवा अहंकार को गहरी खाई की संज्ञा दी है और इसे बलपूर्वक त्याग देने का परामर्श देते हुए कहा है कि वाक्चातुर्य, ज्ञान आदि के अहंकार को भस्म कर दो-

अब छोड़ो रे मान गुमान ज्ञान को, एही खाड बड़ी है भाई।
एक डारी त्यों दूजी भी डारो, जलाए देओ चतुराई॥

किरंतन, प्र. 6/6

हिन्दू धर्म में माया को विष के समान माना गया है। माया के फंदे में चौदह लोक जकड़े हुए हैं। इसने सभी को भुलावे में बाँध रखा है। इसके मूल स्वरूप को समझे बिना सब दृष्टिहीन बने घूम रहे हैं। तारतम ज्ञान से इस मायावी दुनिया की रीति और स्वरूप को जाना जा सकता है-

लोक चौदे माया नो फंद, सहू छल तना ए बंध।
समझ्या बिना सहूए अंध, तारतम कहेसे सहू सनंध॥

श्री रास, प्र. 1/42

इसीलिए तारतमज्ञान बार-बार पुकारता है कि हे आत्माओं! भ्रम की नींद से छुटकारा पा लो, फिर मैं तुम पर माया का ज़हरीला असर नहीं होने दूँगा और अब तक तुम पर जितना विष व्याप्त हो गया है उसे भी नष्ट कर दूँगा-

ता कारण बानी बेहद, कहे नींद टारों।
ना देऊँ सुपना पसरने, चढ़या जेहेर उतारों॥

प्रकास, हि. 31/57

वैष्णव परम्परा में इष्ट की पूजा-अर्चना, तीर्थ, दान आदि कर्मकाण्डों की मान्यता है। महामति सगुणवाद की मान्यता को आत्मसात करते हुए इसे साधना पथ का साथी स्वीकारते हैं। किन्तु इसके अभिप्राय को समझकर पालन करने की अपेक्षा रखते हैं। महामति ने दिखावे की धार्मिकता अथवा आडंबर को अनुचित ठहराते हुए कहा है-

दान दया सेवा सर्वा अंगे, कीजे ते सर्वे गोप।
पात्र आलेखी ने कीजे अर्चा, सास्त्र अर्थ जोड़ये जोप॥

किरंतन, प्र. 126/27

इस्लाम धर्म

इस्लाम का अर्थ शांति, विश्वास एवं परमात्मा की राह पर समर्पित होना है। रसूल मुहम्मद साहब ने दीन इस्लाम द्वारा आसुरी प्रवृति के लोगों को शराअ के बंधन में बाँध कर एकेश्वर की उपासना की शिक्षा दी। महामति ने इस धर्म के सनातन रूप को हकीकी दीन इस्लाम की संज्ञा दी और इसे आत्मा को आनंद प्रदान करने वाला अथवा निजानंद प्रदायक कहा है। उनके अनुसार अद्वैतवाद ही वाहेद है। वह एकमात्र अखण्ड परमसत्ता का प्रकाश है। ब्रह्म ही सत्य वाहिद एवं एकमेव सत्ता है। ब्रह्मसृष्टि (खासुलखास), ब्रह्मधाम और उसके अंगरूप-सभी उनके नूर अथवा तेज से ज्योतिमान हैं। एकेश्वर के संबंध में महामति ने कहा है-

कहे सब एक वजूद है, और सब में एकै दम।
सब कहें साहेब एक हैं, पर सब की लड़े रसम॥

खुलासा, प्र. 10/12

इस्लाम भी मानव देह की पवित्रता के साथ ही अहंकार के त्याग को आवश्यक मानता है। महामति के शब्दों में-

साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छींट न लगे गुमान।
बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान॥

सनंध, प्र. 21/28

मोमिन आत्माओं की यही पहचान है कि उनका हृदय करुणा से भरा हो। वे अपने मन, प्राण और आचरण से कभी भी स्वामी को भूल जाने का दोष न लगने दें। यही शुद्ध इस्लाम का सिद्धांत है। महामति ने कहा है कि रसूल मुहम्मद साहेब के सभी वचनों को सत्य जानकर स्वीकार करना चाहिए तथा उनके अनुसार आचरण करना चाहिए।

मेहेर दिल मोमन के, इस्क अंग रेहेमान।
दाग न देवे बैठने, या दीन मुसलमान॥
सारे सबद रसूल के, सिर लेवे हक जान।
नूर नबी के मगन, या दीन मुसलमान॥

सनंध, प्र. 21/25, 17

क़ुरान में यह भी कहा गया है कि जो पवित्र है वही मुझे स्पर्श करने का अधिकार रखता हैं। पाक होने की पहली शर्त है परमात्मा, तोहीद-अद्वैत स्वरूप से अनन्य प्रेम के जल में स्नान किया जाए। इस प्रकार पवित्र होकर क़ुरान हाथ में लें क्योंकि क़ुरान का संदेश एकेश्वर ब्रह्म परमात्मा से अनन्य प्रेम करनेवालों को ही समझ में आ सकता है। अतः धर्म के मर्म को जानने के लिए पहली शर्त है चित्त की निर्मलता-

मोको पाक होय सो छूइयो, यों कहेवे फुरमान।
करे गुसल तौहीद आब में, इन पाकी पकड़ों कुरान॥

खुलासा, प्र. 1/72

अहंकार की ऊँचाई की कोई सीमा नहीं है। कतेब ग्रंथों में उल्लेख है कि सात समुन्दर का पानी भी उसकी कमर तक नहीं पहुँच सकता। इस अहंकार रूपी गधे पर सवार हो कर दज्जाल आयेगा और सबको गुमराह करेगा। इस अभिशप्त दानव को मारने का एकमात्र उपाय है तारतमवाणी। मायावी धरती और आकाश के बीच जो कुछ है उससे

निर्लिप्त रह कर दीन, दुखी और प्रियतम-वियोगी भक्तों की संगति करनी चाहिए-

न्यारा रहे सबन से, ए जो बीच जिमी आसमान।
संग करे खुद दरदी का, या दीन मुसलमान॥

सनंध, प्र. 21/21

इस्लाम में कर्मकाण्ड शराअ का महत्व है किन्तु वह मात्र दिखावे के लिए नहीं होनी चाहिए। सच्चे इस्लामियों के लिए पाँच बिने अथवा आधारभूत पाँच नियमों का पालन मन-प्राण की पवित्रता के लिए आवश्यक कहा गया है। महामति के अनुसार सच्चा अनुयायी उसे ही कहा जाना चाहिए जो क़ुरान की बिने की हकीकत को जानकर ही उसके अनुसार चल कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करे-

साफ दिल ईमान सो, करे बावन मसले अरकान।
ऐ बिने जाने इस्लाम की, या दीन मुसलमान॥
तो होए कबूल मुसलिम, जो पोहोंचे मजल इन।
जो लों न होए हुजूर बंदगी, खुले मुसाफ हकीकत बिन।।

सनंध, प्र. 21/33

हिन्दू धर्म का शुद्ध रूप एकेश्वरवाद, लीला में ब्रह्म के अद्वैत रूप, समर्पित साधना, शरणागति, मानव-समता दया, दान, संतोष, अहिंसा आदि को अपनाने को कहता है, वहीं दीन इस्लाम दज्जाल के जाल से मुक्त रहने, रक्तपात से दूर रहने, ईमानदारी, रहम, जकात देने का संदेश देता है। खुदा को खून कदापि पसंद नहीं तो उसके नाम पर कुर्बानी के रूप में रक्तपात उचित नहीं।

महामति ने दोनों धर्मों को देखा, परखा और दोनों के सत्य स्वरूप को परत-दर-परत उजागर किया। उन्होंने दोनों धर्मियों को समझाया कि अपने को एक-दूसरे से बड़ा मान कर मत झगड़ो क्योंकि दोनों का मूल और अन्त एक ही है-

ब्राह्मण कहे हम उत्तम, मुसलमान कहे हम पाक।
दोऊ मुट्ठी एक ठौर की, इक राख दूजी खाक॥

सनंध, प्र. 16/18

धर्म के वास्तविक अर्थ को न समझ पाने के कारण अनेक रीति-रिवाज़ चल पड़े और वैमनस्य के कारण बन गए-

सब कहें वजूद एक है, सब में एकै दम।
सब कहें साहेब एक है, पर सबकी लड़े रसम॥

खुलासा, प्र. 10/12

नाम अलग-अलग रख लिए गए हैं किन्तु परब्रह्म परमेश्वर एक ही है-

नाम सारों जुदें धरे, लई सबों जुदी रसम।
सब में उमत और दुनिया, सोई खुदा सोई ब्रह्म॥

खुलासा, प्र. 12/38

कुरान में यह उल्लेख है कि क़ुरान में बताए चमत्कार और नबी मुहम्मद साहब की पैग़म्बरी का महत्व तभी प्रमाणित होगा जब संसार में एक धर्म की स्थापना होगी। उसमें यह उल्लेख है कि ईश्वर का आदेश नाज़ी फ़िरके या मोमिन समुदाय के लिए है। अन्य सम्प्रदाय के लोग भी जब इसके बीच आएंगे तभी यह सम्भव होगा-

करी हकें हिदायत नाजी को, ए लिख्या माहे फुरमान।
इन बीच फिरकें सब आवसी, एक दीन होसी सब जहान॥

खुलासा 4/37

'फुरमान' का शुद्ध रूप फ़रमान है। कुरान को खुदाई आदेश या फ़रमान कहा गया है। कतेब ग्रंथानुसार नाज़ी फ़िरका एक परमात्मा पर विश्वास और उनमें प्रेम करनेवाला समुदाय है। हिन्दू शास्त्रों में इन्हें ब्रह्ममुनियों की संज्ञा दी गई है। गीता में इन्हें 'स्थितप्रज्ञ' बताया गया है।

समस्त धार्मिक अवधारणाओं का समन्वित शुद्ध रूप व्यष्टि के साथ समष्टि का भी सर्वोन्मुखी उन्नायक है। इस आवेश स्वरूप की प्रस्तुति 'निजानन्द धर्म' के रूप में जीवन्त है। इसमें वेदपक्षीय एकेश्वरवाद, अद्वैत है तो इस्लाम का वाहेदत भी है।

दार्शनिक समन्वय

मोह अहं गुण इंद्रियाँ, करे फैल पसू परवान।
फिरें अवस्था तीन में, ए जीव सृस्ट पहचान॥

भारतीय मनीषियों ने ज्ञान, कर्म और भक्ति के त्रिवेणी जल से मानव के कलुप का परिमार्जन कर, मानवता के उत्कर्ष में योगदान दिया है। साथ ही दु:खवाद और संसार के प्रति वैराग्य का उपदेश भी दिया है। पाश्चात्य चिन्तक इसे पलायनवाद कहते हैं, किन्तु यह भ्रम है। वैराग्य का उपदेश तो परमानंद प्राप्ति का पथ प्रशस्त करता है। दर्शन का धर्म से घनिष्ठ संबंध है। धर्म और ब्रह्म के प्रति जिज्ञासा ही दर्शन के मुख्य आधार हैं।

'दर्शन' शब्द संस्कृत भाषा का है जो प्रेक्षण (देखना) अर्थ वाली 'दृश' धातु से 'ल्युट' (अन) के योग से बना है।[1] यह 'ल्युट' प्रत्यक्ष तीन अर्थों में प्रयुक्त होता है- भाव, करण और अधिकरण। अत: 'दर्शन' शब्द का व्यापक अर्थ है- वह साधन जिसके द्वारा किसी वस्तु अथवा विषय को देखा या समझा जा सके। धर्म जिज्ञासा और ब्रह्म जिज्ञासा दोनों को ही दर्शन ने अपना प्रतिपाद्य बनाया है। वैशेपिक दर्शन और मीमांसा का प्रारम्भ ही जहां 'यतोऽभ्युदयनि:श्रेयससिद्धि:सधर्म' और 'अथातो धर्म जिज्ञासा' जैसी धर्म विषयक घोषणाओं से हुआ है। वहाँ वेदांत का प्रारम्भ 'अथातो धर्म जिज्ञासा' में ब्रह्म जिज्ञासा से होता है। इस प्रकार धर्म और

---

1. नपुंसके भावेक्त: 2/2/116, ल्युट च 3/2/117, करणाधिकरण योश्च 3/3/117 अष्टाध्यायी

दर्शन में बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। किन्तु दर्शन ग्रंथों में प्रतिपादित धर्म के व्यापक रूप को छोड़ कर हम यदि 'मनुस्मृति' आदि धर्मशास्त्रों के सामान्य धर्म को भी लें तो उससे भी दर्शन के संबंध में कोई विशेष अंतर नहीं आता, क्योंकि दर्शन के द्वारा प्रतिपादित सुचिन्तित आध्यात्मिक मान्यताओं के ऊपर ही भारतीय धर्म की प्राणप्रतिष्ठा की गई है। सच तो यह है कि दर्शन और धर्म ये दोनों एक ही वस्तु के दो पक्षों के नाम हैं। दर्शन धर्म का विचार पक्ष है और धर्म दर्शन का आचार पक्ष।

भारतीय आर्यों के प्राचीनतम दार्शनिक ग्रंथ हैं वेद, जिनकी संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। ऋग्वेद में एकेश्वरवाद, अद्वैतवाद, ऋत के सिद्धांत, सृष्टि, जीवात्मा, द्वैतवाद, कर्म और कर्मफल की समुचित विवेचना की गई है। वेदों के उपरान्त उपनिषदों की रचना हुई। इन्हें वेदान्त भी कहा जाता है। उपनिषदों में ब्रह्म, प्रतीक, आत्मा का स्वरूप, सृष्टि की रचना, प्रलय तथा ब्रह्म औरआत्मा की एकता के संबंध में विस्तृत व्याख्या की गई है।

भारतीय दार्शनिक ग्रंथों में 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता' या 'गीता' सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ है। गीता को उपनिषदों और ब्रह्मसूत्रों के साथ प्रस्थानत्रयी में स्थान दिया जाता है। गीता वस्तुतः 'महाभारत' महाकाव्य के भीष्मपर्व का एक अंश (अध्याय 25-42) है। गीता का महत्त्व उसके समन्वयवादी रूप के कारण है। गीता के रूप में हिन्दू धर्म और दर्शन ने यह प्रयत्न किया कि समस्त प्रचलित मत और मार्गों की भिन्नता में एकता स्थापित करने वाली विचारधारा प्रवाहित की जाए। गीता का तत्त्व दर्शन निर्गुण और सगुण ब्रह्म, सांख्य के प्रकृतिवाद प्राचीन उपनिषदों के ब्रह्मवाद के मध्य स्थापित करता है। गीता में जिन तीन तत्त्वों की व्याख्या की गई है, वे हैं-क्षर, अक्षर और पुरुषोत्तम। महामति ने इन तीनों तत्त्वों की अत्यंत सूक्ष्मता के साथ व्याख्या की है।

क्षर

क्षर तत्त्व भौतिक जगत का परिचायक है। यह जन्म लेता है तथा मृत्यु को प्राप्त होता है। गीता में कहा गया है-'क्षर सर्वाणि भूतानि'। महामति ने क्षर को असत तथा दुखों से युक्त ब्रह्माण्ड वैराट पुरुष कहा

है, साथ ही इस दार्शनिक दृष्टिकोण की समानता कतेब पक्ष से सप्रमाण उजागर की है-

तब सरूप हुकुम के, खेल किया मिने पल।
हाथ फुरमान ले आइया, रसूल हमारा चल॥
हम भी देखें खेल को, हुकमें मोमन मिल।
ढूंढें अपने खसम को, पेड़ हुकमें फिराई कल।।

सनंध, प्र. 38/7,8

अर्थात् ब्रह्म के हुकुम से अक्षर ब्रह्म ने नश्वर जगत के स्वरूप एवं अन्य प्राणियों की रचना की और पल भर में जगत का विस्तार हो गया। परमात्मा के हुक़्म के स्वरूप रसूल मुहम्मद बनकर हमारे लिए हमारे स्वामी का फरमान लाये। यही आदेश या फ़रमान क़ुरान के माध्यम से जगत में आया। मोमिन आत्माएं परमधाम में मिलकर स्वामी के हुक्म से ही जगत-लीला देख रही हैं

अक्षर

गीता में दूसरा तत्त्व अक्षर है। 'अक्षर' का तात्पर्य है जिसका क्षर (विनाश) न हो। अक्षर वह है जो अजन्मा, शाश्वत एवं नित्य है। यह परमात्मा का अंग है। अविद्या के कारण ही वह परब्रह्म से अलग ईश्वर रूप धारण करता है।

मत परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय।
मयि सर्व मिदं प्रोतं सूत्रे मणि गणा इव॥

श्री मद्भगवद्गीता 7/8

अर्थात् श्री कृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं हे धनंजय! मुझसे श्रेष्ठ अथवा मुझसे भिन्न कोई नहीं है, सारा संसार धागे में पिरोई हुई मणियों के समान मुझमें ही एक सूत्र है। महामति ने भी अक्षर को परब्रह्म का सत् अंश निरूपित किया है। परब्रह्म इसके द्वारा अपनी योगात्मक लीलाएँ कराते हैं। अक्षर ब्रह्म की इच्छाशक्ति मूल प्रकृति से पल भर में कालमाया और योगमाया जैसी कई शक्तियाँ प्रकट हो जाया करती हैं।-

ताथें कालमाया योगमाया, दोऊ पल में कै उपजत।
नास करैं कै पल में, या चित्त थिर थापत॥

कलश 24/12

कतेब ग्रंथों में भी इस तत्त्व का पर्याप्त विवरण मिलता है। महामति ने स्पष्ट करते हुए कहा है कि माया को ही दज्जाल कहा गया है जिसने अपने छल या छद्म विस्तार से सभी को भ्रमित किया है। दज्जाल के मोहपाश में जकड़ा हुआ मानव नेत्र-ज्योति होते हुए भी उस अंधे के समान होता है जिसे सद्मार्ग दिखाई नहीं देता-

कोई न छोड़या दजालें, जीत लिए सकल।
ऐसे अंधे कर लिए, कोई सकें न काहू चल॥

सनंध 31/17

पुरुषोत्तम तत्त्व

पुरुषोत्तम तत्त्व को 'गीता' में 'अव्यक्त' कहा गया है। माया को इसकी दिव्यशक्ति माना है। पुरुषोत्तम के सगुण और निर्गुण दो तत्त्व हैं। निर्गुण तत्त्व सूक्ष्म है जिसे ज्ञानी ही समझ सकते हैं। यह अंधकार के परे समस्त प्रकाश का स्त्रोत है। जबकि सगुण तत्त्व पुरुषोत्तम का वह स्वरूप है जिसे धारण कर वे प्राणियों के रक्षार्थ प्रकट एवं अवतरित होते है। 'गीता' में श्री कृष्ण का कथन है कि क्षर, अक्षर से परे उत्तम पुरुष तीनों लोकों का पोषक एवं अविनाशी है, सर्वव्यापी है, वह क्षर जगत् से भिन्न, अविनाशी जीवात्मा से भी उत्तम-अन्य है।

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः॥
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥

गीता 15/17,18

महामति के पुरुषोत्तम अक्षरातीत ब्रह्म हैं जो सद्, चिद्, आनन्द से पूर्ण सच्चिदानन्द, चिन्मय स्वरूपी हैं। उनसे आनन्दमयी लीलाएं प्रकट होती हैं।

जिस प्रकार 'गीता' में ज्ञान के साथ-साथ कर्म को महत्त्व दिया गया है ठीक उसी प्रकार महामति ने अपनी दार्शनिक अवधारणा में कर्म को प्रमुख स्थान दिया हैं महामति का मानना है कि बुरा कर्म करनेवाले अधोगति को प्राप्त होते हैं जिस प्रकार 'कुरान' में भी लिखा है कि बुरा कर्म करनेवाले

को 'दोजख' में यंत्रणाएँ झेलनी पड़ती हैं। महामति के अनुसार प्राणि-देह को कुकर्म फल भुगतने के लिए चौरासी लाख नरक-कुंडों में भटकना पड़ता है-संसार आकर्षण रूप में भटका देता है। ज्ञानवान ही इसमें पल-पल जीकर लाभ उठा लेते हैं।

हाट पीठ रलियामणा, चोटा चौरासी बजार।
मन चितवी वस्त आहीं मले, पण खरा जोइये खरीदार॥

किरंतन 125/5

अद्वैतवाद

भारतीय दर्शन के अद्वैत वेदान्त में एक मात्र ब्रह्म की सत्ता स्वीकार की जाती है। माया को ब्रह्म की अनिर्वचनीय शक्ति माना गया है। महामति का भी यही कहना है कि परमात्मा अथवा परब्रह्म एक ही हैं वही सबके एकमात्र स्वामी है और दूसरा कोई नहीं-

खसम एक सबन का, नहीं दूसरा कोय।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होय॥

सनंध 15/22

कतेब दर्शन का मूल तो वाहेदत्त ही है। वाहेदत्त अर्थात् 'अद्वय'। ब्रह्म ही सत्य, वाहिद और एकमेव सत्ता है। यह नश्वर संसार उसकी माया या सत्ता का आभास मात्र है। महामति कहते है कि जब अर्शे अज़ीम परमधाम के सच्चिदानंद ब्रह्म स्वामी को देखा जाए तो वही वाहिद अर्थात् अद्वैत सत्ता है। वेद-कतेब में भी यही लिखा है कि-'खुदा के बिना कहीं कोई नहीं है।' महामति की वाणी में-

ना अरस जिमियें दूसरा, कोई और धरावे नाउँ।
ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नाहीं खुदा बिन काहूँ॥

खुलासा 16/83

सृष्टि संबंधी दृष्टिकोण

सृष्टि के संबंध में अनेक जिज्ञासाएँ उत्पन्न होती है। सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई? इसे किसने उत्पन्न किया? सृष्टि की रचना क्यों की गई?

सृष्टि की रचना और विलय के संबंध में उपनिपदों में विस्तृत विवरण

दिया गया है। ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में 'छांदोग्योपनिषद्' में आरुणी के उपदेश में प्राप्त होता है। उपनिषदों के अनुसार सृष्टि के पदार्थों का उद्भव शरीर से उत्पन्न केशलोम की भांति हुआ। महामति ने तीन प्रकार के आत्माओं या सृष्टियों का वर्णन किया है-ब्रह्म सृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि, और जीव सृष्टि। 'गीता' में इन्हें क्रमशः मुक्त, मुमुक्षु और विषयी कहा गया है। महामति के अनुसार, ब्रह्म सृष्टि पूर्ण ब्रह्म के आनंद अंग से प्रकट हुई। इस सृष्टि में ब्रह्मात्माएँ नश्वर संसार में सांसारिक खेल देखने के लिए अवतरित हुईं। 'कुरान' में इन्हीं को मोमिन आत्माएँ कहा गया है। स्वयं परब्रह्म इनकी प्रशंसा करते हैं-

लाड़लियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान।
बड़ी बड़ाई इनकी, जाकी सिफत करें सुभान॥

किरंतन 71/1

कतेब दर्शन में ब्रह्मात्माओं को ख़ासुलख़ास कहा गया है। 'कुरान' सहित सभी ग्रंथों में इनकी महिमा का वर्णन किया गया है- 'कै विध कीं बुजरकियाँ, देखो साहेदी कुरान।' किरंतन 72/4

ईश्वरीय सृष्टि जागृत सृष्टि है। यह सृष्टि अक्षरधाम से उतरी है 'कुरान' में इसे नूरजलाल के रूप में वर्णित किया गया है। महामति कहते हैं कि ये तुरीय अथवा बौद्धिक रूप में रहती है।-

ए ही सृष्टि ईश्वरी जागृत, आई अक्षर नूर से जे।
मेहेर ले महबूब की, रहे तुरी अवस्था ए॥

किरंतन 79/11

जीव सृष्टि साधारण लोगों की सृष्टि है। इनका स्वभाव अहंकारपूर्ण होता हैं ये स्वप्न, सुषुप्त और जागृत तीनों अवस्थाओं में पड़े रहते है। यही इस सृष्टि की पहचान है-

मोह अहं गुण इंद्रिया, करें फैल पसू परवान।
फिरें अवस्था तीन में, ए जीव सृष्टि पहचान॥

किरंतन 79/7

कर्मकाण्डों या शराअ का चलन इन जीव सृष्टियों में है। वेद पक्ष से दान, तीर्थयात्रा, दर्शन, उपासना तथा उपवास के पाँच नियमों का ये

पालन करती हैं। वहीं कतेब पक्ष में ज़कात, हज्ज, ज़ियारत, नमाज़, रोज़ा किया जाता है जो इस्लाम की पाँच बिने भी कही जाती हैं। कतेब में इस सृष्टि को आम खलक कहा गया है।

सरियत बिने इसलाम की, पाक करे वजूद।
तरीकत पोहोंचे मलकूत लों, आगे होय न बका मकसूद॥

मारफत सागर 4/28

मोक्ष

भारतीय दर्शन में मोक्ष जीवन का परम लक्ष्य है। उपनिषदों में सीमित जगत से असीम ब्रह्म को प्राप्त कर लेना मोक्ष है। जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति ही मोक्ष है। महामति ने मुक्ति का तात्पर्य माया के बंधन से मुक्त होकर अपने मूल स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना और उससे एकाकार होना कहा है। इस ज्ञान से अखण्ड आनंद की प्राप्ति होती है। संसार में रहकर भी इसे प्राप्त किया जा सकता है। जिनका चित्त विकारों से रहित होता है वे आत्माएँ मोक्ष की अधिकारिणी होती हैं। मोक्ष प्राप्ति का साधन है प्रेमाभक्ति।

महामति ने वेद पक्ष के विषय में कहा है कि पुरुष, आदिपुरुष, नारायण, प्रकृति, माया, काल आदि की व्याख्या लोग बिना भली-भाँति जाने ही करते रहते हैं। पुरुषोत्तम से प्रकट तत्त्वों को उनके जैसा ही कहकर उन्हें पूज्य मान लेते हैं। जबकि क्षर का भ्रम दूर होने पर ही अक्षर-अक्षरातीत का बोध होता है। महामति ने इनकी व्याख्या करते हुए 'कुरान' को भी संदर्भित किया है-

पुरुष प्रक्रति काल की, ईस्वर महाविस्नु उनमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान॥

सनंध 20/46

महामति प्राणनाथ अर्थात् इमाम मेहदी खुदाई नूर रूपी तारतम ज्ञान को लेकर प्रकट हुए और उनके ज्ञान से ही लोगों में पूर्ण पहचान आई तो एक्य-भाव जागृत हुआ-

सो इमाम जाहेर हुए, ले मायने कुरान।
नूर सबों में पसरया, एक दीन हुई जहान॥

सनंध 20/55

महामति प्राणनाथ ने कुरान और हदीसों का प्रमाण दे कर धर्म और दर्शन पक्षों की अवधारणाओं को स्पष्ट किया। महामति ने तारतम ज्ञान की कुंजी से समन्वय मार्ग को प्रशस्त किया। इस तारतम ज्ञान द्वारा ही अक्षरातीत-सत्, चित् आनंद-परमात्मा, हक, ब्रह्म एवं श्री राज जी की त्रिधा लीला के महत्व को निरूपित किया जा सकता है।

सदगुरु देवचन्द्र जी की कृपा से मेहराज (महामति) को यह ज्ञान बीज रूप में प्राप्त हुआ था जिसके माध्यम से उन्होंने अज्ञानता और मन के अंधकार को दूर करने का पुनीत कार्य किया।

थी इत अरस अजीम से, मसि ल्यावे कुँजी रोसन।
सो तोड़ कुफर आलम का, साफ करे सबन॥
जब इमाम इत आइया, तब ये सारे संग।
सरूप मेहदी याही को, यामें देखोगे कै रंग॥

सनंध 29/17,18

अर्थात् पुण्यात्मा इन्द्रावती कहती हैं कि अब इमाम मेहदी प्रकट हुए हैं तभी तो ये समस्त शक्तियाँ (नूर, जोश, श्यामा और फ़रिश्ता इसराफील) उनके साथ हैं। मेंहदी स्वरूप देवचन्द्र जी भी इनके अंतर में विराजमान हैं। अब इनके द्वारा अनेक आनंदलीलाएँ सम्पन्न होंगी, वेद-कतेब के सार और रहस्य प्रकट होंगे। आनंद और प्रेम की लहरें उठेंगी।

इस प्रकार महामति की वाणी में वेद-कतेब के दार्शनिक समन्वय को बड़ी ही बारीकी से व्याख्यायित किया गया है, जिससे ब्रह्म की अद्वैतता सिद्ध हो जाने से एकात्मता स्थापित होती है।

समाजवादी विचारधारा

अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊं सब विकार।
रंगे रास रमाय के, सुफल करूं अवतार॥

महामति के आविभार्व काल में हिन्दू धर्म अनेक सम्प्रदायों में विभाजित था। इन सम्प्रदायों के अनुयायी पारस्परिक भेद-भाव एवं वैमनस्यता रखते थे। धर्म का पालन आडम्बरों से जकड़ गया था जिसके चलते ऊँच-नीच, छुआ-छूत जैसी सामाजिक विसंगतियाँ मानवीय मूल्यों का तेज़ी से क्षरण कर रही थीं-

कै आचारी अप्रसी, कै करें कीरंतन।
यों खेलें जुदे-जुदे, बस परे सब मन॥

सनंध 14/25

किसी सम्प्रदाय में शास्त्र श्रवण तो किसी में वंदना-प्रार्थना का महत्त्व था। कोई सगुण उपासक थे तो कोई निर्गुण उपासक और ये दोनों भी एक-दूसरे को तुच्छ मानकर भ्रम में पड़े हुए थे। इस प्रकार की नासमझी और मनोविकारों में पड़े संत-महंत परस्पर द्वेष-भाव को विकसित करते चले जा रहे थे। इस विडंबनापूर्ण स्थिति पर महामति का कहना है कि-

कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार।
कोई कहे तेज बड़ा, यों लरे लिए विकार॥

सनंध 15/16

महामति ने देखा कि सम्प्रदाय और धर्म को बदनाम करने वालों

की निरंतर संख्या में वृद्धि होती जा रही है, ईश्वर की दुकान लगाकर धनोपार्जन को लक्ष्य बनाया जा रहा है। जनसामान्य के हर वर्ग को पाखण्ड के जाल में जकड़ा जा रहा है, उनका शोषण किया जा रहा है। एक ही परमात्मा का अलग-अलग नाम रख कर माया, मोह, अहंकार को समाज में रोपित किया जा रहा है-

जुदे जुदे नाम दरसनी, अनेक इस्ट आचार।
धरे नाम धनी के जुदे जुदे, पैड़े चले माया मोह अहंकार॥

किरंतन 31/8

इस्लाम धर्म में भी भ्रम की स्थिति देखकर महामति को आश्चर्य होता है कि खुदा के बंदे कहलाने वाले भी इस्लाम के दिव्य संदेशों के विपरीत कार्य कर रहे हैं-

ए ही बड़ा अचरज, कहावत हैं बंदे।
जानों पहचान कबूं न हुती, ऐसे हो गए दिल के अंधे॥

किरंतन 94/24

हिन्दू और मुसलमानों दोनों की एक ही स्थिति थी जिसे देखकर महामति ने कहा है कि दोनों अपने-अपने अहंकार के कारण परस्पर लड़ते-झगड़ते रहते हैं-

लड़ फिरके जुदे हुए, हिन्दू मुसलमान।
और खलक केती कहूं, सब में लड़े गुमान॥

खुलासा 10/10

जाति-पांति, छुआ-छूत की विडंबना के संबंध में महामति ने कहा है कि-

एक भेस जो विप्र का, दूजा भेस चांडाल।
जाके छुए छोत लागे, ताके संग कौन हवाल॥

सनंध 16/18

इससे स्पष्ट है कि महामति सामाजिक विसंगतियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील थे। मानवता के हनन के प्रति उनमें गहन पीड़ा थी। तत्कालीन भारतीय समाज का एक उपेक्षित वर्ग विशेष जो समाज के आडंबरों, रूढ़ियों और अंधविश्वासों में पिसता हुआ पशुवत जीवनयापन कर रहा था, महामति

के मन में उनके प्रति करुणा थी। इसीलिए वे उनके उत्थान के प्रति सजग थे और इसके लिए उन्होंने आजीवन प्रयास किया। महामतिं ने धार्मिक अंधविश्वासों, बाह्य आडंबरों, व्रत-तीर्थटन, दिखावे की पूजा-अर्चना, छुआ-छूत, ऊँच-नीच की भावना का खुल कर विरोध किया।-

अस्नान करी छापा तिलक देओ, कंठ आरोपो तुलसी माल।
गिनानी कहाओ साध मंडली, पण चालो छो केही चाल॥

किरंतन 128/12

महामति ने कहा है कि स्वच्छ मन के बिना दैहिक स्वच्छतायुक्त उपासना व्यर्थ है। विद्वान कहे जाने वालों ने ही कर्मकांड में उलझाकर आगे बढ़ने नहीं दिया।

पढ़ों पढ़ाई दुनियां, अगुओं उलटी गत।
ए होसी सब जरदरू, अब ही इन आखरत॥

सनंध 27/6

महामति एक अग्रगण्य समाजसुधारक थे। उन्होंने मात्र कथनी से ही सुधार नहीं किया प्रत्युत प्रचलित बुराइयों से दूर एक आदर्श समाज का साकार स्वरूप प्रस्तुत किया। वह था 'सुंदरसाथ'। जो हर तरह की संकीर्णता से मुक्त था और जहाँ समता, एकता और प्रेम था। यहाँ तक कि 'नारी नरक की खान' कहे जानेवाले युग में उस आदर्श समाज में नारी को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था। नारी के अनादर के प्रश्न को लेकर ही महामति ने अपने गुरुपुत्र से संबंध विच्छेद कर लिए थे। गुरुपुत्र बिहारी जी विधवा स्त्रियों को तारतम मंत्र दिए जाने के विरूद्ध थे जबकि महामति ने इस संदर्भ में बिहारी जी के पिता अर्थात गुरु देवचन्द्र द्वारा एक विधवा स्त्री खोजीबाई को तारतम मंत्र दिए जाने का स्मरण भी दिलाया था। महामति ने स्वयं विधवा स्त्रियां को तारतम मंत्र दिए जाने का भरपूर समर्थन किया। उनके युग में स्त्रियां धर्माचार्य भी बनी।

सामाजिक उत्थान के लिए महामति ने सुंदर साथ के माध्यम से जनजागरण का एक नया शंखनाद किया। यह 'सुंदरसाथ' उनके गुरु निजानंद स्वामी सद्‌गुरु देवचन्द्र के सखीस्वरूप के नाम सुंदरबाई पर

आधारित था। निजानंद स्वामी सद्‌गुरु देवचन्द्र को सखी स्वरूप में सुंदरबाई का अवतार कहा गया है और इसीलिए उनके इसी नाम के आधार पर निजानंद सिद्धांतानुयायी 'सुन्दरसाथ' कहलाए। महामति ने सुन्दरसाथ को संगिनी आत्मा का स्वरूप माना जिसमें सभी जाति, वर्ग, धर्म, लिंग के व्यक्तियों के लिए समान अधिकार और समान स्तर का सामाजिक स्वरूप रखा गया। सुंदरसाथ में सभी व्यक्ति तारतम दीक्षा के अधिकारी थे। जिसे तारतम मिला वह दूसरे को सिखा सकता था। इस हेतु महामति ने मानव समाज को नवीन स्वरूप और दिशानिर्धारण के लिए समर्पित भावना रखने वाले व्यक्तियों का एक जत्था तैयार किया। इस जत्थे में विभिन्न समुदाय, जाति, वर्ग, धर्म के दलित, शोषित, उपेक्षित व्यक्ति शामिल किए गए। समाजवाद का सच्चा स्वरूप सुंदरसाथ की संरचना में परिलक्षित होता है। जिसका ध्येय समस्त मानव जाति का उत्थान करना है। सुंदरसाथ के अंतर्गत् समूह जागरण का अलख 'जागनी' के रूप में सामने आया। महामति सखी इन्द्रावती के रूप में कहते हैं अब मैं बड़ी युक्ति से तुम्हें जगाकर तुम्हारे सभी मनोविकारों को दूर कर दूंगी। ताकि आनंदमयी जागनी की रासलीला में विभोर हो कर, पारस्परिक भेद-भाव भूल कर अपना जन्म सफल कर सको-

अब जगाऊँ जुगत सों, उड़ाऊँ सब विकार।
रंगे रास रमाय के, सुफल करूँ अवतार॥

कलश, हि. 23/3

इस जागनी अभियान में महामति सभी साथी आत्माओं को प्रसन्न देखना चाहते थे। उन्होंने कहा-

अब दुख न देऊं फूल पांखड़ी, देखूं शीतल नैन।
उपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन।।

कलश हि.23/4

अर्थात् महामति सखी इन्द्रावती के रूप में कहते हैं इस जागरण अभियान में अपनी आत्माओं को फूल की पंखुरी के स्पर्श समान भी दुख नहीं देना चाहती। शीतल नयनों से देखकर उन्हें भरपूर सुख दूँगी। उन्हें सदैव प्रेम भरे शब्दों से बुलाऊँगी।

पिउ जगाई मुझे एकली, मै जगाऊँ बाँधे जुथ।
ये जिमि झूठी दुख की, सो कर देऊँ सत सुख॥
सब साथ करूँ आपसा, तो मैं जागी परमान।
जगाए सुख देऊँ धाम के, मिलाय मूल निसान॥

कलश प्र. 23/44,45

महामति सखी इन्द्रावती के रूप में कहते हैं मेरे प्रियतम ने निजानंद स्वरूप में मुझे जगाया। अब मैं समूह जागरण करूँगी। समस्त सुंदरसाथ को मैं अपने जैसा बना लूँ तभी यह सिद्ध होगा कि मैं जाग गई हूँ।

अतः महामति प्राणनाथ ने सखी भाव और सुंदरसाथ के द्वारा समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया। उन्होंने समाज के स्वस्थ, भेद-भावरहित एवं उत्थानोन्मुखी स्वरूप की परिकल्पना की। पारस छू जाने से कोई भी लोहा सोना बन जाता है। उन्होंने समस्त सुन्दरसाथ को अपने जैसा बनाया, उन्हें अखंण्ड सुख प्रदान किया। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जिनते कि तत्कालीन सामाजिक परिवेश में थे।

मधुरा भक्ति साधना

जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाय।
जो रूह नैनों न समावहीं, सो जुबां कह्यो क्यों जाय॥

महामति प्राणनाथ ने भक्ति साधना में मधुरा भक्ति को उत्तम माना है यद्यपि यह अत्यंत कठिन मार्ग है। मधुरा भक्ति में ईश्वर को प्रियतम मान कर उसके प्रति पूर्ण समर्पित भाव से तादात्म्य स्थापित किया जाता है। इसमें प्रियतम को सर्वस्व मानकर अपने अस्तित्व को भुला देना ही समर्पण की पराकाष्ठा होती है क्योंकि जब आत्मा और परब्रह्म का परस्पर मेल होता है, वहीं परम आनंद की प्राप्ति होती है। परमात्मा के प्रति समर्पण का यह भाव मूलतः सखी-भाव कहलाता है। महामति ने सखी-भाव को उत्तम मार्ग निरूपित करते हुए परमात्मा के प्रति प्रेम को महत्त्वपूर्ण बताया है।

इसक नेहचे मिलावे पिउ, बिना इसक ना रहे याको जीव।
ब्रह्म सृष्टि की एही पेहेचान, आतम इस्कै की गलतान॥
परिक्रमा 1/2

अर्थात् प्रेम निस्संदेह और प्रत्यक्ष रूप में प्रियतम से मिला देता है। प्रेम बिना आत्मा पल भर भी शरीर में नहीं टिक सकती है। ब्रह्मात्माओं की पहचान यही है कि उनकी आत्माएँ सदा प्रियतम में तन्मय रहती हैं।

सोइ कहावत आसक, जिन अंग जोस फुरत।
अहेनिस पिउ के अंग में, रेहेत आसक की सुरत॥
किरंतन 91/14

अर्थात् प्रेमी वही है जिसके अंग-अंग में प्रेम के आवेश का स्फुरण होता रहे। प्रियतम स्वामी के स्वरूप में प्रेमी आत्मा का ध्यान दिन-रात रहता है।

प्रियतम स्वामी का स्वरूप परम दिव्य आभा-नूर से युक्त है। अद्वैत स्वरूप न्यास में उन्हें युगल किशोर दंपति कहा गया है कयोंकि प्रेमी-प्रेमिका (आशिक-माशूक) एक ही स्वरूप हैं-**'जुगल किसोर तो कहें, आसिक भासूक एक अंग'**। द्वैत रूप में परब्रह्म स्वामी के स्वरूप का नूर हादी रूहअल्लाह (अंग रूपा) श्यामा के अंगों की आभा मोमिन (ब्रह्मात्माएँ) हैं-**'हक अंग नूर हादी कहया, मोमिन हादी अंग नूर'**।

प्रियतम स्वामी का मुखारबिन्द अत्यंत सुंदर है। युगल किशोर-श्याम श्री राज जी और उनकी अंग रूपा श्यामा जी मानो शोभा और सुदंरता के स्रोत एवं प्रकटीकरण हैं। उनका मुखड़ा अतिसुदंर, गौर वर्ण, लालित्यपूर्ण और तेजोमय है-

हक सूरत अति सोहनी, दोऊ युगल किसोर।
गौर मुख अतिसुदंर, ललित कोमल अति जोर॥

सिनगार 21/50

'सिनगार' वाणी संग्रह में अद्वैत ब्रह्म श्रीराज जी का नख-शिख वर्णन जीवंत है। सागर में श्रीराज जी एवं श्यामा जी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए महामति कहते हैं कि--

जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाय।
जो रूह नैनों में न समावहीं, सो जुबां कह्यो क्यों जाय॥

सागर 10/54

अर्थात् श्रीराज जी एवं श्यामा जी के सौंदर्य की ज्योति नयनों में नहीं समा पा रही है। ऐसे चकाचौंध कर देने वाले अप्रतिम सौंदर्य का वर्णन वाणी और शब्दों से परे है।

महामति ने प्रेम की एकनिष्ठता को प्रेम की पवित्रता का प्रतीक बताते हुए इन्द्रावती के रूप में कहा है कि पतिव्रता पिया के विरुद्ध एक शब्द भी सुन ले तो देह त्याग दे-

पतिव्रता नारी पति ने पूजे, सेवे ते अनेक पेरे।
पीउ पर वचन सुने जो वाकूं, तो देह त्याग तिहां करे॥

किरंतन 64/19

महामति का मानना है कि परमात्मा प्रियतम से मिलन बिना कष्ट सहे सम्भव नहीं है। प्रियतम तक़ पहुँचने के लिए विरह सागर को पार करना पड़ता है। यह विरह का दुख जितना गहन होता है, प्रेम की प्यास उतनी ही तीव्र होती जाती है और मिलन का आकर्षण बढ़ता जाता है, यहां तक कि सांस लेना भी कठिन जान पड़ता है—'न आवे अंदर बाहिर, या विधि सूकत सांस।' परमात्मा के प्रति प्रेम बढ़ाने के लिए विरह की पीड़ा महत्त्वपूर्ण है—

प्रेम दरद इसक तुम्हारा, मैं फेर-फेर माँगूँ फेर।
प्यारे मिलूँ प्यारे पिउ सों, प्यारी महामत कहे बेर-बेर॥

किरंतन 62/20

लोक-दृष्टि से देखा जाए तो किसी भी व्यक्ति को वांछित वस्तु पाने में सुख का अनुभव होता हैं। यह सुखानुभूति कई तरह की होती है। बिना प्रयास के वांछित वस्तु मिल जाने में जितनी प्रसन्नता होती है, उससे कहीं बढ़कर प्रसन्नता की अनुभूति होती है वांछित वस्तु को सप्रयास पाने में। यदि प्रिय बिछड़ जाए और प्रिय का वियोग सहने के उपरान्त प्रिय से पुनर्मिलन हो तो इस मिलन का सुख वर्णनातीत होता है। मधुरा-भक्ति का मार्ग ठीक इसी प्रकार का है। प्रिय ब्रह्म से उसकी ही अंश रूपी आत्माएँ जब उससे बिछड़कर सांसारिक माया-मोह में भटक जाती हैं और पाने के लिये वियोग में तड़पती हैं, स्वयं को अहंकार से मुक्त करने का प्रयास करती हैं; तब विरह उनके प्रेम की कसौटी बन जाता है। इस कसौटी पर खरा उतरने पर प्रिय-मिलन का सुख प्राप्त होता है। यही परमानंद का क्षण होता है। महामति कहते हैं कि प्रिय दुख मार्ग पर चल कर ही मिलते हैं, सुख मार्ग पर चल कर नहीं—

दुख से पिउ जी मिलसी, सुखै न मिलिया कोय।
अपने धनी का मिलना, सो तो दुखै सो होय॥

किरंतन 18/10

महामति कहते हैं कि क़ुरान और पुराण दोनों में मैंने देखा, उनमें भी दुख की महिमा वर्णित है। साधु-संतों ने परमात्मा के प्रेम में दुख के महत्त्व को बढ़-चढ़कर स्वीकार किया है-

क़ुरान पुरान मैं देख्या, कही दुख की बड़ाई।
साधो बड़ों बड़ाई दुख की, लड़ाय लड़ाय के गाई॥

किरंतन 18/20

महामति के स्वरूप में दुख झेलती सखी शिरोमणि इन्द्रावती का विरह, भक्ति और मुक्ति में विरह के महत्त्व को उजागर करता है। 'खिलवत' में उल्लेख है कि महामति के अनुसार एक बार ब्रह्मात्माओं ने सच्चिदानंद से जगत लीला देखने की उत्कट लालसा प्रकट की। उन आत्माओं को किसी भी प्रकार के अभाव का आभास तक नहीं था। वे परमधाम में ऐश्वर्य और सुखों का सतत उपभोग कर रही थीं। अभाव कितना दुखद होता है, यह जानने के लिए उन्होंने संसार की रचना करवाई। तदोपरान्त, वे ब्रह्मात्माएँ परमात्मा से अलग होकर संसार में प्रविष्ट हुईं और यहाँ आकर माया-मोह के वशीभूत हो गईं। किन्तु, जब उन्हें अपनी पूर्णता की, सुख की और परमधाम की याद आती तो वे व्याकुल हो उठतीं। अब पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ भी उनके पास नहीं था क्योंकि जगत लीला देखने की माँग उन्होंने स्वयं की थी। परमात्मा से किसी प्रकार की शिकायत करते हुए उन्हें सोच-सोचकर संकोच होता कि-

ऐसा खेल दिखाइया, जो माँग लिया है हम।
अब कैसे अरज करूँ, कहोगे मांग्या तुम।।

खिलवत 1/1

वियोगिनी सखी इन्द्रावती लता वृक्षों से प्रिय का पता पूछती हैं कि हमारा श्याम कहां है ?-

विकल थै पूछे बेलड़ी, सखी कयां दीठा तमे श्याम।
जीव अमारा लई गया, मन नी ना पोहोती हाम॥

(श्री रास: अंतर्धान लीला)

विरह पीड़ा के आधिक्य से व्याकुल वियोगिनी सखी प्रिय को पुकारती हुई निवेदन करती है कि- 'हे स्वामी ! मेरी पुकार सुनकर मुझ इन्द्रावती को अपने पास बुला लीजिए वरना मेरी निर्जीव काया आपको दोषी मानकर हँसेगी'-

मारी बेहेली ते लेजो सार, नहीं तो जीव चालसे रे।
पछी आवी ने लेजो सार, काया पड़ी हसे रे॥

षट्ऋति, 1/10

हे प्रियतम! आप अपने नाम की लाज रखते हुए मेरे मनोरथ को पूर्ण कीजिए। आप तत्काल मुझे बुला लीजिए ताकि मैं अपने मन की तपन बुझा लूँ-

इन्द्रावती कहे वली मनोरथ पूरजो, जो तमे राखो पोतानी लाज।
ततख्यण आवी ने तेड़ी जाओ, जेम काढूं मारा रुदयानी दाझ।।

षट्रुति, 7/10

इन्द्रावती कहती हैं कि होली, दीपावली, कृष्णाष्टमी, राधाष्टमी, शरदपूर्णिमा जैसे त्यौहार भी आए। जब आप साथ थे, तब ये त्यौहार सुखद थे किन्तु आपके बिना हमारी विरहाग्नि को ये दीप्त कर रहे हैं-

बालाजी रे पूनम रात नो चाँद लो, काईं बन सोभे अपार।
रास नी रात नो ओच्छव, मुने का न तेड़ी आधार॥

षट्रुति 2/14

इसी प्रकार वे आगे कहती हैं कि इस विरह की गति को वही जान सकता है जो एक बार प्रिय (परब्रह्म) से मिलकर बिछुड़ गया हो। अत: हे स्वामी! जिस प्रकार जल के बिना मछली की दशा होती है उसी प्रकार हम आपके बिना इस मिथ्या जगत में आकर व्याकुल हैं-

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिलके बिछुड़ी होय, मेरे दुलहा।
ज्यों मीन बिछुरी जल थें, या गत जाने सोय, मेरे दुलहा।
विरहिनी बिलखे तलफे तारुनी, तारुनी तलफे कलपे कामिनी॥

कलश, हि. 6/1

आत्माएँ पीड़ा में डूबी रहने के कारण तड़प रही हैं और परमात्मा से निवेदन कर रही हैं कि-

दंत तरणां लेई तारुणी तलफियो, तमे वाहो दाहो दीन दातार।
खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार॥

किरंतन 37/3

अंतत: परमात्मा आनंद अंग श्यामा एवं इन्द्रावती की आत्मा (महामति)को पहचान कर उन्हें जागरण का भार सौंप देते हैं। सदगुरु सद्मार्ग का दर्शन कराकर परमधाम चले जाते हैं। सद्गुरु के रूप में परमात्मा के आगमन के समय उनके वास्तविक स्वरूप को न पहचान पाने के कारण इन्द्रावती

दुखी होकर कहती हैं-

मेरी सैयल रे, साह आये थे मेरे घर,
मैं पेहेचान न कर सकी, पिउ चले पुकार कर॥

प्रकाश, हि. 7/1

तारतम ज्ञान की प्राप्ति से हृदय की सभी कामनाएँ पूर्ण होने लगीं, यही तो वह ज्ञान है जो अक्षरधाम से परे परमधाम तक पहुँचा देता है-

ऐ इलम एहडो आइयो, सभ दिल जी पूरन करे।
डेई इसक मेडे कांध से, घर पुजाये नूर परे।।

सिंधीवाणी, 6/42

आत्मा और परमात्मा के परस्पर मिलने पर परमात्मा को स्वीकार करना पड़ता है कि आत्माएँ मेरी अंगरूपा हैं, वे मुझसे अभिन्न हैं तथा मैं भी उनके बिना नहीं रह सकता हूँ-

हूँ अलगो न थाऊँ रे सखियों, आपनी आत्मा एक।
रामत करता जुजबी, कांई दीसे छे अनेक॥

श्रीरास, 47/8

वस्तुतः यह हृदय ही परमात्मा का मंदिर है। विरह की कसौटी में कसकर कुन्दन के समान निखर आई आत्माएँ परमानंद को प्राप्त करती हैं। अंगनाओं ने अर्श की नियामतों का सुख प्राप्त कर लिया। प्रेम की मादकता में विभोर इन्द्रावती (महामति) अपनी ब्रह्मात्मा समुदाय के साथ प्रेमामृत पान कर रसमय हो रही हैं। 'किरंतन' में इस दिव्यानुभूति का वर्णन इस प्रकार है-

हक अरस परस सरस सब एक रस।
वाहेदत खिलवत निसबत न्यामत।।
महामत अलमस्त होय आवे उमत लिए।
पीवत आवत हक हाथ सरबत॥

किरंतन 117/4

निःसंदेह इस दिव्य अनुभूति का साधन प्रेम है। इस परमानंद का अनुभव वही कर सकता है जिसे विरहाग्नि में झुलसने के बाद मिलन की शीतलता प्राप्त हुई हो। यदि विरह सागर पार करने में व्यष्टि के साथ

समष्टि की भावना हो, संवेदनशीलता हो तो उसमें निहित अभिनव शांति की ज्योति से आत्मा दीप्त हो उठती है।

सारांशत: कहा जाए तो महामति के वाङ्मय में प्रेम-साधना के लिए प्रेम और ज्ञान दोनों की आवश्यकता को निरूपित किया है। महामति ने स्पष्ट किया है कि ज्ञान से प्रिय के स्वरूप की पहचान होती है और पहचान होने पर हृदय में प्रेम जागृत होता है। मिलन-कामना विरह को तीव्र करती है जिसका चरमोत्कर्ष परमप्रिय परब्रह्म से एकाकार हो जाना है। यही परमानंद है-

ए इलम ए इसक, दोऊ इन हक को चाहें।
पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवें सिर चढ़ाय॥

सागर 5/140

महामति के अनुसार मधुरा-भक्ति ही वह मार्ग है जिस पर चलकर व्याकुल आत्माओं का परमात्मा से मिलन हो सकता है तथा शांति, परम आनंद एवं मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

दुखी होकर कहती हैं-

मेरी सैयल रे, साह आये थे मेरे घर,
मैं पेहेचान न कर सकी, पिउ चले पुकार कर॥

प्रकाश, हि. 7/1

तारतम ज्ञान की प्राप्ति से हृदय की सभी कामनाएँ पूर्ण होने लगीं, यही तो वह ज्ञान है जो अक्षरधाम से परे परमधाम तक पहुँचा देता है-

ऐ इलम एहडो आइयो, सभ दिल जी पूरन करे।
डेई इसक मेडे कांध से, घर पुजाये नूर परे।।

सिंधीवाणी, 6/42

आत्मा और परमात्मा के परस्पर मिलने पर परमात्मा को स्वीकार करना पड़ता है कि आत्माएँ मेरी अंगरूपा हैं, वे मुझसे अभिन्न हैं तथा मैं भी उनके बिना नहीं रह सकता हूँ-

हूँ अलगो न थाऊँ रे सखियों, आपनी आत्मा एक।
रामत करता जुजबी, कांई दीसे छे अनेक॥

श्रीरास, 47/8

वस्तुतः यह हृदय ही परमात्मा का मंदिर है। विरह की कसौटी में कसकर कुन्दन के समान निखर आई आत्माएँ परमानंद को प्राप्त करती हैं। अंगनाओं ने अर्श की नियामतों का सुख प्राप्त कर लिया। प्रेम की मादकता में विभोर इन्द्रावती (महामति) अपनी ब्रह्मात्मा समुदाय के साथ प्रेमामृत पान कर रसमय हो रही हैं। 'किरंतन' में इस दिव्यानुभूति का वर्णन इस प्रकार है-

हक अरस परस सरस सब एक रस।
वाहेदत खिलवत निसबत न्यामत।।
महामत अलमस्त होय आवे उमत लिए।
पीवत आवत हक हाथ सरबत॥

किरंतन 117/4

निःसंदेह इस दिव्य अनुभूति का साधन प्रेम है। इस परमानंद का अनुभव वही कर सकता है जिसे विरहाग्नि में झुलसने के बाद मिलन की शीतलता प्राप्त हुई हो। यदि विरह सागर पार करने में व्यष्टि के साथ

समष्टि की भावना हो, संवेदनशीलता हो तो उसमें निहित अभिनव शांति की ज्योति से आत्मा दीप्त हो उठती है।

सारांशत: कहा जाए तो महामति के वाङमय में प्रेम-साधना के लिए प्रेम और ज्ञान दोनों की आवश्यकता को निरूपित किया है। महामति ने स्पष्ट किया है कि ज्ञान से प्रिय के स्वरूप की पहचान होती है और पहचान होने पर हृदय में प्रेम जागृत होता है। मिलन-कामना विरह को तीव्र करती है जिसका चरमोत्कर्ष परमप्रिय परब्रह्म से एकाकार हो जाना है। यही परमानंद है-

ए इलम ए इसक, दोऊ इन हक को चाहें।
पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवें सिर चढ़ाय॥

सागर 5/140

महामति के अनुसार मधुरा-भक्ति ही वह मार्ग है जिस पर चलकर व्याकुल आत्माओं का परमात्मा से मिलन हो सकता है तथा शांति, परम आनंद एवं मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

शाश्वत वाणी

ए बानी बेहद प्रगटी, इन्द्रावती मुख।
बहुत बिधे हम रस पिए, बेहद के सुख॥

श्री कुलजम स्वरूप, कुल+जमा रूप अर्थात् प्राणनाथजी की वाणियों का संग्रह है जिसमें 524 प्रकरणों में 18758 चौपाइयाँ हैं। यही तारतमवाणी भी है यह वह महासिंधु है जिसमें विश्व की प्रतिनिधि धार्मिक अवधारणाएँ रूपी सरिताएँ समाहित हो कर एकाकार हो गई हैं। इसमें विभिन्न धर्म संस्कृतियों की उपादेयता और मूल आशय उजागर हुए हैं। 'श्री कुलजम स्वरूप' में महामति ने-

वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल।
मगज मायने जाहेर किये, माहें गुझ हते जो बोल॥

खुलासा 13/96

वेद-कतेब ग्रंथों के गूढ़ार्थों का प्रकटीकरण महामति की तेजस्विता और वाग्मिता से ही सम्भव था। 'कुलजम स्वरूप' को तारतम सागर भी कहते हैं। यह नाम हर दृष्टि से सार्थक है क्योंकि इसमें चिन्तन एवं दर्शन के सभी तत्त्व अपने सम्पूर्ण रहस्यों एवं विशिष्टताओं के साथ मुखरित हुए हैं, वह भी इस प्रकार कि अल्पबुद्धि मानस भी उसे भली-भांति समझ सके और ब्रह्मात्मा से तादात्म्य स्थापित कर सके। 'कुलजम स्वरूप' में वेद-कतेब, अवतारवाद, राष्ट्रीय एकता आदि सभी पक्षों की समुचित मीमांसा हैं। साधना और भक्ति का सहज, सरल और सभी के लिए ग्राह्य मार्ग बताया गया है जो श्री राज जी की लीलाओं, प्रेम और समर्पण से एकाकार करने में समर्थ हैं।

सम्पूर्ण वाणी 14 ग्रंथों के रूप में हैं। महामति के परमधाम-गमन के पश्चात् 'श्री कुलजम स्वरूप' को गद्दी पर प्रतिष्ठित किया गया था जो आज भी मध्यप्रदेश के पन्ना जिला मुख्यालय में स्थित 'प्राणनाथजी' के मंदिर में यथावत मौजूद है तथा मन्दिरों में महामति का वाङ्मय स्वरूप मानकर उनकी पूजा की जाती है।

'कुलजम स्वरूप' में निम्नलिखित 14 ग्रंथ समाहित हैं-

1. श्री रास

'श्री रास' की रचना विक्रम संवत् 1715 में हुई। इसकी भाषा गुजराती है। 47 प्रकरणों में 907 चौपाईयां हैं। इस ग्रंथ का प्रमुख लक्ष्य इस मिथ्या जगत के मोहपाश में जकड़ी हुई आत्माओं को उनके वास्तविक स्वरूप से अवगत कराना है। इसमें श्री कृष्ण और गोपिकाओं की आनंदमयी अखण्ड रासलीला का मनोहारी वर्णन है जो कि परब्रह्म और आत्मा के प्रेमबंधन और आध्यात्मिकता की चरम परिणति है। इंजील ग्रंथ में वर्णित मानव अवतरण और ब्रह्मसृष्टि अवतरण की गाथा की समानता उद्घाटित करने के कारण इसे 'अंजील ग्रंथ' भी कहा गया है। इसमें प्रेम का महत्त्व दर्शाया गया है। डॉ. रणजीत साहा के शब्दों में- 'श्री रास महामति के वेदनापूर्ण संसार और संस्कार को आनंद और अमृत तत्त्व प्रदान करनेवाली असामान्य कृति ही नहीं, परम प्रियतम के विमल प्रेमानुग्रह का निर्मल नैवेद्य भी है।'

2. प्रकाश गुजराती

'प्रकाश गुजराती' में 37 प्रकरणों में 1062 चौपाइयाँ हैं। इसका रचना काल विक्रम संवत् 1715 है। इसका हिन्दी रूपान्तर 'प्रकाश हिन्दुस्तानी' है। इसका मूल विषय विरह की पीड़ा से आत्म जागृति होना है। जागृत आत्मा को ही अनुभूतियों का स्मरण होता है और वे परमप्रिय के प्रेम का अनुभव करती हैं।

3. षटरुति

'षटरुति' अर्थात् छः ऋतुएं। इसमें 15 प्रकरणों में 230 चौपाइयाँ हैं। इसका रचना काल विक्रम संवत् 1715 है। इसमें सखी शिरोमणि इन्द्रावती

के विरह का करुण क्रंदन ध्वनित है। इसमें विरह की उन ऊंचाइयों का परिचय दिया गया है जिसकी कातरता विरही को प्रिय का पात्र बना देती है तथा जो प्रिय से मिलन का मार्ग प्रशस्त करती है।

4. कलश गुजराती:

'कलश गुजराती' में 12 प्रकरणों में 506 चौपाइयां हैं। इसका रचना काल विक्रम संवत् 1729 है। वाणी संग्रहों को यदि मंदिर की उपमा दी जाए तो 'कलश गुजराती' को उस पावन मंदिर का कलश कहना अतिशयोक्ति न होगा। इस ग्रंथ में रूढ़ियों, धार्मिक आंडम्बरों एवं प्रदर्शनपूर्ण आचरण का विरोध किया गया है। साथ ही, आत्म जागरण अर्थात् जागनी का पथ भी प्रशस्त है क्योंकि इसमें महामति ने सद्‌गुरु देवचन्द्रजी से प्राप्त तारतम ज्ञान के शास्त्र पक्ष को विशेष रूप से स्पष्ट करते हुए उजागर किया है। इस ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तरण कलश हिन्दुस्तानी है। इसमें भी कुछ चौपाइयां बढ़ी हैं।

5. सनंध:

'सनंध' वाणी संग्रह में 42 प्रकरणों में 1691 चौपाइयां हैं। इसका रचना काल विक्रम संवत् 1736 है। इस ग्रंथ को 'क़ुरान' की सनंद कहा गया हैं यह 'क़ुरान' की सनद या प्रमाणपत्र हैं इसमें कुरान की मौलिक व्याख्या है। 'कुरान शरीफ' के प्रमुख प्रतिपाद्य विषयों का इसमें सप्रमाण और सहज स्पष्टीकरण है। इतना बोधगम्य स्पष्टीकरण अन्यत्र मिलना संभव नहीं है।

6. किरंतन:

'किरंतन' में 133 प्रकरणों में 2102 चौपाइयाँ हैं। राग-रागिनियों में निबद्ध यह वाणी संग्रह महामति की सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है। इसमें दार्शनिक विषयों का स्पष्टीकरण, सदगुरु एवं शास्त्र महिमा, आत्म जागृति, मानवदेह की सार्थकता आदि अनेक विषयों का सारगर्भित निरूपण है। इस ग्रंथ के सभी प्रकरण गेय हैं और उनपर राग रागनियाँ के नाम दिये गये हैं।

7. खुलासा:

'खुलासा' के 18 प्रकरणों में 1020 चौपाइयाँ हैं। इसका रचना काल विक्रम संवत् 1740-47 है। यह विश्वधर्म की समग्रता का मूलमंत्र है। यह ग्रंथ महामति की कालजयी समन्वयी विचारधारा का अमूल्य दस्तावेज़ है, जो युग सापेक्ष ही नहीं वरन् युगयुगीन एवं शाश्वत हैं। इसमें मौलिक चिन्तन के आलोक में सभी धर्मों के सामंजस्य को शुद्ध सात्विक रूप में रूपायित किया गया है।

8. खिलवत:

'खिलवत' में 16 प्रकरणों में 1074 चौपाइयाँ हैं। इस ग्रंथ में एकांत साधना की वह भाव-भूमि है, जहां आत्मा और परमात्मा एकाकार हो जाते हैं। इस ग्रंथ में अहंकार के शमन का सरल मार्ग भी बताया गया है- कि अपनी मैं को प्रियतम की मैं में घुल जाने दो; शरीर के रथ पर मैं नहीं वही सारथी हों।

9. परिक्रमा:

'परिक्रमा' के 43 प्रकरणों में 2481 चौपाइयाँ हैं। इसका रचना काल विक्रम सवंत् 1747 है। इस ग्रंथ के वाणी फलक पर परमधाम के जीवन्त चित्र उकेरे गए हैं। अद्वैत स्वरूप श्री राज जी के 25 पक्षों में सच्चिदानंद ब्रह्म के आनंद लीलाधाम का मनोहारी चित्रण हैं।

10. सागर:

'सागर' के 15 प्रकरणों में 1128 चौपाइयाँ हैं। इसका रचना काल विक्रम सवंत् 1744-45 है। इस वाणी ग्रंथ रूपी महासागर में परब्रह्म के दिव्य नूर अर्थात् प्रकाश का सागर है। इसके अतिरिक्त शोभा सागर में मूल मिलावा की बैठक का ऐश्वर्य, एकदिली सागर में श्री राज जी द्वारा अपनी अंगनाओं को प्रेमसुधा का पान, श्रृंगार सागर में श्री राज जी, श्यामा जी और सुदंर साथ का श्रृंगार वर्णित किया गया है, साथ ही इस्क सागर, इल्म सागर, निसबत (अटूट सम्बन्ध) सागर, मेहर सागर में परब्रह्म के प्रेम और कृपा की व्याख्या है।

11. सिनगारः

'सिनगार' में 39 प्रकरणों में 2211 चौपाइयाँ हैं। इनमें अद्वैत ब्रह्म श्री राज जी के चिन्मय स्वरूप का नख-शिख वर्णन है। श्री राज जी के अखण्ड, अप्रतिम और वर्णनातीत सौंदर्य एवं शृंगार का सरस वर्णन है जो अध्यात्म की उच्च भाव-भूमि पर प्रतिष्ठित करा देता है। प्रियतम के जिस अंग का वर्णन रूह देखती है, आत्मा का वही अंग जागकर उनसे एकाकार होने को तड़प उठता है।

12. सिंधीः

'सिंधी' वाणी के 16 प्रकरणों में 600 चौपाइयाँ हैं। इसका रचना काल विक्रम संवत् 1745 के आस-पास का है। इस ग्रंथ में धर्म के गूढ़तम भावों की साधना का वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ सिंधी भाषा में है। इसमें इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है कि इस मिथ्या जगत में जो कुछ हो रहा है वह परब्रह्म की इच्छा से हो रहा है। परमधाम से ब्रह्मात्माओं का इस संसार में आना, यहां आ कर मोहपाश में बंधना और पुनः वापसी परब्रह्म की ही लीला है। इन घटनाओं का सुंदर वर्णन इस ग्रंथ में है।

13. मारफत सागरः

'मारफत सागर' के 14 प्रकरणों में 1034 चौपाइयाँ हैं। इसका रचना काल विक्रम संवत् 1748 के आस-पास है। इस ग्रंथ में जगत और इससे पूर्व आत्मा की स्थिति और लीला बताकर कयामत की सात निशानियों को स्पष्ट किया गया है जिसका लक्ष्य वेद-कतेब में समन्वय स्थापित कर लोगों को अंतिम न्याय के दिन के लिए तैयार करना है। आत्मा की मुक्तावस्था को ही कतेब पक्ष में मारफ़त कहा गया है। इसका अर्थ आध्यात्म ज्ञान अथवा पूर्ण पहचान है।

14. क़यामतनामाः

'क़यामतनामा' के दो भाग हैं-छोटा और बड़ा। 'छोटा कयामतनामा' में 217 चौपाइयाँ हैं जो दो प्रकरणों में है। इसमें आत्म जागृति, पैग़म्बरों के विवरण, सृष्टि लीला में खुदाई आदेश तथा फ़रिश्तों आदि की चर्चा है।

‘बड़ा क़यामतनामा’ में 24 प्रकरणों में 531 चौपाइयाँ हैं। इसमें ईसाई और इस्लाम धर्मग्रंथों में उल्लेखित क़यामत के निशानों की व्याख्या और अंतिम न्याय के दिन ‘क़यामत की घड़ी’ के आगमन की घोषणा भी है। साथ ही क़यामत का वास्तविक आशय भी स्पष्ट किया गया है। विमला मेहता के अनुसार-‘कुरान में दो क़यामत की चर्चा है। संभवतः इसी घोषणा के अनुरूप श्री प्राणनाथ वाणी में छोटा-बड़ा दो क़यामतनामा हैं।’

‘श्री कुलजम स्वरूप’ के चारों ग्रंथ- श्री रास, प्रकाश, षटरुति और कलश- की भाषा गुजराती है शेष ग्रंथों की भाषा हिन्दुस्तानी है। यही तत्कालीन जनभाषा थी। इसीलिए इस पावन ग्रंथ में भावों एवं विचारों की सम्प्रेषणीयता है। ये ग्रंथ विद्वानों और सर्वसाधारण दोनों के लिए समान रूप से सुबोध हैं। महामति के समय में अरबी-फ़ारसी राजभाषा थी। अतः तत्कालीन हिन्दुस्तानी में अरबी-फ़ारसी का बाहुल्य स्वाभाविक है। भाषाओं के पारस्परिक झगड़े मिटाने की दृष्टि से भी महामति ने बहुभाषा मिश्रित हिन्दुस्तानी को अपनी वाणी का माध्यम बनाया।

बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान।
सब को सुगम जान के, कहूँगी हिन्दुस्तान॥
बड़ी भाषा ये ही भली, जो सबमें जाहेर।
करने पाक सबन को, अंतर माहे बाहेर॥ सनंध 1/15,16

महामति की वाणियों को उनके जीवनकाल में ही उनके शिष्यों ने लिपिबद्ध कर लिया था। महामति की प्रेरणा से सम्पूर्ण ग्रंथ की लिपि नागरीलिपि है। यद्यपि इसमें कई भाषाएँ समाहित हैं। यह कालजयी शाश्वतवाणी है।

महामति प्राणनाथ के विचारों की प्रासंगिकता

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक।
जिन कोई झगरो आप में, धनी सबों का एक।।

वर्तमान समय संवेदनात्मक शुष्कता का समय कहा जा सकता है। भूमण्डलीय और उपभोक्तावादी वातावरण में स्वार्थ की उत्तेजना के सम्मुख परमार्थ की संवेदना गौण हो गई है। मानव में भौतिक पदार्थों के प्रति ललक सीमाहीन हो चली है। आध्यात्मिक विचारों के प्रति उदासीनता ने मानव की संज्ञा (Sense)को विकृत करके मानव को संज्ञाशून्य (Senseless) से कहीं अधिक कुसंज्ञात्मक(Nuisance)बना दिया है। आज फिर धर्म और धर्म-स्थलों के नाम पर वैमनस्यता फूटने लगी है। इसका एक मात्र कारण यही है कि मानव एक बार फिर उस सत्य को भूलने लगा है कि नाम चाहे जितने भी हों किन्तु परब्रह्म परमात्मा एक ही है। इस धरती के सभी मानव उसी परमात्मा से बिछुड़ी हुई आत्माएँ हैं जो जगत लीला के अंतर्गत् यहां प्रकट हुई हैं।

महामति प्राणनाथ ने एकेश्वर परब्रह्म के सत्य को ज्ञान की कसौटी पर परखने के बाद विश्व के सामने रखा था। उन्होंने मात्र कही-सुनी बातों के आधार पर नहीं वरन् वेद और कतेब ग्रंथों के गंभीरतापूर्वक अध्ययन के उपरान्त अपने निष्कर्षों को प्रस्तुत किया था। आज का जनमानस जो कही-सुनी बातों की अपेक्षा तार्किकता पर ही विश्वास करता है, महामति के विचारों को निःसंदेह आत्मसात कर सकता है। चूँकि एक बार फिर धर्म में राजनीति के अनुचित प्रभाव ने धार्मिक स्थिति को एक सीमा तक

सत्रहवीं शताब्दी जैसा बना दिया है। छोटे-छोटे मठाधीश अपने निहित स्वार्थों के कारण परब्रह्म के स्वरूप और धर्म के सूत्रों की मनमानी व्याख्या करने लगे हैं इसलिए मानव मन एक बार फिर भ्रमित हो चला है। इस भ्रम के धुएँ ने सच्चे संतों और गुरुओं की वाणी की चमक को ढाँक रखा है। यदि आज महामति के विचारों और उनकी वाणी को जनमानस आत्मसात करे तो यह विसंगतियों से परिपूर्ण विश्व समाज, 'सुदंर साथ' समाज में परिवर्तित हो सकता है।

महामति प्राणनाथ के समय में अर्थात् सत्रहवीं शताब्दी में औरगज़ेब की कट्टरता और अत्याचारों से आम जनता बुरी तरह पीड़ित थी। धार्मिक कट्टरता के चलते शोषण, दमन, स्वतंत्रता हनन एवं यातना देने को ही धर्म-पालन का पर्याय मान लिया गया था। धर्म परिवर्तन के लिए अमानवीय व्यवहार किया जाता था। धर्मान्ध समझते थे कि वे बलात् धर्मान्तरण करा कर पुण्य प्राप्त कर रहे हैं। उनके इस भ्रमपूर्ण विचार पर कटाक्ष करते हुए महामति ने उन्हें फटकारा था कि-

ओ राजी एक भेष में, ताय मार छुड़ावे दाब।
ओ रोवे सिर पीटहीं, ए कहे हमें होत सवाब॥ सनंध 40/8

मानवधर्म के परिप्रेक्ष्य में:

सत्रहवीं शताब्दी की विसंगतिपूर्ण समस्यायें आज भी सिर उठाने लगीं हैं। जिहाद के नाम पर आज भी विश्व में हत्याओं का मुँह देखना पड़ रहा है। जबकि ज़िहाद या बलि तो अहंकार की दी जाती है किन्तु नासमझ मानव-समूह प्रायः निर्दोष एवं निरीह पशु अथवा मानवों की बलि देकर 'पुण्य कमाने' का दिवास्वप्न देखने लगता है। ऐसे कठिन समय में 'सनंध' और 'खुलासा' में संग्रहीत वह वाणी अत्यंत प्रासंगिक हो उठती है जिसमें वेद और कतेब ग्रंथों की व्याख्या, गूढ़ार्थ एवं उद्देश्य को उजागर किया गया है। महामति की वाणी में समस्त प्रतिनिधि धर्मग्रंथों का समन्वय है, सार है तथा मानवधर्म की परिकल्पना का साकार रूप है। इसी परिकल्पना का निष्कर्ष है-

जुदे जुदे नामें गवाही, जुदे जुदे भेख अनेक।
जिन कोई झगरो आप में, धनी सबों का एक॥ सनंध, प्र. 41/72

वैश्विक एकीकरण के परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिक एकीकरण आवश्यक

आज जब वैश्विक एकीकरण को साकार करने के प्रयास किए जा रहे हैं और इस प्रयास के अंतर्गत् 'यूरो मुद्रा' भी चलाई जा रही है फिर भी सच्चे अर्थों में वैश्विक एकीकरण नहीं हो पा रहा है। स्वार्थ प्रेरित मानसिक वैमनस्यता को कभी जातीय तो कभी सांस्कृतिक तो कभी धार्मिक नाम देकर विध्वंसक कार्यवाहियां की जाने लगती हैं। ऐसी कार्यवाहियाँ वैश्विक एकीकरण के प्रयासों को झकझोर देती हैं। यदि गंभीरता से विचार किया जाए तो यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि वैश्विक एकीकरण के प्रयासों में कहीं कोई कमी अवश्य है जो इस सुंदर परिकल्पना को सफल-साकार होने से बार-बार रोक देती है। यह है आध्यात्मिक एकीकरण का अभाव। जब तक मानव इस भ्रम में रहेगा कि प्रत्येक देश, जाति अथवा संस्कृति का अपना अलग देवता है तब तक वैश्विक एकीकरण का स्वप्न साकार नहीं हो सकेगा। महामति ने तो सत्रहवीं शताब्दी में ही इस सत्य की ओर मानव समुदाय का ध्यान आकर्षित किया था। वस्तुतः महामति की वाणी में वह मार्ग स्पष्ट है जिस पर चलकर वैश्विक एकीकरण के स्वप्न को साकार किया जा सकता है।

जातिगत समन्वय के परिप्रेक्ष्य में

जातिगत ऊँच-नीच की खाई को महामति ने अपने अमृत-वचनों एवं प्रयासों से पाटने का महती कार्य किया था। आज फिर उन्हीं प्रयासों की आवश्यकता का अनुभव होने लगा है जो खाई तीन शताब्दियों के लम्बे अंतराल में भर कर लुप्त हो जानी चाहिए थी वह आज राजनीतिक स्वार्थों के परिणामस्वरूप नवीन विकृत रूप में दिखाई पड़ती है तथा मानव समाज को घुन के समान खाये जा रही है। जातिबोध और वर्गबोध की दोहरी मानसिकता को आज महामति की वाणी के मर्म के उपचार की अत्यंत आवश्यकता है। महामति ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि—

सब जातें नाम जुदे धरें, सब का खाविंद एक।
सब को बंदगी याही की, पीछे लड़ें बिना पाये विवेक॥

खुलासा, प्र. 2/22

नैतिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में

भाषायी विभिन्नता भी मानव के सकल उत्थान में एक बड़ी बाधा है। भाषा-भाषिक भेद-भाव को ले कर संकीर्ण मानसिकता का प्रदर्शन करते हुए कतिपय लोग वैमनस्यता का प्रदर्शन भी करने लगते हैं। महामति ने इस संकीर्णता के विरुद्ध भाषाई समन्वय का शंखनाद सत्रहवीं शताब्दी में ही कर दिया था। भाषा के संबंध में कही गई महामति की वाणी को यदि आज जीवन में उतारा जाए तो भाषा संबंधी सारे विवाद पल भर में समाप्त हो सकते हैं। महामति ने कहा है- **'सब को सुगम जान के कहूंगी हिन्दुस्तान।'** इस हिन्दुस्तानी में तत्कालीन प्रचलित लगभग सभी प्रमुख भाषाओं के शब्द समाहित हैं; सभी भाषाओं के लिये उन्होंने नागरी लिपि की सक्षमता की ओर ध्यान दिलाया।

स्वच्छ राजनीति के परिप्रेक्ष्य में

महामति ने ऐसी राजनीति को स्वच्छ राजनीति कहा है जो प्रजा दलन, शोषण एवं उत्पीड़न से मुक्त हो। सबल निर्बल को सता न सके। स्वच्छ राजनीतिक वातावरण में ही शासक यशस्वी हो कर शासन कर सकता है। विशाल साम्राज्य के शक्तिशाली शासक औरगज़ेब को छोटी-सी रियासत के राजा छत्रसाल ने विचलित कर दिया था। महाराज छत्रसाल के विरुद्ध औरंगज़ेब को अपने विशेष सिपहसालार भेजने पड़े थे। महाराज छत्रसाल की इस शक्ति के पीछे उनके अपने व्यक्तित्व कौशल के अतिरिक्त जो सबसे बड़ी शक्ति थी, वह थी, महामति का पथ-प्रदर्शन। महामति ने महाराज छत्रसाल को न केवल पन्ना की भूमि में हीरे की उपलब्धता का पता बताया अपितु राजनीति की उत्तम शिक्षा भी दी जो कि 'किरंतन'(प्र. 55/20,21) में इस प्रकार उल्लेखित है-

> ***बाघ बकरी एक संग चरैं, कोई न करे किसी सौं बैर।***
> ***पसू पंखी सुखी चरें चुगें, छूट गयो सब को जेहेर॥***
> ***सनमुख सब एक रस भये, भाग्यो सब बिस्व को व्रोध।***
> ***घर घर आनंद उछव, कुली पोहोरो काढ्यो सब क्रोध॥***

वस्तुतः महामति प्राणनाथ ने एक ऐसे ही विश्व की कल्पना की थी। उनकी वाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कि सत्रहवीं शताब्दी में थी।

संदर्भ-ग्रंथ

1. कल्याण-योगांक, गीता प्रेस, गोररखपुर, चतुर्थ संस्करण, सं. 2054
2. 'खुलासा': विश्वधर्म समग्रता का मूलमंत्र, डॉ. विद्यावती 'मालविका', जागनी, श्री कुलजमस्वरूप विशेषांक, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली, वर्ष 1997-98 पृ. 149
3. जागनी: श्री कुलजमस्वरूप विशेषांक, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली, वर्ष 1997-98
4. पावन प्रेम के प्रतीक, डॉ. विद्यावती 'मालविका', जागनी श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली, वर्ष1989 पृ. 160
5. भारत का इतिहास (1000-1707 ई.), डॉ. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, आगरा, 1996
6. भारतीय दर्शन, डॉ. श्रीकान्त पाण्डेय, साहित्य भण्डार, मेरठ, तृतीय संस्करण, 1996
7. भावनात्मक एकता के महान प्रवक्ता, डॉ. विद्यावती 'मालविका', जागनी, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली, वर्ष 1992
8. महामति प्राणनाथ प्रणीत 'विरह-प्रकाश', मूल पाठ 'हिन्दी छाया', संपादक: विमला मेहता एवं डॉ. रणजीत साहा
9. महामति प्राणनाथ प्रणीत 'सिंधी वाणी', मूल पाठ 'हिन्दी छाया', संपादक: विमला मेहता एवं डॉ. रणजीत साहा
10. महामति प्राणनाथ प्रणीत 'षट्रुति', मूल पाठ 'हिन्दी छाया', संपादक: विमला मेहता एवं डॉ. रणजीत साहा
11. महामति प्राणनाथ प्रणीत 'सनंध', मूल पाठ 'हिन्दी छाया', संपादक: विमला मेहता एवं डॉ. रणजीत साहा
12. महामति प्राणनाथ प्रणीत किरंतन, हिन्दी टीका, सं. डॉ. रणजीत साहा, विमला मेहता
13. महामति प्राणनाथ मनीषा, डॉ. वीणा भगत
14. महामति प्राणनाथ प्रणीत 'खुलासा', मूल पाठ 'हिन्दी छाया', संपादक: विमला मेहता एवं डॉ. रणजीत साहा

15. महामति वाङ्मय में ज्ञान और विरह का स्वरूप, डॉ. विद्यावती 'मालविका', जागनी, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली, वर्ष 1993 पृ. 78
16. तारतम वाणी मुक्ता, संयोजनः विमला मेहता
17. धार्मिक सद्भावना के उद्घोषकः महामति प्राणनाथ, डॉ. विद्यावती 'मालविका' , दैनिक आचरण, सागर (म.प्र.), वर्ष 1993, 13 अक्तूबर
18. वेदान्त दर्शन (ब्रह्म सूत्र), व्याख्याकार-हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस, गोरखपुर, पन्द्रहवां संस्करण, सं. 2053
19. सर्व धर्म सद्भाव और बौद्ध धर्म, डॉ. विद्यावती 'मालविका', जागनी, सहस्राब्दी विशेषांक, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली, वर्ष 2001 पृ. 195
20. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल
21. हिन्दी संत साहित्य पर बौद्धधर्म का प्रभाव, डॉ. विद्यावती 'मालविका', हिन्दी प्रचारक पुस्कालय, वाराणसी, 1996

श्री प्राणनाथ मिशन (रजि.) के प्रकाशन

७२ सिद्धार्थ एन्कलेव, आश्रम चौक, नई दिल्ली ११० ०१४, दूरभाष: ६३४५२३०
संपर्क: श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, हक़ीक़त नगर, माल रोड, दिल्ली-११० ००७

श्री तारतम बानी: कुलजम स्वरूप (श्रीमुख वाणी), महामति प्राणनाथ प्रणीत सोलह ग्रंथों का प्रामाणिक संकलन: देवनागरी लिपि में, १८ हज़ार चौपाइयाँ	२५१/-
किंरतन (महामति प्रणीत) सम्पादक: डा. रणजीत साहा, मूल पाठ, हिंदी रूपांतर	८०/-
सनंध (महामति प्रणीत) मूल, अर्थ सम्पादक: विमला मेहता, डा. रणजीत साहा	४०/-
महामति प्राणनाथ प्रेरित श्री कृष्ण प्रणामी वाङ्मय: डा. सुचितनारायण प्रसाद	३०/-
खुलासा (महामति प्रणीत) सम्पादक: डा. रणजीत साहा, विमला मेहता	४०/-
मारफत सागर: कियामतनामा अर्थसहित: सं. विमला मेहता, डा. रणजीत साहा	६०/-
सृष्टि विज्ञान: श्री रणछोड़जी वीर जी	१०/-
खिलवत: अर्थसहित, सम्पादक: डा. रणजीत साहा, विमला मेहता	४०/-
धर्म समन्वय उद्गाता: डा. कमला शर्मा	५०/-
निजानंद संगीत: श्री प्राणनाथ एवं प्रणामी संतवाणी संग्रह	५०/-
श्रीरास, (महामति प्रणीत) सम्पादक: डा. रणजीत साहा एवं डा. हरेंद्र वर्मा	अप्राप्य
बीतक (स्वामी लालदास कृत) अर्थ परिशिष्टसह, माणिक लाल दुबे	१५०/-
महामति प्रणनाथ: सचित्र गाथा—विमला मेहता	१०/-
प्रकाश हिन्दुस्तानी (महामति प्रणीत) मूल एवं अर्थसहित	अप्राप्य
विरह प्रकाश-षट्ऋतु, सिंधी, विरह वाणी, सम्पादन: विमला मेहता	५०/-
आनन्द की ओर (तीन भाग) बच्चों के लिये, संकलन: विमला मेहता	३०/-
नवरंग गीता रहस्य अर्थसहित: विमला मेहता	१०/-
श्री कलश हिन्दुस्तानी (महामति प्रणीत) अमृतलाल शर्मा	अप्राप्य
जागनी संचयन—जागनी के अंकों से चुने हुए लेख	१००/-
जागनी: कुलजम परिचय—सम्पूर्ण कुलजम सार	१००/-
जागनी (पुराने अंक, प्रति अंक)	१०/-
आत्म तत्त्व दर्शन: धर्म रहस्य-विमला मेहता	५०/-
नित्य पाठ, प्रार्थना, संक्षिप्त सेवा पूजा, संकलन: विमला मेहता	१५/-
विश्व धर्म दर्शन: गुलज़ारी लाल सिडाना	७०/-

श्रीमद्भागवत और श्री प्राणनाथ वाणी: गुलज़ारी लाल सिडाना ७०/–

श्री लालदास बीतक का ऐतिहासिक महत्त्व: डा. शिव सिंह सरोज १००/–

स्वामी ब्रजभूषण रचित वृत्तान्त मुक्तावली: अर्थसहित डा. वाजपेयी (८०० पृ.) २५०/–

नवरंग वाणी परिचय: विमला मेहता १००/–

महामति प्राणनाथ और सर्वधर्म समन्वय: डा. पी.एस. मुखारिया १००/–

किरंतन पदावली: महाराज मोहन प्रियाचार्य १०/–

प्रथम प्रणाम: डा. माताबदल जायसवाल ३५/–

Mahamati Prannath: The Saviour: Dr. Sudershan Sharma 10/-

The Search Within: Dr. Anil Mehta 50/-

The Meeting Point: Dr. Anil Mehta 50/-

Mahamati: The Supreme Wisdom: Dr. B.P. Bajpai 25/-

Secret Doctrine of Gita: Dr. B.P. Bajpai 15/-

Shri Prannath Vani: Kirantan English (Translation Dr. R.K. Arora) 250/-

Daily Prayer : Shri Mohan Priyacharya (Translation Dr. R.K. Arora) 15/-

Gems from Mahamati I: Translation K.K. Mehta 10/-

Gems from Mahamati II: Translation K.K. Mehta 10/-

प्राप्ति एवं सूचना केन्द्र

श्री नवतनपुरी धाम, जामनगर, फोन: 0288-555697
श्री महामंगलपुरी धाम, सूरत, फोन: 0261-424986
श्री पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना, फोन: 07732-52046 (श्री खेमराज शर्मा)
श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, माडल टाउन, करनाल, फोन: 0184-265069
श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, दादरी गेट, भिवानी, फोन: 01664-43302
श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, सेवक रोड, सिलिगुड़ी, फोन: 0353-423828
श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, मंगल धाम, कालिम्पांग, फोन: 03552-55891
श्री मूल मिलावा मन्दिर, बेड रोड, सूरत, फोन: 0261-7512722
श्री प्रणामी पंचायत, आदर्श नगर, जयपुर (राज०), फोन: 0141-621278
श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, जी-20, सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली, फोन: 011-7052861
श्री कैलाशचन्द्र अग्रवाल, 2, नाज़ीर वाड़ी, जुहू रोड, मुम्बई, फोन: 022-6114140
श्री मणिलाल कुंवरजी, राजमहल होटल, फफाडीह चौक, रायपुर, फोन: 0771-523532
श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर मुक्ति धाम, इटहरी-4, नेपाल, फोन: 025-80930
Dr. Anil Mehta, 4708 Panorama Drive Bakersfield, CA 93306 USA
Tel. : 661-872-7784